ISSN : 2582-1342

भोजपुरी साहित्य सरिता
सहित्यांगन

भोजपुरी साहित्य सरिता

नवम्बर-दिसम्बर 2021, वर्ष 5, अंक 8

भोजपुरी किताबन के सबसे ढेर प्रकाशन के साथे
विश्व पुस्तक मेला में **सर्व भाषा ट्रस्ट** के स्टॉल पर राउर स्वागत बा

50 Years 1972 2022 NEW DELHI WORLD BOOK FAIR

30th NEW DELHI WORLD BOOK FAIR

08-16 JANUARY 2022

at the newly constructed halls!

PRAGATI MAIDAN, NEW DELHI
11.00 AM TO 8.00 PM

Ensure Your Participation in the Largest International Book Fair of the Afro-Asian Region

THEME: 75 Azadi Ka Amrit Mahotsav

ATTRACTIONS

CEOSpeak a forum for publishing | New Delhi Rights Table | Authors' Corners | Yuva Corner | Children's Pavilion | Cultural Programmes | International Events Corner | Theme Pavilion

Supported by Ministry of EDUCATION Government of India | Knowledge PARTNER of THE NATION | nbt.india Organizer NATIONAL BOOK TRUST, INDIA Ministry of Education, Government of India | Co-organizer INDIA TRADE PROMOTION ORGANISATION

सर्व भाषा ट्रस्ट

सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

+91-8178695606
sbhashatrust@gmail.com
www.sarvbhashatrust.com

विशेष आभार

अनामिका वर्मा

(संरक्षक, भोजपुरी साहित्य सरिता)

लोक गायिका
संकलनकर्ता, कोहबर काव्य
संचालिका, सुर सखी

भोजपुरी साहित्य सरिता

संरक्षक

रामप्रकाश मिश्रा (उपाध्यक्ष, महाराष्ट्र प्रदेश भाजपा/उत्तर भारतीय मोर्चा), अकोला
अशोक श्रीवास्तव (गाजियाबाद)
अनामिका वर्मा (भोपाल)

प्रकाशक आ संपादक

जे. पी. द्विवेदी
(गाजियाबाद)

कार्यकारी संपादक

डॉ. सुमन सिंह
(वाराणसी)

साहित्य सम्पादक

केशव मोहन पाण्डेय
(दिल्ली)

सहायक सम्पादक

डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी)
सुनील सिन्हा (गाजियाबाद)
डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)

सलाहकार सम्पादक

मोहन द्विवेदी (गाजियाबाद)
कुलदीप श्रीवास्तव (मुंबई)

तकनीकी एडिटिंग–कम्पोजिंग

सोनू प्रजापति (गाजियाबाद)

छायाचित्र सहयोग

आशीष पी मिश्रा (मुंबई)

प्रतिनिधि

आलोक कुमार तिवारी (कुशीनगर)
डॉ. हरेश्वर राय (सतना)
अशोक कुमार तिवारी (बलिया)
राणा अवधूत कुमार (उत्तर बिहार)
गुलरेज़ शहज़ाद (दक्षिण बिहार)
डी के सिंह (पटना)

प्रकाशन : सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

: आजीवन सदस्यगण :

बुद्धेश पाण्डेय (गाजियाबाद), जलज कुमार अनुपम (बेतिया), अंकुश्री (राँची), सुजीत तिवारी (गाजियाबाद), कृष्ण कुमार (आरा), डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी), सरिता सिंह (जौनपुर), कनक किशोर (राँची), डॉ. हरेश्वर राय (सतना)

♦ कूल्हि पद अवैतनिक बाऽ ♦♦ स्वामित्व, प्रकाशक जे पी द्विवेदी के ओरी से ♦

HOUSE NO. – 15 A , MANSAROVAR SHAHPUR BAMHETA , LALKUAN ,GHAZIABAD (U.P.) - 201002
PH: 9999614657, Email : editor@bhojpurisahityasarita.com, bhojpurissarita@gmail.com
Website: http://www.bhojpurisahityasarita.com

नोट : पत्रिका में छपल कवनो सामग्री खातिर संपादक–मंडल उत्तरदायी नइखे। सगरो विवाद के निपटारा गाजियाबाद के सक्षम अदालतन अउरी फोरमन में करल जाई।

अनुक्रम

• संपादकीय

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /5

धरोहर

सुभद्रा वीरेंद्र /6

• आलेख/ शोध-लेख/निबंध

हाली–हाली उगय ए अदितमल– तनुजा द्विवेदी/ 21–22
भोजपुरी–प्रकाशन अउर विणपन एगो गंभीर समस्या–कनक किशोर/23–24
शब्द आ अर्थ के आपसी संबंध–हरेराम त्रिपाठी 'चेतन'/36–40

• कहानी/लघुकथा/ रम्य रचना

सुगिया–डॉ सुशीला ओझा/7–8
नहला पे दहला–अभियंता सौरभ भोजपुरिया/9–10
दू गो लघुकथा– अंकु श्री/11
दू गो लघुकथा–डॉ अशोक मिश्र/12
दू गो लोक बाल कथा– डॉ रजनी रंजन/16–17
शनिचरी बुआ–जियाउल हक/17
बड़ा बेआबरु भइनी ए गोरिया तोहरे खातिर– बिम्मी कुंअर/18–19
आश्रम–माला वर्मा/20
परदेशी लाला– दिलीप पैनाली/28–29
बाँड़ त बाँड़ तीन हाथ के पगहो जाई– डॉ एम डी सिंह/32

• कविता/गीत/गजल

गीत– कुमार मंगलम रणवीर/12
आज महालया–कुमार जीवन सिंह/13
पइयाँ पइयाँ हो– जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /13
गीत–संतोष कुमार/14

• कविता/गीत/गजल

नवगीत–गजल–दिवाकर उपाध्याय/14
भोजपुरिया–सुहानी राय/14
असहीं का वृद्ध लो के होई दुरगतिया–आकाश महेशपुरी/15
अरजी बा एतने–दीपक तिवारी/19
हमार भोजपुरी–विमल कुमार/19
महिमा छठी माई के–आशीष त्रिपाठी 'रुद्रान्श'/24
कहानी का सुनाई–मनकामना शुक्ल 'पथिक'/25
लोकतंत्र के बाजार–निशा राय/25
गीत–राजेश बादल/29
गजल–कौशल मोहब्बतपुरी/31
गजल–अशोक कुमार तिवारी/31

• अनूदित साहित्य

अरे हो प्रिया– केशव मोहन पाण्डेय/26–27
करियवा कोट–मोहन द्विवेदी
बिछुड़त रोमांच के जोहाई–जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /33–35
मोमोटारो– जापानी लोक कथा– शशि रंजन मिश्र /30

• पुस्तक समीक्षा-चर्चा

सुनगुनः धीरे धरिबा पाँव–डॉ प्रकाश उदय/41–44

• असि गंग के तीर

– डॉ. सुमन सिंह /45–46

• एह अंक के चित्रकार :

वंदना दुबे/ 27

आन्हर गुरु, बहिर चेला

समय लोगन का संगे साँप–सीढ़ी के खेल हर काल–खंड में खेलले बा, अजुवो खेल रहल बा। चाल–चरित्र–चेहरा के बात करे वाला लो होखें भा सेकुलर भा खाली एक के हक–हूकूक मार के दोसरा के तोस देवे वाला लो होखे,समय के चकरी के दूनों पाट का बीचे फंसिये जाला। एहमें कुछो अलगा नइखे। कुरसी मनई के आँखि पर मोटगर परदा टाँग देले, बोल आ चाल दूनों बदल देले। नाही त जेकरा लगे ठीक–ठाक मनई उनुका कुरसी रहते ना चहुंप पावेला, कुरसी जाते खीस निपोरले उहे दुअरे–दुअरे सभे से मिले ला डोलत देखा जाला। ई साँच जनला का बादो लो चेतबे ना करत। भा इहो कहल जा सकत बा कि समय अइसन लोगन के चेते ना देला। कबीर बाबा ई बाति बहुते पहिले बता देले रहें बाकि ओकर अरथ अभियो लोगिन के बुझाइल कि ना, समझ के परे बा। हम चाहतानी कि कबीर बाबा के बाति रउवो सभे एक बेर फेर से पढ़ीं, सुनी आ गुनी–

'चलती चक्की देख के , दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में, साबुत बचा न कोय।।'

एह देस में धरम आ अध्यात्म के अनगिन सोता फूटल आ बहल, समय का संगे आपुसो में मिलल आ फेर एह समाज के महासमुंदर में समा गइल। ई एगो पक्ष रहल, दोसरका पक्ष इहो बाकि ओही समय में एगो धरम के लो दोसरा के मेटावे खाति कुल्हि उधातम कइल, मेटा ना पवलस आ खुदे बिला गइल। कतने राज आ राजा लो अइने, आपन राज फइलवलें, आपन आपन धरम जबरियो फइलवलें, बाकि उहो लो दोसरा धरम के खतम ना क पवलें, खुदे बिला गइलें। इहे खेला अजुवो चल रहल बा। कुछ लो अजुवो अइसन बा जे दोसरा मानसिक, सामाजिक अउर धार्मिक हानि पहुंचावे ला कुल्हि उधातम क रहल बा। उहो लो के हाल उहे होखी, जवन उनुका पहिले वाला लोगन के भइल रहे बाकि लो बूझल नइखी चाहत भा उहाँ सभे के बुझाते नइखे। एह कुल्हि करतूतन से देस, समाज आ साहित्य सभे प्रभावित होला, अजुवो हो रहल बा। बाकि आजु के नीति नियंता लो के हाल 'आन्हर गुरु, बहिर चेला' वाला भइल बूझाता।

कुछ लो कबों देस आ समाज के सनमान न करे खाति जामेला। अइसन लोगवा एहू घरी बा आ ढेर बा। आजाद देस में कब के आजादी माँगे लागता आ केहुके ई देस आजाद बा कि ना, पते नइखे। ढेर लो मिलके कबर खोने में लागल बा। कवनों कबर खोनला पर का भेंटाला, ई सभे मालूम बा। तबो लो खोने में जुटल बा। कुछ लो पाप नाशिनी गंगा के आशीष के सगरे ठेका उठा के बइठल बा आ लोगिन के जलाभिसेक करवा के पवित्तर करि रहल बा तबे नु काल्हु तक ले जे बाउर रहल भा अश्लील रहल, उहो लो अब नीमन हो गइल सुने में त इहों आवता कि संगे अवते आधा पाप असहीं बिला जाला। अब ओह लोगन का संगे मिल के सबकुछ हो रहल बा। इहे हाल साहित्य के लेके हो चुकल बा।

भोजपुरी साहित्य सरिता परिवार आपन लय बनवले साहित्य के बढ़न्ति में जतना संभव बा करे के परयास में लागल बा। यति गति के आपन रंग होला, आपन पौरुष होला, आपन वितान होला, ओहु से सभे परभावित हो जाला, त हम. निए के कइसे बाचब। तबो परयास बा कि कुछ नीमन होखे, एही सोच का संगे पत्रिका के ई अंक रउरा सभे के सोझा परोसा रहल बा। जय भोजपुरी !!

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता

हमार जिनिगिया ना

लछुमन रेखा के भितरिये
कैद हमार जिनिगिया ना।
छलना आई भेस बदलि,
छलि–छलि जाई उमिरिया ना।।

हम ना केकरो आँख क पुतरी
राखीं बक्सा ना हम मुनरी
दरखत खानी टुक्–टुक्
ताकीं भोर–साँझ–दुपहिया ना।

सहमि–सहमि क चले सपनवाँ
बिखरल मोती बीनि नयनवाँ
काँटन से अझुराइल
खींचे मोर चुनरिया ना।

मन–दरपन कब दरकि क टूटल
आस क गगरी चटकी क फूटल
गहराइल अन्हियारी राति
अकुलाइल अँजोरिया ना।

राख में ह सुनगत चिनगारी
उमकि गइल रहिये किलकारी
जमघट बीच अकेला
मनवाँ अउँजाइल दरदिया।

■■

सुभद्रा वीरेंद्र

जन्म : 27 जुलाई 1952

मृत्यु : 6 दिसंबर 2021

जन्म–स्थान
फतेहपुर, मीठापुर, पटना (बिहार)

सुगिया

डॉ सुशीला ओझा

अगहन के महीना ..सुख समृद्धि के महीना .. अगहनी धान खेत में पाक के ..हँसत ठठात रहे ..ल क्ष्मी त खेत में रहली ..पहिले लोग अगहनिए धान रोपत रहे ..झन–झन करके खेत बुझात रहे सोना से पाटल बा ..अभी जाड़ ओरहन देत रहे ..हम आवतानी हो ..हमरा खतिरा रजाई कमर के व्यवस्था कर लिह लोग ..अगहनी धान के कटनी होत रहे ..मुड़ी पर लाद के बोझा खरिहान मेंकृ.एकपर एक धके आसमान छुअत रहे ..राति खा बैल नधईहन स ..बैला के गरवा में घंटी ..बड़ा सुन्नर बाजत रहे ..रतिए में धानवा दवाए .. कई जोड़ाबैल नधाए ..पीछे किसान बैल के ..पैना से खोदत रहले ..कबो–कबो ..महतारी बहिन के गारी देबे लागे लोग ..हमरा ना बुझाय कि बैलन के महतारी बहिन के नासला में का मिलेला .. बाकिर जीभ जब लछुमन रेखा लाँघि जाले ..तो ओ. करा पर कंट्रोल ना होला ..जीभ बा डोला दिहनी .. आजीभिया अपने घर में लुका जाले ..ओहि गरिया खतिरा कपार पर क बेर जूता परि जाला। महीना में अगहन आपना के किशुन भगवान कहेनी ..सब तरह से सुख समृद्धि वाला दिन ..अन धन से घर भरल रहेला। पुअरा के बड़का–बड़का पूज..पुरनकी बिजुईया के गछिया के नीचे धराईल बा ..बड़ा मजा आवेला पूजवा पर से खेले में..बुढ़वा बिजुईया में झुलूहा लगाके झुले में..बुझाला रोप लाईन पर बानी स ..

एही अगहन में सुगिया के जलम भईल .. चमीईन आइल रहे ..पुरानकवा घरवा में ..सुगिया के पैदाईस भइल ..ओकर फुवा झुलनिया अभी पाँच बरिस के रहली ..केवाड़ी भिरकावल रहे ..अब लईका रहली . .एगो छोट लईका के रोआई सुन के ..खुशी से केवड़िया खोल दिहली ..देखली चमईन आ एगो मुस खनिया लइका ..उनका अजगुत लागल ..तुरंत दौड़ गई ली ''खड़े''जहाँ मरदाना लोग रहत रहे ..गाय भईस बैल रहत रहे ..पहिले दु–दु किता मकान बनत रहे ..एक में मरदाना लोग रहे ..दोसरा में जनाना। अब त झुलनिया फुवा देख लिहली ..उनका नाक से हरदम झुलनी चुवत रहे ..एहिसे उनकर नाम झुलनिया रखाईल ..जेतने रोवस ओतने दौड़स झुलनिया फुवा ''खड़े''लोचना पेठा अइली ..ए बड़का बाबूजी सुनी ना ..रोअला में बात समझ में ना आवे ..बड़का बाबूजी पुछतारे''का भईल काहे रोवतारे झुलनिया ''झुलनिया के लोर झोर नाक में नेटा बहत ..दुनों हाथ से नेटा पोछत ..सब मुँह में नेटा लोर पोताईल ..ए बड़का बाबूजी ''सुनी ना भउजी ''इतना कहकर चिल्लात जात रहली समझ में ना आवे का कहतारी ..पहिले संयुक्त परिवार रहे ..घर के बड़का आदमी से कवनो बात ..कहल जात रहे...फेर बड़का बाबूजी झुलनिया खातिर लकठो मँगवले .. कहले खो आ रोयल छोड़ के सोझ बताव...भऊजी के का भईल हा ..थोड़े देर में झुलनिया शान्त भईली ..कहली एबड़का बाबूजी ''भऊजी के बुचिया भईल बा आ बड़ा खून गिरल बा भऊजी मर गईली'' बच्चा जलम के बाद लरकोरी के देह शिथिल हो जाला से लरकोरी उनमुनात ना रहली . .झुलनिया लइका रहे ओकरा नाबुझाईल..उ जनलस कि भऊजी मर गईली ..बड़का बाबूजी के काट त खूने ना .।घबड़ा गईले ..बड़का बाबूजी तीन भाई .. बड़का बाबूजी के एगो बेटा .भईल सऊरिए में मर गईल ..तब से संतान के मुँह ना देखले ..चाचा के पाँच गो लईका भईल माने सब के अकाल मृत्यु भईल ..एगो सीढ़ी पर से ढिमला के मर गइल .. एगो देवारी के दिन रहे दिया बरात रहे ..सब लोग दिया बारे में लागल रहे ..लाइका पाकट में दिया राखे लागल ..ओकरा बुझाइल खेलवना ह ओहि में जर के मर गईल .एगो के जम्हुआ छु देलस .. छोटका भाई के पाँच गो बेटा आ पाँच को बेटी भईल ..उनके बड़का बेटा के लइकी भइल बा ..

आपना लइका फइका ना रहे ..बड़का बाबूजी के जैसे धन मिलल बा ..खड़ाऊँ पहिन के .. मिरजई पहिन के निकल गईले ..जनाना अहाता के ओर ..दरवाजा पर चमईन भेटा गईली हाल चाल पुछले बाबूजी ..''का हो का भईल हा लइका लरकोरी ठीक बानु ''हँ सब निमन बा .... आरे बड़ा

सुन्नर लइकी भईल बा बुझाता ईनर के परी ह ..मन करता देखते रहीं .भगवती माई आईल बाड़ी ..बड़का बाबूजी के मन हुलसे लागल ..कब

लइकी के उठाके गोदी में ले ली ..भर गाँवे हलुवा बटाईल ..हमरा घरे छाछाते भगवती आइल बाड़ी ..आतना दिन से घर में कवनों बच्चा के रोवाई सुने के मिलल बा ..हमरा बाड़का बाचवा के बुचिया भईल बिया ..धन भाग हमार अँगना चुहलगर भईल!

आज नहवावन ह बड़का बाबूजी दालानी में बईठल बाड़े ..उनकर हियरा बुचिया के देखे खतिरा तरसत बा .. थरिया बाजल ..लकइका लोकावल गइल बाबूजी के बुझात रहे अँगना फानि के उठाली गोदिया में ..सब लोग अँगना में से सुनले कि बाबूजी के गोदी में ..लेजाके देद ..अनहरा के का चाही दु गो आँख .. बाबूजी के आँख मिल गई ल ..गोदी में छाछाते भग. वती ..आरे इत साचो ईनर के परी बिया ..लाल –लाल ओठ लाल–लाल गाल करिया घुँघराली केश सुग्गा खनिया नाक ..कमल खनियां आँख आरे अँगुरी छिहिल जाता एकरा गाल पर से ..केतना रूप भगवान देले बाड़े ..''आरे एबड़की माई ''बाबूजी अपना बड़की माई से ..कहतारे ..आरेईत मूरत बिया ..एकरा मुँह में त हमार मुँह लऊकता ..बुझाता संगमरमर के मूरती हिय ..एकरा के देवार में टाँग देब ..हम पूजा करब आपना सुगिया के ..आपना मूरतिया के ..बाबूजी हरदम अपना लगे सुगिया के रखले रहस..खाली दूध पीए खतिरा माई के लगे जाए ..माई यो के लागे केहु लइकवा धरित तहम धान कूटती ..दाल दरती ..रसोई बनवती ...बाबूजी कहिहन आरे सुगिया के माई बड़का घर के बेटी बिया ..दूध दूहाई त एक लोटा दूध ा सुगिया के माई खतिरा भेजवा दिहन ..अब झुलनिया लागी अठान –कठान लगावे ..सुगिया के माई बबुआ बिआईल बाड़ी ..बड़का घर के हई ..दूध पिहन ..हम त कहीं के बिगल फेंकल हई

सुगिया के माई के खाना बनावे ना आवे . . बाबूजी सुगिया के गोदी में लेईके खाना खास .. सुगिया के माई भात गिल कर दे ..पकौड़ी काँच छान दे ..बाबूजी चूल्हा के लगे आग तापे के बहाने बैठ जास ..आसुगिया के माई के धीरे–धीरे बतावस ..घर के मेहरारु पतोहिया के मत बोल स ..पहिल खाना बाबूजी बड़ रहले उनके के परोसाय ..सुगिया गोदी में . । कबेर बाबूजी के खाना में पेशाब कर दे ..बाबूजी तनिको ना घिनास ...मुड़ी पर चढ़ा के खेलावस कबो सुगिया दस्त हो जाय बाबूजी साफ कर देस तनीको ना घिनास .. अपने लगे राखस सुगिया के माई दिनभर काम करेले ..रातिके लईका हरान करी ..देद बेटा हमरा के सुगिया के ..तुसुत आराम से ..तीन बजे उठेलु ..बाहरा जाएके होला ..धान कूटेक होला तैयार होई चाऊर तब नु रसोई बनी .. हमरा के देद सुगिया के ..दूध भरके बोतल में दे द हम पिया देब ..।बाबूजी के प्राण सुगिया में बसे .. आपना पेट पर सुता के ..कहस हमरा बाचवा के बुचिया हई ..हमार प्राण हई ..आधार हई .. जसोदानंदिनी हई ..कंसनिकंदिनी हई , तिरभुवनवंदिनी हई ..हमरा घर के शृंगार हई .. सुगिया बड़ होखे लागल अपरूप रूप ओकर रहे .. बाबूजी आपन सब धन सुगिया के नामे ..कदिहले . हम मुअब की जियब सुगिया के कनियादान हम देब .. सुगिया के कनियादान देके बाबूजी उगरिन भईले ..सुगिया ससुरा गईल बाबूजी बेहोश होके गिरस ..उनकर तबीयत दिन पर दिन खराब होखे लागल ..सुगिया के बोलावल गईल ..आँखि में बाबूजी के सरग के आनंद आ गईल ..अब हम मर जाईब ..कवनो चिन्ता नईखे हमार मोछदायिनी आगईली ..साचो बाबूजी के परान अटकल रहे सुगिया में ..गंगाजली में तुलसी दल डाल के बाबूजी के कंठ में .डललस सुगिया बाबूजी अतना भर कहलन सु..गि..या..आ माथा पर हाथ धके आशीर्वाद दिहल बाबूजी ..

बेतिया,प.चम्पारण, बिहार

भूतपूर्व विभागाध्यक्ष (हिंदी विभाग)
एम एम एम महाविद्यालय
बेतिया, प०चम्पारण, बिहार

नहला पऽ दहला

अभियंता सौरभ भोजपुरिया

'' इयार विनोद बड़ा दिन हो गइल कवनो तितली हाथ मे ना आइल हो नशा में डूबल राजू कहले। ह बात त तू साच कहत बाड.! राजू उनकरा ह में ह मिला देहले।'' फिर दुनो भिस्की के बोलत खत्म कर के नशा में डूबत गइल। बार में लइकी सन पर डोरा डाले लगले। बीयर बार के मैनेजर बाबू जी अब बार बंद करे के समय हो गइल बा तब दुनो के आपन होस्टल में जाये के होश आइल। दोनों लड़की के बात करत घूरत, गिरत–लड़खड़ात हॉस्टल पहुँचले।

राजु आ विनोद दुनो बम्बई में पढ़ाई के खातिर आइल बाड़े। बिनोद के बाबूजी बड़का बिजनेस करेले ! आ राजु के बाबू दिल्ली पुलिस में आला अफसर बाड़े। दुनो के शराब और शबाब के नशा बा। ना जाने केतना मासूम लइकी के जीवन बर्बाद कर देले बाड़े ई दुनो ! ई सवख दुनो के जीवन मे आइसन समा गइल बा कि छूटल मोसकिल बा। दुनो के काम बा भोली भाली लइकी सन के आपन झूठा प्यार के जाल में फँसावल आ शरीर के भूख मिटा के छोड़ दिहल।

एक दिन रात में राजु फेसबुक पर नया तितली यानी कि लइकी ढूँढत रहले। तब ले सपना नाम से दोस्ती करे के पैगाम आइल ...
राजू स्वीकार क लिहले।
मैसेज आइल ..हेल्लो ....!

राजू.... हाय.... बाकिर सपना के कवनो जबाब ना आइल।

राजू रोज मैसेज करे लगले। सपना के प्रोफाइल चेक करें लगले। कुछ दिन के बाद एक दिन फेर मैसेज आइल हैल्लो....!

श्राजू,हेल्लो तु के हउ तोहार मैसेज आइल बा!

''सपना .. बाबूजी उ गलती से हो गइल ह । हमके ई सब चलावे ना आवे ला हम अभी सीखत बानी राधिका से''।

''राजू ... कवनो बात ना हम सिखा देम''।

धीरे धीरे राजू रोज मैसेज करत रहे सपना तू हमसे दोस्ती कर ला...!

''सपना ना बाबू तू त लड़का हउवा आ हम लड़की ना बा बा ना ...!

''राजू ..सपना हम तोहार हर सवख पूरा करेंम''।

ह ना ह ना ... करत करत दुनो में दोस्ती हो गइल। बिना देखले जिये मरे के कसम खाये लगले। राजू खेलाड़ी ह! ई खेल के उ ना जाने केतने हाई प्रोफाइल लइकी के जिस्म से खेल चुकल बा। सपना त गाँव के लागत बिया। सपना के जिस्म के पावे खातिर तरीका ढूंढे लागल आ सफल हो गइल।

राजू खुस हो गइले कि एगो नया तितली फेर जाल में फँस गइल। एक दिन सपना के फोन आइल की हम मिले के चाहत बानी। काहे कि हमार बाबू घरे नइखन। राजू खुस हो गइले कि बकरा हलाल होखे खातिर खुद तइयार बा। विनोद आ राजु कार से चल दिहल लो मिले। करीब सौ किलो मीटर चलला के बाद सपना के बतावल पाता आइल। आज दुनो बहुत खुस बाड़े।

सपना आ राजू दुनो एक दूसरा के देख के फुले ना समात रहे। ''राजु ..सपना तु बड़ी खूबसूरत बाडू चाँद में दाग बा बाकिर तोहरा में ना।'' सपना लजात आपन मुँह ढाक लिहली। राजू हम बियाह करेंम ता सपना तहरा से ना ता ना। हजार कसम वादा खाई के राजू सपना से कहलस..सपना चला दुकान तहरा के तोहफा देम। हम जवन खरीदले रही उ भूल गइल बानी।

''ना राजू केहू देख ली त, सपना कहली ''

''राजू कार से चलल जाइ केहु ना देखी ''

एक घंटा कार से चलला के बाद कार एगो फार्म हाउस पर रुक गइल। जवन राजू के बम्बइया दोस्त रोहन के रहे। ''सपना राजू तू कहा लेके आइल बाड़ हमके''। ''राजू अतना दिन के बाद मिलल बाडू त सोचनी है कुछ खा पियल जाव। आ डेरा जन, ई हमार दोस्त के घर ह। ''

''सपना, राजू बाकिर अकेले ! हमरा कुछ ठीक नइखे लागत ...!

''राजु हाथ खींच के अंदर लेके चल गइले आ सपना के अंकवारी में पकड़ लिहलस''।

''सपना छोड़ा हमरा के शादी से पहिले ई कुल ठीक नइखे। लाख कोशिश के बादो सपना ना छोड़ा पावली। सपना चिलाये के कोशिश कइली। विनोद के जोड़ के चटकन गाल पर पड़ल। आँख से लोर निकल गइल। सपना हाथ जोड़ के आपन इज्जत के भीख माँगत रहली। बाकिर राजु के सपना के जिस्म के नोचे के भूख लागल रहे थोड़ देर के बाद राजू आ दुनो दोस्त मिल के सपना के साथे आपन जिस्म के भूख मिटवले। सपना के अधमरा हालत में गाँव के नजदीक छोड़ के हॉस्टल चल दिहले।

तीनो के मुँह पर कुटिल हँसी रहे। दारू के नशा में राजू सुत गइले। जब सुबह भइल त दरवाजा पर एगो पॉकिट मिलल। जब राजू पॉकिट खोलले ता उनकर होश उड गइल! नशा उतर गइल! हाथ कापे लागल ! पसीना से राजु भींज गइले। पाकिट में सपना आ राजू आ उनकर दोस्त के नग्न फोटो रहे। फोटो में तीनों रेप करत के साफ साफ चेहरा छपल रहे। राजू जल्दी से विनोद रोहन के फोन कइले। फोटो से साथे एगो चिठ्ठी रहे जवना में लिखल रहे ..

''राजू उम्मीद बा ई समय तु होश में होखबा ! हमरा लगे आइसन तहर बहुत फोटो बा जवना के सोचत रही कि फेसबुक पर डाल दी! बाकिर हम नइ खी चाहत कि तहरा जइसन शरीफ आदमी बदनाम हो जाव। ई सबसे बचे खातिर साँझ के 5 बजे 15 लाख रुपया लेके बिना कवनो चालाकी कइले लिखल पता पर आ जा । ''

तीनो के जिस्म से जान निकल गइल रहे। ई के ह जे हमरा के ब्लैकमेल करत बा ! उ फोटो कब खीच लेहल ! दिमाग सुन्न हो गइल रहे। बाकिर ई सब सोच के कवनो फायदा ना रहे। जल्दी से तीनों पइसा के इन्तजाम कइले।

साँझ के बतावल पता पर पहुँच गइले। सूनसान घर के चारदीवारी रहे। भितरी एगो खडूस सकल के आदमी रहे। ''राजू पइसा लेके आइल बानी

''आदमी ठीक बा रख दे..।

राजु के हउवा तु हमरा के काहे फँसावत बाड़ा ! फोटो कब कइसे खिचल .... ।

पइसा रख आ जो, आदमी कहलस... ।

''राजू बाकिर निगेटिव आ अउर कुल फोटो!..

''अभी त इ पहिला किस्त ह, राजा ....अंदर से आवत एगो औरत के आवाज सुनाइल। राजू आवाज के तरफ देखे लगले ...!

जीन्स टॉप हाई हील के सैंडिल कमर के रिवाल्वर हाथ मे सिगरेट लिहले .. ठक.. ठक ...ठक... ठक आवाज करत। जब चेहरा देखले त चिरला पर देही में खून ना रहे। ई केहु अउर ना सपना रहे। उहे सपना जवना के तीनों मिल के रेप कइले रहे जा।

तीनो के मुँह खुलल आ आँख फाटल रह गइल। ''सिगरेट के धुआं मुँह पर फेकलस, कइसन हो मोरे राजा''! काहे भकुवाइल बाड़ा हो ! देखा अच्छा से देखा हम इंपेक्टर सोम्या उर्फ सपना ।

जानत हो मोरे राजा.. हम आई टी सेल के पुलिस इंस्पेक्टर हईं। हमार बच्चपन में रेप भइल रहे। बाकिर हम अऊर लइकी के जइसन आत्महत्या ना कइनी समाज में बदनामी सह के तोहरा जइसन हरामी के बाप बननी। अब रेप हमरा कमजोरी ना ढाल बनल बा। हम एके ढाल बना के तोहरे जइसन हरामी औलाद के होस में के ले आवेनी। अभी ले तोहरे जइसन सैकड़ो हरामी के धूल चटवा चुकल बानी। आ जवन पइसा मिलेला उसे जननी सहायता समुह में बाटेनी। कहानी आगे सुन ...

ई हमार पति बाड़न, ई बीयर बार आ पब मे जाके तोहरे जइसन हरामी अवलाद के पता लगावे ले उनकर कुंडली के ।आ हम मासूम भोली भाली लइकी बन के मीडिया के रास्ते ई अंजाम तक पहुँचाइले। आ ताउम्र दौलत ऐंठी ले। तोहरा का लागत रहे की तु हमरा के फँसा लिहले बाकिर उल्टा तु फँस गइले रे ...ओ ओ हो हो। तू सोचले कि हम रेप करत बानी बाकिर ना! हम त ई सब करवावत रहनी ... चीखे चिलाये के ई सब नाटक रहे, हो करेजा ..! जानत बाड़े नु कि बाप के भी बाप होले ... त आज से कवनो लइकी के मासूम समझे के कोसिस जन करिहे।

चल पइसा दे आ आगिल किस्त के इंतजाम में लग जो।

''विनोद बाकिर हम अतना पइसा कहाँ से लाएम।

अपना बाप से मांग के बाप के] तिजोरी लूट के, सपना कहली''। तीनो सपना के पैर पकड़ के माफी मांगे लगले , रोवे गिड़गिड़ाए लगले, बाकिर सपना के ई सबके कवनो असर ना पड़ल।

तीनो गाली सुनत उहवाँ से मुँह लटका के भाग चलले । आज ई लो अइसन जाल के उल्टा चाल में फँसल बा कि जिनगी में कहियो सीधा ना होई। ई कुल के फेसबुकिया प्यार के बोखार उतार जाई।

❑❑

सिवान बिहार

दू गो लघुकथा

अंकुश्री

भीख

माथ पर से सूरज अबके उतरल रहस। खाये के तइयारी होते रहे कि दुआरी पर एगो भीखमंगा आ गइल। मलकाइन बड़ा खुश भइली। दुआरी पर आवे वाला के पेट भर जाये, ओकर मन जुड़ा जाये– एकरा से अच्छा बात का हो सकत बा ?

ऊ रसोई में गइली। दू गो रोटी आ ऊपर से थोड़ा सब्जी रख के एगो कागज में लपेट के दुअरा पर आ गइली। ऊंहवा ठार भीखमंगा के ओर कागज में रा खल रोटी बढ़ावत कहली, ''लऽ खा लऽ ! दुपहरिया के बेरा बा, खा लऽ त पानी पिआ देब।''

मलकाइन के रोटी वाला हाथ बढ़ल रह गइल। भीखमंगा रोटी ना लेहलस। अपना हाथ के छाता सीधा करत कहलस, ''दू गो रुपिया दे दिहीं, रोटी चाहे खाना ना चाहीं।''

मलकाइन चिहा गइली। लोग पेट भरे खातिर भीख मांगेला। आ ई बा कि रोटी दिहलो पर नइखे लेवत। ऊ फेरू कहलस, ''दू गो रुपिया दे दिहीं।''

भीतरा जा के मलकाइन दू रुपिया के एगो सिक्का ले अइली, ''लऽ !'' रुपिया देला के बाद कहली, ''तहरा हिस्सा के रोटी निकल गइल बा, इहो ले लऽ।''

रुपिया लेला के बाद निहोरा कइला पर ऊ रोटियो ले लेलस। बाकिर कुछहीं दूर जा के कागज सहित रोटी सड़क के एक ओर फेंक के ऊ आगे बढ़ गइल।

❑❑

नजाइज

रेलगाड़ी में बेयपारी के समान लगे ठार होके सिपाही कहलस, ''ई केकर समान ह ?''

''समान बुक करावल बा।'' बेयपारी अपना जेबी से रसीद निकालत बोललस।

''अतना जादे समान पसीन्जर बोगी में काहे रखले बाड़ ?'' सिपाही आपन दोसर हथकण्डा अपनवलस, ''एकरा के उतरवा के लगेज भान में डलवा द।''

''उतारे–चढ़ावे में ढ़ेर परेषानी हो खी, एहीजा रहे दीं।'' बेयपारी गिड़गिड़ाइल।

''तहरा परेषानी के हम ठेका लेले बानी ? लगेज भान के समान पसीन्जर बोगी में लेके चलल नजाइज ह। एहसे पसीन्जर के परेशानी होला। – – जाल्दी से समान नीचे उतार !'' सिपाही दोसरा तरफ ताक के बोललस।

सिपाही के बेलस कड़कदार अवाज सुन के बेयपारी पहिले त घबराइल। बाकिर कुछ सोच के ऊ सिपाही लगे आके गते से ओकरा हाथ में दू गो रुपिया नजाइज थमा देलस। सिपाही रुपिया अपना जेबी के हवाले क के गते से खिसक गइल।

❑❑

❍ 8, प्रेस कॉलोनी, सिदरौल,नामकुम, रांची (झारखण्ड)–834 010
मो0 8809972549

दू गो लघुकथा

अशोक मिश्र

माई नाम ह हमार

गोलीबारी आ आगजनी के बिच बुढ़िया माई सबेरहीं से शहर गईल अपना एकलौता बेटवा के इंतजार करत–करत खुद ही खोजे निकल गईली। राह में लाश बिखरल रहे, चिल्ल–पौं मचल रहे, लइका–मेहरारू के विलाप कलेजा वेधत रहे, रहि–रहि के गोली के आवाज से खून सूख जात रहे, घर–दुआर धूं–धूं क के जरत रहे। माने दंगा के आग में सब कुछ जरि के खाक हो गईल रहे।बाकिर ममता त निर्लोभ, निर्दोष आ निर्भिक होला। जवान बेटा के खोज में बुढ़िया माई डर के साया में डेग बढ़ावत रहली तबहीं एगो कड़क आवाज आईल– रे बुढ़िया रूक! बुढ़िया माई के लागल कि बस आज अंतिमे दिन बा एहि बिचे हथियार से लैस तीन नवही आ धमकले। बुढ़िया माई के त खून सूख गईल, उ मूड़ी नीचे क के भगवान के गोहरावे लगली, तबहिएं ओइमे से एक आदमी पूछल– तोर नाम का ह?तोर धरम का ह ?

बुढ़िया माई के उ आवाज जानल–पहचानल लागल। उ क्रोध से तमतयाइल मूड़ी उपर क के कहली– माई नाम ह हमार, इंसानियत हमार धरम बा। एतना बता के बुढ़िया माई अपना सामने खड़ा अपना बेटा के गाल पर एगो जोरदार तमाचा लगवली आ माई–बेटा एक दूसरे के पकड़ के रोवे लगले।

❑❑

शराबबंदी

प्रदेश में शराबबंदी बा, शराब खरीदल–बेचल आ पियल प्रतिबंधित बा। बाकिर, एहि बंदी के आड़ में नया रोजगार खूब फरत–फुलात बा। पड़ोसी प्रदेश से शराब के तस्करी शबाब पर बा, पूरा के पूरा एगो रैकेट लागल बा।

काल्ह फजीरहीं एगो शराब से भरल ट्रक सीमावर्ती थाना में जब्त भईल रहे, दिनभर खूब गहमागहमी रहे। आज थानेदार के हवाले से अ खबार में खबर छपल कि एक हजार शराब के बोतल बरामद भईल बा।

अब चर्चा ईहो बा कि पड़ोसी प्रदेश के सीमावर्ती जिला में शराब व्यवसायी के सदमा लाग गईल बा, अस्पताल में भर्ती बा।

अब ऊ रहि–रहि के बेहोश हो जाताऽ आ एके गो रट लगवले बा कि एक हजार ना दस हजार बोतल रहे।

❑❑

❍ कटनी,म प्र

गीत

कुमार मंगलम रणवीर

आइल बा महँगाई कसाई ए आदित्य गोसाई
करी छठ के व्रत कइसे छठी माई...।
नेम–धेम से भूखत रहनी..
दुई कलसुप से अरग देवत रहनी...
मार गइल विधना तीर...
होता मन अब अधीर....
आइल बा महँगाई कसाई ए आदित्य गोसाई
करी छठ के व्रत कइसे छठी माई...।
दुइ केलवा एक नारियल से कइसे अरग देब
पांच ठेकुआ से कइसे अबकी छठ भेत....
सुन ल निहोरा रे आदित्य गोसाई
हर ल पीर फिर कुछु बुझाई
आइल बा महँगाई कसाई ए आदित्य गोसाई
करी छठ के व्रत कइसे

❑❑

❍ पटना

आज महालया

कुमार जीवन सिंह

काश–फूल सगरे फुला गइल हो
कुआरे में दुर्गा पूजा आ गइल हो।
खेत बधरिया में धान सब फुलाइल
नन्ही नन्ही बुनी होके ओस छितराइल।
रवी– नजरुल के गीतिया छा गइल हो
कुआरे में दुर्गा पूजा आ गइल हो।

आजी बनावेली नरियर के नारू
घरे घरे बाँटेलें काका बाबू हारू
लरिकन में खुशी प्रेम समा गइल हो
कुआरे में दुर्गा पूजा आ गइल हो।

फजीरे फजीरे महके सिउली के फूलवा
मछरी से भरल बाटे सउंसे पोखरवा
सब दुख आज बिसरा गइल हो
कुआरे में दुर्गा पूजा आ गइल हो।

ढाक बाजे ढोल बाजे बाजे काँसर घंटा
खाए में निक लागे मछरी भात पंता
जियारा हमार जुरा गइल हो
कुआरे में दुर्गा पूजा आ गइल हो।

चार दिन पूजा होला बाड़ा धुमधाम से
कलकत्ता बेहाल होला रास्ता के जाम से
पाकिट के सब पईसा ओरा गइल हो
कुआरे में दुर्गा पूजा आ गइल हो।

खेतवे के डँड़ेरी पर मनवा बसेला
चाँहेनी तबहुँ तना अँखिया हटेला
काहे शहरिया अईसन ना भईल हो
कुआरे में दुर्गा पूजा आ गइल हो।

❑❑

❍कोलकाता, प0 बंगाल

पइयाँ–पइयाँ हो

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

लोटि कबों भुइयाँ
चलत बकइयाँ
कबों चढ़ि बइठे
बाबा कन्हइयाँ
कि ठुमुकि चले
पइयाँ–पइयाँ हो,
नन्हका बेटउवा ।

कबों मारि मुसुकी
चलि आवे घुसुकी
पकड़ी के धोती
रोवेला सुसुकी
कि ठनगन ठाने
बिहनइयाँ हो,
नन्हका बेटउवा।।

मारी किलकारी
लाँघेला दुआरी
कबों घुमि आवे
अँगना ओसारी
कि कबों के धउरी
पकड़े परछइयाँ हो,
नन्हका बेटउवा।।

❑❑

❍बरहुआं, चकिया, चंदौली

गीत

संतोष कुमार

रउवा अइनीं त आइल बहार,
जिनिगिया संवर गइल हमार ।

तू अइलू त खुशी मिलल हजार,
जिनिगिया संवर गइल हमार ।

रउवा ना रहनी त करीं ना हम श्रींगार,
जिनिगिया रहल भइल अन्हार ।

तू ना रहलू त रहनी हम बेकार,
जिनिगिया रहल भइल अन्हार ।

राउर साथ पवनीं त चमकल लिलार,
किस्मतिया जाग गइल हमार ।

तोहार हाथ धइनीं त कवन बहल बेयार,
भगिया जाग गइल हमार ।

रउवे एतना त कइनीं दुलार,
जिनिगिया हो गइल उजियार ।

तू ही एतना त देहलू प्यार,
जिनिगिया हो गइल उजियार ।

❑❑

❍ पश्चिमी चम्पारण, बिहार

नवगीत-गजल

दिवाकर उपाध्याय

काम घुमघुम के बावे खइला के।
माल मिलबे करीं,बिकइला के।।

राग दरबारी चरण चाटि रहल,
दाम मिली गुलाम भइला के।0।।

बात मोरल के करे चौकी पर।
गर प्रतिभा के बा दबइला के।0।।

जिन्ना जयचन्द मामा शकुनी के,
मिली इनाम चमचा भइला के।0।।

नितरी भीतरी के लाज बेचे के,
पइसा पइसा के बा बिकइला के।0।।

सहि के दरद बनल रहे मरद,
राज के बात बा पचइला के0।।

लाज लुटल जे कुल कापड़ के,
जुठ ओकरे बा कवरा खइला के।0।।

❑❑

— **बक्सर**, बिहार

भोजपुरिया

सुहानी राय

बचपन बीतल जवनिया आइल
समइया के संगहि पूरा भइल पढ़ाई।
दुई रोटी के चक्कर मे हम,
छोड़ी के आपन गांव जवार,
धइनी नगरिया के बाट ए भाई।
गइनी जब हम ओहि नगरिया,
कहे सभहिं हमके भोजपुरिया।
पूछे उहवाँ के लोग ई हमसे,
अंगरेजी नाही आवे का तोहके।
मुस्कियाई के रही जाइ हम,
तोहनी के का समझाई हम।
जवने भोजपुरी बोलिया के खातिर,
कहेला तू हमके गवार।
ओहि भोजपुरिया बोली से सगरो,
बहल ह आज पूरबी बयार।

❑❑

❍ बलिया उत्तर प्रदेश

असहिं का वृद्ध लो के होई दुरगतिया

आकाश महेशपुरी

जन्म लेते पूत के उछाह से भरेला हिय,
गज भर होई जाला फूलि के ई छतिया।
पाल–पोस के बड़ा करेला लोग पूत के आ,
नीमने से नीमने धरावे इसकुलिया।
होखते बियाह माई–बाप के बिसार देला,
तबो माई–बाप दें आषीश दिन–रतिया।
त्याग दिन–रात कइलो प नाहीं सुख मिले,
असहिं का वृद्ध लो के होई दुरगतिया।।1।।

तनिको बीमारी होखे बेटा चाहें बेटी के तऽ,
छोड़े नाहीं माई–बाप एको डाकटरिया।
कवनो उधम क के रुपिया लगावे लोग,
देखे नहीं रात बा कि जेठ दुपहरिया।
उहे माई–बाप जब खाँस देला सुतला में,
चार बात कहे रोज बेटवा, पतोहिया।
तनिको शरम नाहीं बाटे आज अँखिया में,
असहिं का वृद्ध लो के होई दुरगतिया।।2।।

बा जेके संतान कई उहो परेशान इहाँ,
झगरा आ मार रोज छीन लेला निंदिया।
केनहो से बोले बाप मिले अपमान बस,
नेकी सब जिनिगी के मिल जाला मटिया।
अपने कुटुंब बाण मार देला छतिया पऽ,
कष्ट भोगे बूढ़ लोग भीष्म जी के तरिया।
कटेला अकेले रात खेत खरिहान बीच,
असहिं का वृद्ध लो के होई दुरगतिया।।3।।

घर–परिवार बदे कर्म लगातार करे,
देखे नाहीं घाम–शीत बहरी भीतरिया।
उहे जब देहि से बा तनी कमजोर होत,
फेर लेत बाटे लोग कइसे नजरिया।
वृद्ध आसरम बा खुलल चहुँओर आज,
उहँवें भेजात कुछ घर के पुरनिया।
बूढ़ माई–बाप आज फालतू सामान लगे,
असहिं का वृद्ध लो के होई दुरगतिया।।4।।

खबर छपल रहे एक अखबार में कि,
बेटा आ पतोहि करें बाहर नोकरिया।
बाप–महतारी के बा लाश घर में परल,
देखल समाज जब खोलल केवड़िया।
काहें पद पावते ऊ माई बाप छुटि जात,
जेकरे करम से बा चमकल भगिया।
मरतो समय नाहीं केहू आस–पास रहे,
असहिं का वृद्ध लो के होई दुरगतिया।।5।।

अँगुरी धराई के सिखावे माई–बाप जे के,
उहे बड़ होखे तऽ सुनेला नाहीं बतिया।
सगरी बला से जे बचावे उजवास क के,
ओकरे धोवात नाहीं चादर आ तकिया।
घर परिवार बदे रोशनी बनल रहे,
उहे आजु सिसिकेला कोठरी अन्हरिया।
कई गो बीमारी ले के दिनवा गिनत रहे,
असहिं का वृद्ध लो के होई दुरगतिया।।6।।

गतरे गतर देहि बथेला कपार पीठ,
हो के मजबूर लोग धइ लेला खटिया।
उम्र बढ़ि जाला जब हद से मनुज के तऽ,
साँच बाति हवे मंद पड़ि जाला मतिया।
अट पट बाति जब निकलेला मुँह से तऽ,
लइका के छोड़ऽ तब डाटि देला नतिया।
मनवा मसोसि मने–मन दुख सहि जात,
असहिं का वृद्ध लो के होई दुरगतिया।।7।।

जेकरा गुमान बाटे अपना जवनिया पऽ,
एक दिन ढल जाई ओकरो उमिरिया।
मान आज नाहीं देत बाटे जे पुरनिया के,
मान नाहीं पाई उहो झुकते कमरिया।
बहुते जरूरी बाटे नीक परिवार होखो,
एक दूसरा से रहे गहिर सनेहिया।
बाकिर समाज जब देखीले तऽ प्रश्न उठे,
असहिं का वृद्ध लो के होई दुरगतिया।।8।।

कुशीनगर, उत्तर प्रदेश

दू गो लोक बाल कथा

डॉ रजनी रंजन

हम झपरझिंगवा

एगो बकरी के पाठा रहे। ओकरा पलानी। के लगहीं राजा के बगान रहे।ऊ रोज अपना महतारी के कहे– राजा के बगान में खाये चलऽ। बकरी कहली– 'ना बेटा! उहां मत जइह। राजा के बगान में पहरा बा।सिपाही लोग ध लीही। मत जइह ऊहां'।

चंचल बालमन के ललक कहां रुकेला। एकदिन छुप छुपा के ऊ हिम्मत के साथ राजा के बगान में घुस गइल।

सिपाही सब दउड़इलन ,तऽ जोर से हिम्मत देखा के कहलस– 'हम झपर झिंगवा, हमरा दुगो सिंगवा, हाथी के दु दाँत तुड़ीं, बाघ के दु झापर मारीं ,तु बोलबऽ त तहरो के मारब'। हेंऽऽ! सिपाही सब अचंभित भइलन।

दउड़ के एगो सिपाही राजा लगे जाके सब कथा सुनवलन। राजा अपना मंत्री के भेजलन तऽ मंत्रियो के भगवला पर उ उहे बात कहलस– हम झपर झिंगवा, हमरा दुगो सिंगवा, हाथी के दु दाँत तुड़ीं, बाघ के दु झापर मारीं ,तु बोलबऽ त तहरो के मारब'। अब त मंत्री भी अचंभित भइलन।फेर राजा के लगे खबर पहुँचावल गइल। अबकी राजा भी उ अजूबा पाठा के देखे खातिर बगान पहुँचलन। उहो पाठा के कहलन– हट हट। भाग।

त पाठा फेर कहलस–हम झपर झिंगवा, हमरा दुगो सिंगवा, हाथी के दु दाँत तुड़ीं, बाघ के दु झापर मारीं, तु बोलबऽ त तहरो के मारब'।हेंऽऽ। राजा त सचहूं अचंभित हो गइलन।

सिपाही आ मंत्री के साथे तुरते मीटिंग बोलावल गइल। आगे आगे राजा आ उनका पीछे सिपाही दउड़लन सभा भवन में। एह सब के बीच में कोई के ई धेयान में ना आइल कि बगान में एको सेवक ना बचलन। खाली बगान देख के पाठा तेजी से भागल अपना घर के ओरी।

आपन सूझबूझ से आपन जान बचवलस आ बूझ गइल कि एतना पहरा रहला पर बाचल मुश्किल बा।एही से ओकर माई ओकरा के मना करत रहे।

बिपत में बुद्धि से काम लेवे के चाहीं आ बड़ बुजुर्ग के कहनाम कबहूँ कमतर ना आँके के चाहीं।

❑❑

सुन रे पुड़िया सुन

एगो राजा रहलन। उनकर रजवाड़ा में सबकोई खूब खुश रहे। एकदिन एगो साधु बाबा राजा के दरबार में अइलन आ राजा के सोवागत से खूब खुश भइलन बाकिर जब राजा के पतरा दे खलन त अचंभित हो गइलन उनका मुँह से अनायासे निकल गइल– हे भगवान! ई का? एतना बढिया राजा आ राज किन्तु आयु एतना कम?

एतना सुनते राजा कहलन– जीवन मरण त बिधना के हाथ में रहेला, राज में सबकुछ बा जनता के कवनो दिक्कत ना होई।बाकिर हमरा रानी के का होई? साधुबाबा! कवनो उपाय होखे त बताईं?

साधुबाबा कहलन– ''अगर हमार भविषबानी के बात साँच होई त रानी के कहब कि राउर अंतिम संस्कार ना करके राउर एकइस दिन पूजा करींहे आ एगो सेनुर के पुड़िया देत बानी।ऊ रानी के दे देब। ऊ उनकर रक्षा करी'–कहके साधुबाबा राजा के आशीर्वाद देके चल गइलन।

कुछ दिन बाद अचानक राजा के इंतकाल हो गइल। रानी साधुबाबा के इयाद कके राजा के शरीर लेके अपना दासी संगे सबसे पुरनका आ खंडहर भइल राजभवन में लेके चल गइली।

पुरनका खंडहर में राजा के पार्थिव सरीर के रख के पूजा करे लगली आ सेनुर के पुड़िया के पूजे लगली। पूजा के बाद रानी डहकत ऊ सेनुर के पुड़िया से कहली– अब तहार का काम? बाकिर तहरा के पूजब काहेकि तहरे से हमार नाम बा। अचानक ऊ सेनुर के पुड़िया से आवाज आइल– हम बानी आ मुसीबत में काम आएम । पूजा के बाद रोज हमरा के राजा के माथ पर लगा देब । रानी अब रोज मन के बात ऊ सेनुर के पुड़िया से कहस आ अंत में राजा के माथ पर एगो टीका लगा देस।

एक दिन दासी के नियत बदल गइल उ रानी के सेनुर के पुड़िया चोरा के रानी से पहिलहीं नहा धोआ के राजा के माथ पर टीका लगा देहलस आ सेनुर के पुड़िया से कहलस– हम रानी आ ऊ दासी। पुड़िया कहलस –''जी रानी जी''।

जब रानी नहा धोआ के पीछे से अइली त सेनुर के गद्दी कहलस– हम त बँधा गइनी जे पूजे पहिले हम ओकरे बस में। अब रानी चेरी भइली आ रउरा दासी भइनी । बाकिर एगो उपाय बा। राजा के

देहीं पर घास उगता। रउरा दुनो जन रोज घास उ खाड़ब, अंतिम घास जे उखाड़ी उहे असली में रानी होईहें।

रानी आपन विपदा पर खूब रोअली। बाकिर कवनो उपाय ना रहे। रानी अब काम धाम कके रोज नहा धो के सेनुर के पुड़िया लगे जास आ कहस– सुन रे पुड़िया सुन! रानी छुटली लँऊड़ी भइनी सुन रे पुड़िया सुन पुड़िया रानी के जबाब देहलस– चेरिया के राज दुइ तीन बार फेर तहरे राज।

अब रोज रानी पूछस त पुड़िया इहे जबाब देत रहे। दासी आ रानी दुनो रोज एगो घास उखाड़े लगली। अंतिम दिन आ गइल जब एगो घास लउकत रहे।

आज रानी फेर काम धाम कके, नहा धो के सेनुर के पुड़िया लगे गइली आ कहली– सुन रे पुड़िया सुन! रानी छुटली लँऊड़ी भइनी सुन रे पुड़िया सुन। पुड़िया रानी के फेर जबाब देहलस– चेरिया के राज दुइ तीन बार फेर तहरे राज। बाकिर रानी के मन दुखी रहे। एगो घास रहे।दासी नहा –धोके उ घास उखड़ली आ चल गली।अंत में रानी राजा के सरीर लगे पहुँचली आ कहली–सुन रे पुड़िया सुन ! रानी छुटली लँऊड़ी भइनी सुन रे पुड़िया सुन!

पुड़िया रानी के जबाब देहलस– चेरिया के राज दुइ तीन बार फेर तहरे राज।

अब रानी कहली– ई संभव नइखे।अब त सब घास हट गइल। अब हमार दिन ना फिरी।

सेनुर के पुड़िया कहलस– दिन फीरी राउर। अबहीं कहीं घास बाकी बा। ना तऽ कुछ होखित।

एतना सुनते रानी राजा के लगे दउड़ली। खूब धेयान से घास खोजे लगली। अचानक आँखि के पपनी में एगो छोटहन घास अटकल लउकल। रानी के आँख से लोर गिरे लागल। ऊ सेनुर के हाथ में लिहली आ गोर लगली। जइसहीं ऊ घास उ खड़ली आ राजा के माथ पर टीका लगवली राजा जी उठलन। रानी के देख के उनका हाथ के सेनुर लेके उनका मांग में भर देहलन। एने रानी के खोजत दासियो तबले ओहिजा पहुँचल। राजा ओकरा के बँधवा के जेल में डलवा देहलन। ओहीघरी पुड़िया कहे लगलस–''चेरिया के राज दुइ तीन बार फेर तहरे राज।'' राजा ऊ साधु महराज के इयाद कइलन त ऊ फेर परकट भइलन आ कहलन– ई सेनुरवे तहार जान बकस देहलस। एकर दुनो परानी हमेसा सम्मान करेम लोग। रानी कहली– हम ई सेनुर के रोजे पूजब जब ले जीयब।

❑❑

❍ घाटशिला, झारखंड

शनिचरी बुआ

जियाउल हक

शनिचरी बुआ के घरे रोवन पीटन पड़ल रहे। सऊदी अरब से फोन आइल रहे कि शनिचरी बुआ के मरद सऊदी अरब में ही गुजर गइल बारन। शनिचरी बुआ मुसमात हो गइल। शनिचरी बुआ के बाल बच्चन के लालन पालन अब कइसे होई? अब शनिचरी बुआ के दे खभाल के करी। एही उम्र में मांग के सेनुर पोछा गइल। इहे चिंता में नइहर से ससुरा तक के लोग के आंख नम रहे। शनिचरी बुआ के हित नाता लोग ढ़ाढस बढ़ावे ई कह के ''की जाए दा भगवान बारन ऊपर में बइठल उहे आर बयार करीहन।''

धीरे धीरे दिन बितत गइल लोग होनि समझ के ई दुःख गम के भुलाए लागल। हित नाता टोला मोहल्ला के सब लोग आपन आपन दिन रात में अझूरा गइल। अब शनिचरी बुआ कइसे बिया, का करत बिया, कइसे चुल्हा चौका चलत बा, ओकर बाल बच्चा कवना हालत में बारन सन अब ई सब पता करें के एतना केकरा ल समय बा उहो ई मोबाइल वाला युग में। शनिचरी बुआ भी आपन किस्मत के दोष समझ के अब ऐही हाल में जीये मरे के ठान लेले रहे।

भगवान के कवनो चर घुमल आ शनिचरी बुआ के मरद जवना कम्पनी में काम करत रहले आज ऊहा से मदद के तौर पर इंडियन करेंसी में लगभग पांच ला ख रूपया आइल रहे शनिचरी बुआ के पासबुक पर। आज शनिचरी बुआ भगवान के शुक्रिया अदा करत रहे कि चला कम से कम हमार बाल बच्चन के पालन पोषण हो जाई ई पैसा में। शनिचरी बुआ के पांच लाख रूपया मिलल बा ई बात धीरे–धीरे टोला मोहल्ला हीत रिश्तेदार लोग तक पहुंच गइल।

आज दिन में शनिचरी बुआ ल दु जगह से फोन आइल रहे। पहिलका फोन नइहर के मझिलो भौजी के रहे ''अरे देखा ना ए बबुनी तहरा भैया के काम धाम बहरा में ठीक से चलत नइखे एही से विचार बनत बा कि काहे ना एही जा कवनो दोकान–दौरी खोल लियाओ। बाकी कहल जाओ हो बबुनी बहुते पैसा लागत बा सौदा में। तहार भइया कहत रलहन आज कि शनिचरी बबुनी से बात करें के कुछ सहायता करीत फिर ओकर लौटा दियाई।''

आ दूसरका फोन शनिचरी बुआ के भसुर के रहे ''देख, शनिचरी ऊ पैसा में हमरो हक होला ऊ हमार छोट भाई रहें, तोर मरद के सऊदी भेजे खातिर एजेंट के हमी पच्चास हाजार गिनले रनी।''

शनिचरी बुआ आज केहू के पलट के जबाव ना देलास सब आगे के वक्त पर छोड़ दिलास कि ई सब के जबाव वक्त ही दी।।

❑❑

❍ छपरा बिहार

बडा बेआबरू भइनी ए गोरिया तोहरे खातिर

बिम्मी कुँवर

छठ के चार दिन पहिले इंदरासना के विदा करा के उनकरा भैया ले अइले, मय लइकिन के हुजूम रामचनर काका के घर में भीड़वाड़ कइ देली सन, केहू उनकर हाल पूछत बा, केहू मीठा पानी ले आवता त छोटकी भउजी परात में पानी भर के उनकर गोड़ धोवे लगली त केहू ससुरा से आइल झोरा झापी, खुरमी लड्डू टिकरी रामचरन काकी से पूछ पूछ के जगहा प सरिहावे लागल। अजब रिवाज होला गांव गिरान के, कवनो भेद ना कि के केकरा घरे कब जाइ कब ना जाइ कवनो टाइम टेबल ना...बस रात के अपना अपना घरे रहे के बा।

रामचनर काकी अपना सास के मूअला के बाद से बुला बीसन बरिस से बिना नागा कइले छठ करत रहुइ, छठ के चार दिन अगते से बिआहल बेटी–ननद लोग अपना अपना ससुरा से आ जात रहे लोग। जबसे काकी के दूनो पतोह लोग आइल तबसे ननद लोग त छठ–दशहरा में आइल छोड़ दिहल लोग भा उनकरो गृहस्थी छितराइल रहे, से फुरसत ना मिलत होखी।

रामचनर काका के दू गो बेटा के भइला के दस बरिस बाद इंदरसना भइल रहली, एगो बेटी ओह प खूब सुन्नर आ पिसान लेखा ऊज्जर, त मान मनौव्वल खूब होखे। जब उ डगमग उमिर के डराढ़ पर रहली ओही बेरा बिसेन टोला के संतोख से आँख चार भइल, आ आठ दस बेर भइल ..बस्स अतने प त इ बात मय गांव में आग लेखा फइल गइल...बात कतना सांच कतना झूठ ह के परवाह ओह जमाना में ना होत रहे, बस काहें भइल! अब चलऽ गाय गोरू लेखा बन्हा जा। इंदरसना के आनन फानन में कुशीनगर के बहुत अमीर जमींदार परिवार में बिआह हो गइल। प्रेम परवान चढ़ला से पहिलही बिसुख गइल।

उड़त उड़त संतोख के भी पता चलल कि इंद. रसना ससुरा से आइल बाड़ी, आ खरवास के पहिले चल जइहें। उ जुगत लगवले कि कइसे मिलल जाये।

छठ के तैयारी शुरू हो गइल रहे, घाट के लीपाई पोताई, संझवत के परसादी अऊर ठेकुआ बनावे खातिर गेहूं धोआ गइल रहे, रामचनर काकी घामा में छत प बइठ के गंहू सूखववली, फेर जांता में पी. सली।झसवत के परसादी बन गइल रहे, आ परसादी खाये खातिर सभ केहू रामचनर काका के दुआरी प मजमा लगवले रहे, संतोख भी आइल रहुअन परसादी खाये खातिर। उ सबसे दूर ठाड़ रहुअन जे कसहू देर से खड़ा रहब त एक झलक इंदरसना के मिल जाइ। बाकिर इंदरसना अपना भौजाई लोग संगे काम में बाझल रहली से बहरी एक्को बेर ना अइली। मन मसोस के संतोख अपना घरे चल गइले।

अगला दिन दुपहरिया के खूब पीअर सिलिक के कुरता पायजामा पहिन के उ क बेर घ ाट प आगे पीछे घूम लीहलन बाकिर इंदरसना अपना माई भौजाई संगे पूजा पाठ में बाझल रह गइली, भोर के घाट प भी देखा दरसन ना भइल। फेर सब केहूं अपना अपना घर में ....

कातिक बीत गइल रहे, फतींगी कुल नापता हो गइल रहुइ सन, भोर भिनसहरे आ सांझ होत होत सीत भी गिरे लागल रहे, दुपहरिया में सभकरा छत प खटिया नेवार प साल, सुइटर भी सूखे लागल रहे, बूनी पड़ला से जाड़ा अपना परवान प रहे।

बिसेन टोला में इंदरसना के समौरिया लइकी के बिआह तय भइल रहे त बोलहटा आइल जे गीत गावें खातिर जाए के बा, इंदरसना अपना सखी कुल्हीन के संगे ओह टोला में गीत गावें जास त उ लोग के संगही मैदा फुआ भी जात रहली,

मैदा फुआ के उमिर पचास साल होखी, उजर लूगा उजर केश आ मैदा लेखा गोराई उनकर पहिचान रहे बाकिर बहुत हसोड़ रहली। गंभीरो बात के एक छन में हास्य बना देत रहली।

मैदा फुआ रामचनर काका के बड़का बाबा के बेटी रहली आ बाल विधवा रहली से शुरूए से नइहर में ही रह गइली, भाई भौजाई, भतीजा भतीजी के चार गो उरेब बात भी लाद में लुकवा के हरदम हँसत रहस। कबो केहूं के सोझा आपन दुख ना रोवस।कुआर लइकीन भा नया नहुर पतोह लोगन के झुंड जब कतहूं जाये त मैदा फुआ गार्जियन के रूप में संगे जात रहली।

बिसेन टोला में बिआह के गीत, नाच गाना होखला के बाद सभ केहूं बहरी दुआर प बइठ के कउड़ा तापस लोग आ ढेर रात बीतला के बाद फेर घरे आवत रहे लोग।

रोज संतोख भी साल ओढ़ के ओही मेहरारूअन के झुंड में बइठ के कउड़ा तापस, अन्हेरिया में केहूं चीन्ह ना पावे कि कवनो मरदाना भी ओइसा बा। हेने संतोख अजोरियाा में इंदरसना के कत्थई साल देख लेस, आ इहे उनकरा से

गफलत हो गइल, जे इंदरसना अउर मैदा फुआ दूनो लोग के साल एक्के रंग के रहे आ रात के खुला आकाश के नीचे उ दूनो जनी मूड़ी तोप के कउड़ा तापस लोग आ संतोख घूंघ में रहस।उनकर कान्फिडेंस हाई लेबल के रहे, एह बार उ कवनो मौका गवावल ना चाहत रहुअन,कउड़ा तापत तापत उ मैदा फुआ के इंदरसना समझ के मुठ्ठी में लमनचूस आ एगो रूक्का पकड़ा दिहलन, जब ओहे ने कवनो हरकत ना भइल त उ खुश भइले जे इंदरसना लमनचूस स्वीकार कर लेली..अब उनकर इ रोज के काम हो गइल रहे, चार पाँच दिन बाद संतोख के लागल जे इंदरसना के लमनचूस से कवनो एतराज त नइखे आ रूक्का भी पढ़ते होखिहे त ओह रात सभ केहूं गीत गा के कउड़ा तापे बइठल त फेर संतोख पलखत लगा के ओही मेहरारूअन के बीच में बइठ गइले आ दू तीन मिनट बाद धई के मैदा फुआ के इंदरसना बूझ चिउटी कटलन, एक बेर कटलन त उ हाथ खींच लेली, फेर तनि कस के चिउटी कटलन अब उनकर मन अउरी बढ़ गइल ऐह बार फेर चिउटी कटले अबकी मैदा फुआ उनकर साल खींच के उनकर मुंह आंग के अजोरिआ में कइली आ जब देखली कि संतोख हवन त उनकरा गाल प दू तीन थपर मरली आ कहली जे अरे नतिआ हमरा के चार दिन से लमनचूस देत रहल ह, हम सोची जे गीत गवला सन्तीर हमरा के घर के लोग लुकवा के फरका से लमनचूस देत बा, बाकिर आज त एक बेर फेर दूसरा बेर चीउटी कटला प हमार माथा ठनकल ह, जब इ तीसरा बेर चीउटी कटलस ह तब हमरा से रहल ना गइल ह....अरे मटीलगना भइल बाड़े हमरा के लमनचूस देबे आला, भगबे कि ना...ऐह से पहिले कि मरदाना किता में पोल पट्टी खुलित संतोख ओहिजा से पनपना के भगले, आ फेर खरवास बीते से पहिले जबले इंदरसना अपना ससुरा ना चल गइली उ ओह टोला में कबो लउकल भी ना। ❑❑

❍ चेन्नई

अरजी बा एतने

दीपक तिवारी

अरजी बा एतने परिले चरनवा,
सूना बाटे गोदिया देई दीं ललनवा।

गाँव के लोग बाँझींन कहेला हमके,
पियतानी घुटे,घुट रोज हम गम के।
कुछो के कमी ना इहे बा करनवा..
सूना बाटे गोदिया देई दीं ललनवा।

हे छठी माई राउर करीलें बरत हम,
असरे में चलत बाटे हमार दम।
भीतरी से दुखित रहे सदैव मनवा..
सूना बाटे गोदिया देई दीं ललनवा।

पूरा मुराद करीं कोशी हम भरबि,
भुलबि ना कबो हर साल करबि।
अरघा हम देबि गंगा जी स्नानवा..
सूना बाटे गोदिया देई दीं ललनवा।

❑❑

❍श्रीकरपुर, सिवान

हमार भोजपुरी

विमल कुमार

लागे जियला से जरुरी मरलका भइल।
आज दुसमन जब अपने जमलका भइल।

साँस आवत जात मुँह बिरावे हरदम,
गात गठरी होखल कलह परलका भइल।

पेयार तड़पेला स्वारथ खुल के हँसे,
जबसे पक्का ई घरवा ढहलका भइल।

आस बिखरल अन्हरिया हो गइल दिने में,
संगी दुःख दरद लुगरी फटलका भइल।

उनकर होते पुरा मोर सपना टूटल,
तबसे किसमत मोर लोर पोछलका भइल।

हावा जहर हो गइल भइल नदी नलका,
काल लागे तब एडभांस बनलका भइल।

❍ जमुआँव, भोजपुर, बिहार

आश्रम

माला वर्मा

हम आपन क्लीनिक में बिजी रहीं तभी एक परिचित आदमी आकर कहलन कि डाक्टर साहेब रऊआ के एक आश्रम में चले के पड़ी। हम ओकरा से कहनी दृ भाई थोड़ा इंतजार कर ताकी एइजा के काम सलटा ली। उक्त बंदा हमरा के आश्रम के अता–पता समझा के चल गइल।

सच पुछी त हमरा इ आश्रम के नाम से तनी चिढ़ हो गइल रहे। जरूर कौनो साधु–पंडित के तबियत खराब होखी। अऊर इ साधु–पंडित? काम के ना काज के दुश्मन अनाज के। मन में खीस बरत रह लेकिन जाये के त रहले रहे। हमरा ई मेडिकल प्रोफेशन में हर कोई के इलाज करे के बाध्यता बा, नियम बा –चाहे ऊ कोई भी इंसान हो।

हमार क्लीनिक से आश्रम बहुत दूर रहे। खैर, आपन क्लीनिक के सब काम सलटा के स्कूटर स्टार्ट कइनी। मन ही मन में अपना फीस के साथे पेट्रोल के दाम भी जोड़त रहीं। घोड़ा घास से यारी करी त खाई का! लेकिन ई चिन्ता भी दिमाग में बइठल रहे – का पता फिसवा मिली की ना मिली! ओइजा साधु–संत के भीड़ होखी आ सब जना राम–राम करके हाथ जोड़ दी लोग और पईसा के बदले आशीर्वाद व परसादी पकड़ाई लोग। एक त समय के बरबादी ऊपर से पे. ट्रोल फूँक के एतना दूर गइनी और पईसा के बदले कटल–फटल फल–फ्रूट! नुकसाने नुकसान होखी।

इहे सब सोचत आधा घंटा बाद आश्रम पहुँचनी। गेट पर दरबान खड़ा रहे, ओकरा पहिले से खबर रहे कि डाक्टर आवत बाड़न। भीतर घुसनी। चारों तरफ नजर घुमवनी दृ गेरुआ वस्त्र और दाढ़ी बढ़वले कौनो साधु–पंडित ना दिखाई पड़ल। हम दरबान से पुछनी – "का भाई एइजा कोई साधु–संन्यासी ना रहेला का? अइसन आदमी त हमरा नइखे दीखत!"

"ना–ना, एइजा साधु–पंडित ना रहेला। ई आश्रम बूढ़–बुजुर्ग लोग के ह, जे अपना संतान द्वारा ही त्याग दीहल गईल बा। एक तरह से इ आश्रम दरअसल वृद्धाश्रम ह। वृद्धाश्रम शब्द सुन के खराब लागेला एहिसे हमनी के खाली आश्रम कहीला।"

"का! जाइसे आसपास से नीचे पटका गईनी... हमरा कल्पना में त कुछ दूसरे बात घूमत रहे! बेकार तब से उल्टा–फूलता सोचत रहनी। अचानक से ई बुढ़–पुरनियाँ लोगन खातिर हमार दिल में अपार करुणा, श्रद्धा के भाव उपज गइल।" आश्रम में जौन सज्जन के देखे खातिर हम एइजा आइल रहनी दृ उनकर चेकअप कइनी, प्रेशर देखनी तथा कुछ दवाई पुर्जी पर लिख देनी। हमरा बैग में एकाध टॉनिक के शीशी रहे, उनका के पकड़ा देनी। एतना सब कइला के बाद उनका से उनकर हालचाल पूछनी कि एइजा आवे के पीछे का कारण बा...

बुजुर्ग सज्जन आपन बात बहुत विस्तार से त ना बतवलन किन्तु अंत में इ जरूर कहलन कि अब ऊ आपन पुरान सब कड़वा बात भुला गइल बाड़न। ई आश्रम में उनका कोई दुख तकलीफ नइखे। एइजा के कर्मचारी बड़ा आदर बात करेला। जवान इज्जत हमनी के अपना घर में नसीब ना भइल तवन एइजा अनजान लोगन के बीच मिलल बा। हमनी के एहिजा बहुत खुशी बानी जा। तबियत खराब भइला पर ध्यान दीहल जाला।

उ बुजुर्ग व्यक्ति के बात सुनकर हमरा मन के बहुत तसल्ली मिलल। आश्रम के प्रबंधक चले के बेरा हमार फीस देवे खातिर आगे बढ़लन ले. किन हम एकदम से मना कर देनी। रुपया त ना लेनी बाकी उल्टे उ सब बुजुर्ग लोगन के सामने दूनों हाथ जोड़ कहनी दृ जब भी हमार जरूरत पड़े, रऊआ सभे हमरा के बुला लेब। रऊआ लोग के हम कौनो काम आ सकी त ई हमार सौभाग्य होखी।

एतना कहला के बाद त हमरा आँख में लोर भइल गइल। अऊर ओने से आशीर्वाद के झड़ी लाग गइल। हम दूनों हाथ जोड़ लेनी।

स्कूटर स्टार्ट करके सोचे लगनी, आखिर हामु कोई के बेटा हईं और सब बेटा एक समान ना होला। परिवार के रहते कोई बुजुर्ग लोग के वृद्धाश्रम में जाकर रहे के पड़े तो ओकरा से ज्यादा अच्छा बा निःसंतान होखल। अगर कोई संतान अइसे करत बाटे त ओकरा के कड़ी सजा के प्रावधान होखे के चाही...

❑❑

❍हाजीनगर, उत्तर 24 परगना, प. बं.743135
9874115883

हाली-हाली उग ये अदितमल

तनुजा द्विवेदी

भारत के धरती तीज आ त्योहारन के धरती ह। इहवाँ हर मौसम मे कवनों ना कवनों त्योहार पड़बे करेला। देवारी के बीतते आउर भाई दूज के बाद सगरो छठ परब के तैयारी चले लगेला। छठ बरत भगवान सूर्य के समर्पित एगो अइसन बरत ह जवन शुद्धता, स्वछता आउर पवित्रता के संगे मनावल जाला। जइसे–जइसे छठ बरत के दिन नीयरे आवेला, जेहर देखीं, ओहरे छठ के तइयारी शुरू होत दिखाई देवे लगेला। छठ के बाति के साथे अपने सभ्यता–संस्कारन के झलक उभरे लागेले, सभे कुछ अपनत्व से भरल पूरल देखाए लगेला। भोजपुरिया संस्कृति में देवी–देवता के संगे प्रकृति पूजा–उपासना के ढेर महातिम दियाला। ओही में सूर्योपासना खातिर छठ के परब मनावल जाला। छठ व्रत षष्ठी तिथि के होला एही से एकर नाम छठ पड़ गइल। कातिक अँजोर के छठी पर मनावे जाए वाला छठ के ढेर महातिम ह। एकर बरनन भविष्य पुराण मे मिलेला। ई बरत आदिकाल से घर–परिवार के सुख–समृद्धि के खातिर मनावल जाला। एह परब के मरद–मेहरारू सभे संगही मनावे ला लो।

एगो पौराणिक कथा ह कि लंका विजय के बाद भगवान राम आउर माता सीता एह बरत के विधि विधान से कइले। छठ बरत के संबंध मे एगो इहो कहनी ह कि पांडव लोग जब जुवा मे आपन राज पाठ हार गइने, त द्रौपती छठ के बरत कइनी आउर उनुकर मनोकामना पूरन भइल । एगो लोक कथा इहो हवे कि राजा प्रियब्रत आ रानी मालिनी संतान हीन रहले। पुत्र खाति कश्यप ऋषि से जग करवने, बाकि मुवल लइका के जनम भइल। ई सुनके राजा बहुत दुखी भइलें आ आत्महत्या करे क मन बना लीहलें। जइसे उ आत्महत्या करे चललें, त छठी माई परगट होके कहलीं, "हम देवी छठी हईं आ सभके पुत्र के सौभाग्य देहीलें"। राजा आउर रानी कातिक अँजोर के छठी माई के बरत कइने आउर उनके घरे लइका के जनम भइल।

वइसे त वैदिक परंपरा के कूल्हे बरत त्योहार के वैज्ञानिक कारण ह, त छठों के बा। ओह घरी सुरूज भगवान के जवन पराबैगनी किरन धरती पर पड़ेले उ धरती के सभे जीव जंत आ मनई खाति ढेर लाभकारी होले। कार्तिक शुक्ल के छठी के दिने मनावल जाये वाला छठ पवित्र परब हऽ। पहिले ई व्रत के मेहरारू लोग करत रहे, बाकि अब त अदमी लोग संगे करे लागल बाड़न। एकरा के बेटा ला करे जाये वाला परब कहल जाला। समय के संगे लइका आ लइकी मे अंतर ना रह गइल बा आ आजु के समय मे तनाव से जूझत मनई खाति ओकरे तनाव से मुक्ति के बरत कहल जाव त अतिशयोक्ति ना होई।

छठ पूजा के शुरुवात कार्तिक शुक्ल चतुर्थी के 'नहाय–खाय' से, जब व्रती घर के सफाई कइला के बाद कद्दू, रहिला क दाल आउर भात खाय के जमीन पर सुतेलन । इहवें से व्रत के शुरुआत होला। अगले दिन 'लोहंडा' आउर 'खरना' पर सांझी के बेरा में गुड़ के संगे साठी के चाउर के खीर बनाके केरा के पत्ता में ओकर भोग लगावल जाला। षष्ठी के सबेरहीं से डूबत सूरूज के अरघ देवे के तइयारी शुरू हो जाला । अरघ में मौसमी तरकारी आउर फल के बांस के सूप भा मिट्टी के ढक्कन में सजावल जाला। व्रती एही सजल सुपली के लेके पश्चिम दिशा में पानी में खड़े होके सूर्य के नमन करेलन। ई एगो अइसन परब ह, जवने मे अस्त हो रहल सूरूज के पूजा कइल जाला। सूर्य के अस्त होखला के बादे व्रतधारी घरे लौटेलन।

लोक जीवन सहजता के जीवन होला। एह सहजता में अपनत्व आ प्रेम के लमहर धार दिखाई देवेला। व्रत–त्योहारन के बेरा जवन गीत गवाला ओहू में लोक–जीवन के आषीश, प्रेम, अपनत्व, सहयोग, समरसता दिखाई पड़ेला। एही बदे छठ के सामाजिक समरसता के बरत कहल जाला। साँचो मे छठ के कारने बैर भाव मरि जाला आ नेह उपजि जाला। एह परब पर ई लोकगीत जरूर गावल जाले –

काँच ही बाँस के बहँगिया
बहँगी लचकत जाय ।
बाट जे पूछेला बटोहिया

ई बहँगी केकरा घरे जाय ?
आँख तोर फूटो रे बटोहिया
ई बहँगी कवन बाबू के घरे जाय।।

भगवान सूर्य के बरत भा छठी माई के बरत भा सूर्य षष्ठी के बरत के नाँव से परसिद्ध ई परब लोक उत्सव बेसी ह। एह बरत के विधि –विधान आउर ओकरे संगे गावे जाये वाला लोकगीतन के रंगत आ उमंग अलगे रहेला। सुरूज भगवान से अपने दशा के बतावत मेहरारू लोग जब ई गावेलीं सुने वालन के आँखि से लोर रुकबे ना करेला –

काल्ह के भुखले तिरियवा
अरघ लिहले ठाढ़ऽ।
हाली–हाली उग ये अदितमल,
अरघा जल्दी दियावऽ।।

छठ के गीतन में लइका के बात कवनों न कवनों रूप मे आइये जाला। देखीं गंगा माई से जुडल एगो गीत –

गंगा माई के झिलमिल पनिया
नइया खेवेला मल्लाह,
ताही नइया आवेले कवन पूत
एहो कवना देई के साथ।
गोदिया में आवेलें कवन ललना
एहो छठी मइया के घाट।।

छठ पुजा मे परसाद खाति केरा, नेबुवा, दही, सेब, सिंघाड़ा, उंख, हरदी, आदी, चिउरा, सूरन, कोंहड़ा के परयोग होला जवन प्रकृति के अँचरा से मिलेला, एही से एह परब के प्रकृति पूजा के परब कहल जाला। ई बरत सामूहिक समरसता के बरत ह, जवने मे हित नात से लेके अड़ोसी – पड़ोसी तक ब्यवस्था बनवावे मे बराबर शरीक होलें। एकर मतलब त इहे ह सभे केहु चाहे उ बरत करत होखे भा न करत होखे। कहीं कहीं कुछ लोग अइसनो भेंटाला जे बरत कवनों कारन से ना क पावेला बाकि कवनों बरती के बरत मे सहजोग जरूर देवेला –

कवन देई के अइले जुड़वा पाहुन,
केरा–नारियर अरघर लिहले।

भोजपुरिया लोक जीवन मे छल कपट कमे मिलेला। जइसे इहवाँ के लोग मन से निश्छल होलें ओइसही इहाँ के धरती से किसिम किसिम के फलदृ फूल उपजावेले। कवनो गाँव में चलऽ जाईं, हर जगह लौकी, कोंहड़ा, नेनुवा, सरपुतिया भा नेबूआ, केरा, हरदी, सूरन लउकबे करी । तबे न ई ढेर गावलों जाला–

केरवा जे फरेला घवद से,
ओहपर सुगा मेरड़ाय,
सुगवा के मरबो धनुष से,
सुगा गिरे मुरछाय।

धरम जाति के भेद भुलाके हित–मीत, गाँव –घर–समाज छठ पूजा मे समान रूप से सामिल हो खेला । बरती सभे दोसरों के बरत करे खाति एकर महातिम बताके उसकावेला। देखीं न –

महादेव के लगावल फूलवरिया
गउरा देई फूल लोढ़े जाँय,
लोढ़त–लोढ़त गउरा धूपि गइली
सुति गइली अँचरा बिछाय।

ई कहलों गइल बा कि मेहरारू लो के भरल–पूरल स्वरूप माई बनले मे होला। मेहरारू लोग भोजपुरिया समाज मे कर्मठता आउर त्याग के मूर्ति ह लो। ओह लोगिन के परान उनके संतति मे बसेला । ओकरा के पावे खाति कुछों करे खाति हरमेसा तइयार रहेला लो । पूत खाति त लालायित रहेला लो बाकि बेटी दमाद के बातों ना भुलाला। देखीं तनि–

रुनुकी झुनुकी बेटी मांगीला
पढ़ल पंडितवा दमाद
हे छठी मइया –

छठ मे भोजपुरिया संस्कृति आ संस्कार क असली रूप उभर के आवेला। सोरह सृंगार, सोलहो कला भा पूर्णता के प्रतीक सोरह आना के झलक सांचो मे देखे आ समझे के होखे त अपना के एक बेरी एकरा मे समाहित होके समझीं। फेर रउवों ई कहत न अघाब कि – छठ सांस्कृतिक संपन्नता, पावनता आ वैभव के व्रत हऽ।

❍ **अवंतिका II, गाजियाबाद**

भोजपुरी साहित्य : प्रकाशन अउर विपणन एगो गंभीर समस्या

कनक किशोर

भोजपुरी साहित्य के माध्यम लोक भाषा ह,जे समाज के देन ह।राजाश्रय के आभाव मे भी अपना भाषायी संस्कृति अउर लोक जुड़ाव के आधार पर साहित्य के क्षेत्र मे दमदार उपस्थिति दर्ज कर रहल बा। आज के ऐह आर्थिक अउर डीजीटल युगो मे प्रकाशन अउर विपणन के अभाव मे भोजपुरी साहित्यकार घर के आटा गील कके आपन रचना समाज के आगा परोस साहित्य भंडार भर रहल बाड़न।ई सही बा कि कैलिग्राफी भारत के देन ना ह। ई त श्रुति अउर स्मृति के देश रहल हा।आपन याद के लेखनी मे बदलला पर अदभुत आनन्द महसुस भइल होई। पर आज लमहर सफर तय कईला के बादो किताब अनेको सँचार माध्यम दूरदर्शन, कमप्यूटर, इंटरनेट जइसन मशीनी हमला के झेल रहल बा।एकरा बावजूद भी किताबन के सामाजिक महत्व आईना के तरह साफ बा।फेर आजो भोजपुरी साहित्य के प्रकाशन अउर विपणन के समस्या काहे ?

हमरा समझ से एकर मुख्य कारण पाठक के अभाव बा।समाज में किन के पुस्तक पढ़े के वृत्ति आज भी ना के बराबर पावल जात बा।त प्रकाशक आपन धन काहे लगायी जब ओकरा बाजारे ना मिल पायी।आज भोजपुरी समाज के एगो बड़ आबादी मे किताब के पढ़े के चस्का मौजूद बा बाकिर आज ओहू में से अधिकांश आपन माई भाषा के किताबन के किन के पढ़े के स्थान प भेंट स्वरूप प्राप्त किताबे के पढ़ल चाहेला।ई घालमेल भोजपुरी साहित्यकार के किताब प्रकाशित करावे के मनोबल कतना दिही अउर कतना बाजार उपलब्ध करा पायी ई हम सबनी से छूपल नइखे। मराठी, मलयालम अउर बंगला जइसन भाषायी संस्कृति के मातृत्व प्राप्त किताबन के बिक्री हिन्दी पुस्तकन से भी ज्यादा बा ओकर कोई अउर कारण नइखे बल्कि माई भाषा के किताब पढ़े के अधिक चस्का बा, खरीद के पुस्तक पढ़े के रिवाज बा।

आज हमनी के पच्चीस करोड़ आबादी वाला भाषा के तगमा लटकवले चल रहल बानीं जा पर कवनो लेखा पास में नइखे कि देश, विदेश अउर राज्य में कवगो संस्थान/प्रकाशक/व्यक्ति माई भाषा के प्रकाशन खातिर आगे आईल बा। एगो डच उपन्यासकार के उपन्यास के डेढ़ करोड़ के आबादी वाला नीदरलैंड में सात लाख प्रति बिक जाला। अरब लोगन के देश मे हिन्दी लेखकन के प्रकाशक एक हजार प्रति अउर पच्चीस करोड़ बोले वाला भाषा के साहित्य के साहित्यकार खुदे प्रकाशित करावे खातिर बाध्य बा उहो सैकड़ा मे आपन थाती संयोगे अउर बाँटे खातिर।

एक बात अउर की पाठक के रूची के स्थिरिकरण एगो सांस्कृतिक बौद्धिक प्रक्रिया हऽ। एह से ओकरा से अलगा हट के कवनो आग्रह साहित्य के शक्ति अउर पाठक के क्षमता दूनों के अपमान हऽ। एकरा के समझे के होई अउर पाठक के माँग के अनुरूप साहित्य के सृजन के ओर बढ़े के पड़ी।साहित्य के उद्देश्य सामाजिक संप्रेषण होला एह मे कवनो मतभेद के गुंजाइश नइखे। साँच पूछल जाव त साहित्य के रचना 'स्वान्तः सुखाय' खातिर ना 'स्वान्ततभः शान्तेय 'खातिर हो खे के चाही।हमनी के स्वीकार करे मे हिचक ना हो खे के चाही कि आज भी भोजपुरी साहित्य के अधिकांश रचना 'स्वान्तःसुखाय 'पर केन्द्रित रह जा रहल बा।पाठक से ना जुड़े के एगो इहो बरियार कारण बा।

साहित्य के सब दिन से परिवर्तनकारी भूमिका रहल बा आ एही से साहित्य प्रगतिशील होला जे लोक जुड़ाव के कारण बनेला।ऐकरा खातिर हमरा समझ से साहित्य के संकीर्णता के तंग गली से बाहर आ के व्यापक मानस के चित के अनुरूप रचना परोसे के होई।डीजीटल युग मे प्रकाशन तनिक गति जरूर पकड़ले बा परंतु बिक्री के स्थिति मे सुधार नइखे पावल जात।साहित्य के स्तरीय सृजन के बढ़ावा देल आज आपन समाज के काम बा। तुलसी, कबीर के साहित्य के भाषा कवनो अनुसूची मे शामिल ना रहे पर ओकर एक – एक पंक्ति/दोहा समाज/लोक के देलस उहे आज ओकरा स्थापित होखे अउर प्रतिष्ठा के कारण बा। माई भाषा के बढ़ंती खातिर एकरा के आज मूल मंत्र बनावे के पड़ी।डा. रामजन्म मिश्र भोजपुरी भाषा के मान्यता के आंदोलन से जुड़ल संस्थानन

से भी बार–बार अनुरोध करत रहल बाड़े कि साहित्य के समृद्ध बनावे खातिर स्तरीय साहित्य के सृजन करत रहल जाय उहे माई भाषा के प्रतिष्ठित करे में काम आई।

युरोप मे श्रेष्ठ, लोकप्रिय अउर अवांछित साहित्य के बीच विभाजित रेखा खींचल बा।जनमानस भी ओकरा के समझेला पर भारत में आजतक हिन्दी मे भी एकर अभाव बा त भोजपुरी के बात एह विषय पर कइसे कइल जा सकेला।पर ई सोलह आना साँच बा कि क्लासिकल के आगे चलताऊ या समकालीन महत्वपूर्ण लेखन तरजीह ना पावे।स्तरीय साहित्य से प्रकाशक भी आजो के स्थिति में जुड़े से परहेज ना करे।वही स्तरीयता के असर ह कि तुलसी,कबीर, दिनकर, बच्चन, शेक्सपियर, मिल्टन, होमर अपान आपन क्षेत्र में मील के पत्थर बन के साहित्य पथ में आलोकित हो रहल बाड़न।एकरो के नइखे भूलाये के।इहो स्वीकार करे में तनिको हिचके के ना चाहीं कि एक तरफ अशलीलता के लेके बवाल मचल बा उहे दुसरा तरफ अंदरे अंदर कुंठित अउर यौन असंतुष्टि के वर्जना के शिकार भी बा आदमी।ई दृष्टि गाँधी के सोच के निकट बा। गाँधी जी अशलीलता के कानुनी सेंसर के खिलाफ रहन। उनकर कहनाम रहे कि समाज अपने अशलील अउर सुपाच्य साहित्य में फरक करे के तमीज राखेला।अगर नइखे त ई वृत्ति विकसित होखे के चाहीं।हलाकि गांधी जी के ई विचार अस्सी साल पुरान ह पर हमरा नजर मे आजो एकर प्रासंगिकता कम नइखे।ओकरे नतीजा बा कि आज माई भाषा में एह काम के अंजाम दे रहल बा आखर,पूरवा, रंगश्री जइसन संस्थानन के नाम लिहल जा सकेला अउर आगे ओकर असर साहित्य अउर समाज पर भी नजर आई।

आज भोजपुरिया समाज कवनो क्षेत्र में जब पीछे नइखे त भोजपुरी साहित्य के अपनावे अउर बढ़ावा देवे में काहे पीछा रही।जब ई बात समाज में आ जाई त प्रकाशक अउर बाजार भोजपुरी साहित्य के मिल जाई।साहित्यकार के भी बाध्यता होई कि जन भावना के कद्र करत स्तरीय साहित्य समाज के सोझा रखस। जेकर नतीजा माई भाषा के समृद्धि के रूप मे आई।एही से चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह कह गइल बानीं कि

''गोर ना शरीर रही, खेत बाग नाहिं रही
भोजपुरी खातिर करब रही ऊ कहानी मे।''

❑❑

❍राँची, झारखंड

महिमा छठी माई के

आशीष त्रिपाठी 'रुद्रांश'

दउरा माथ लिए
तिवई साथ लिए
चले छठी माई के धाम
उहवे गंगा के घाट ।।1।

बाटे महिमा अपार
माई के पूजे संसार
चार दिन के अनुष्ठान
करे निर्जल अनाहार ।।2।।

कलसुप लेई खड़ा बारी तिवइया नु हो
उगऽ सुरुज महाराज
ठेकुआ, फल हजार, मुरई, ऊँखी, अनार
कहस उगऽ ए सुरुजमल,
लेलऽ अरघ हमार ।।3।।

इ हमनी के ह संस्कृति,
इ भोजपुरियन के पहचान
माई के महिमा अपार
हमार माई रहे निराहार।।4।।

❑❑

❍ छपरा, सारण बिहार–841422

कहानी का सुनायीं

मनकामना शुक्ल 'पथिक'

गांव के परिवेश के कहानी का सुनायीं
सभे बा मतलबी केकरा के समझायीं
घर के पड़ोसिया लगावे दरहीं कूड़ा
कहले पे हमके दिखावे लमहर हुरा
धमकी त देत बा कईसे समझायीं
गांव के परिवेश के.....।

संस्कार घर–घर के स्वाहा भइल जाला
ईर्ष्या के आग में सबे जरते देखाला
सुनि के अनसुनी करे माने नाहीं बतिया
अंखिया में धूल झोके संझिये के रतिया
अइसने मतलबियन के कईसे समझायीं
गांव के परिवेश के.....।

ऐश आ फिजूल में करेला सभे खरचा
मुहवा से कब्भो नाहीं धरम के चरचा
मतलब परेला त सब घरे–घरे जाला
कमवा निकलते उ आंखी ना देखाला
सबके देखाला हरदम अपने भलाई
गांव के परिवेश के.....।

बांधेला सब गांव के गली में गोरू बरधा
खोलि के बहावे सब खोरी–खोरी नरदा
गलियन में कब्जा सगरौ कहां ले रेंगायी
सब चाहत बाटे अपने दरद के दवाई
अब चईत के महीना कईसे बहरे सुतायी
गांव के परिवेश के.....!

❑❑

❍ सोनभद्र, उत्तर प्रदेश।

लोकतंत्र के बजार

निशा राय

लोकतंत्र के सजल बजार
चले के कीनल बेचल जाव
कतना केकर भाव ताव बा
दाम लगा कै देखल जाव

चले के कवनों सकुनी चाल
होखे दंगा अउर बवाल
पंचाली के लुग्गा लूटअ
चाहें नोंचअ बाल के खाल

सिंहासन पर बइठे खातिर
कवनों पासा फेकल जाव
कतना केकर....।

दीठ गड़ा के सब बइठल बा
कवना करवट बइठी उँट
टाँग खिचाई होता खूबे
बोलल जाता साँच आ झूठ

देश जरे तअ जरत रहो जी
आपन रोटी सेकल जाव..
कतना केकर...

मंदिल महजिद जतना लड़िहें
ओतने संसद बनी महान
घर के जेतने टुकड़ा होई
ओतने एकर चली दोकान

टिकट कटा के दिल्ली चहुँपअ
चलि के माथा टेकल जाव
कतना केकर भाव ताव बा
दाम लगा कै देखल जाव..

❑❑

❍ कुशीनगर, उत्तर प्रदेश।

अरे, हो प्रिया

(1)

मेटिल्डा[1] : नाँव एगो पौधा चाहें एगो चट्टान चाहे एगो दारू के,
ओह सगरो सामानन के, जवन धरती पर जनम लेली आ होला अंत
ऊ शब्द जवना के विकास में होला जनम, बिहान के
जवना के पूरा रूप में फुटेगा नेमुआ के अँजोर।

काठ के बनल पोत ओह नाँव के सहारे होले पार,
आ आगि जस नीला समुन्दर के लहर घेर लेला ओहके :
एहके आखर ओह नदी के पानी ह
जवन बरसेला हमरा सूखल करेजा से।

ऐ ! नाँव जवन रहेला उघार उलझल लत्तर में
एगो छुपल सुरंग में खुलेवाला दरवाजा जइसन
विश्व के सुगंध काओर !

गरम मुँह से करऽ हमरा पर आक्रमण : करऽ हमरा से सवाल,
राति में अपना आँखि से, जदि चाहऽ तऽ–
पोत जइसन चले द नाँव के सहारे; दऽ हमरा के ओहिजा विश्राम।

❑❑

(2)

प्रेम केतना लमहर रास्ता ह चुम्मा ले पहुँचे खातिर
गति में बा– केतना अनेकलपन, तहरा साथे आवे खातिर !
बरखा के बूनी के साथे लुढ़कत, हमनी का अकेले पूरा करेनी जा रास्ता।
टालटाल[2] में ना त भिनुसार होला आ ना बसंत आवेला।

ए हो प्रिया ! बाकिर हम आ तूँ, हमनी के बानी जा साथे
अपना कपड़ा–लत्ता से ले के अपना सोर ले :
रहेनी जा लगहीं नदी में, पहाड़ में, पतझड़ में
जबले कि हमनी के ना होनी जा साथे– खाली तूँ आ हम।

ओह प्रयास के बारे में सोचल, जब धार बहा ले जाला कइगो पत्थर,
ओरोवा के पानी के सोता में;
ई सोचीह कि भौगोलिक अंतर में बँटल बानी जा तूँ आ हम,

हमनी के एक–दोसरा के खाली करे के रहे प्रेम :
अलग–अलग मरद चाहें मेहरारू आ कइगो दूविधा के साथे,
इहे ह धरती जहवाँ अपना प्रेम के फूल पल्लवित होला आ फुलाला!

❑❑

श्री विनीत मोहन औदिच्य जी पाब्लो नेरूदा के किताब 'हंड्रेड सोनेट्स' के हिंदी में 'ओ प्रिया' नाँव से अनुवाद कइले बानी। हमरा व्यक्तिगत रूप से ऊ कितबवा एतना नीक लागल कि मन कइलस कि एह विधा के भोजपुरियो में लेआवल जाव। एही उद्देश्य से 'अरे, हो प्रिया' नाँव से एहीजा प्रस्तुत करत बानी। नीक लागे त आशीष देब सभे।

– केशव मोहन पाण्डेय

हिंदी अनुवादक
विनीत मोहन औदिच्य

1. मेटिल्डा– कवि पाब्लो नेरुदा के प्रेयसी मेटिल्डा उरूशिया जे बाद में उनकर तीसरकी पत्नी बनली

2.टालटाल – उत्तर–मध्य चिली में अंतोफागस्ता शहर के बहरी एगो छोट बंदरगाही कस्बा

(3)

कड़ुआ प्रेम, काँटदार भावना के झाड़ी में
काँटन के राजमुकुट के एगो बनफशा फूल,
दुख के भाला, रोष के झूंड, के तरे अइल तूँ
जीते खातिर हमार आत्मा? कवन दुख के डगर ले के आइल?

काहें एतना जल्दीबादी से ढार दिहलू तूँ मीठ आग,
हमरा जिनगी के शांत पतई पर?
के देखावल तहके डगर? कवन फूल
कवन चट्टान, कवन धुंध देखवलस हमरा रहे के ठाँव?

चूंकि धरती हिलल, हँ हिलल ओह रात के;
तब बिहान भरि दिहलस सगरो बरतन के अपना मदिरा से;
देव सूरुज घोषित कइले अपना के;

जबकि हमरा हियरा में, एगो हिंसक प्रेम लगावते रहि गइल
चक्कर चारों ओर–अपना काँट आ कृपाण से हमरा के भेदला ले
कअसनु एगो सूखल डगर हमरा हियरा से हो के।

❑❑

(4)

तूँ इयाद करबू ऊ उछलत झरना
जहवाँ से उठल आ काँपल मीठका महक,
कबो कबो एगो चिरई, छन आ मद्धिम चाल के
ओहार पहिनले अपना पाँखि पर।

तूँ इयाद करबू धरती से मिलल उपहार
ना मेटाए वाली महक, सुनहरी माटी
झाड़ी में जंगली बीआ आ पसरत सोर
जादू वाला काँट जइसन चंद्रहास।

तूँ इयाद करबू ऊ फूल के गुच्छा जवन उठवले रहलू तूँ
परछाँई आ गुमसुमाइल पानी
फूल कु गुच्छा जस झाग से ढकाइल पथर।

ऊ बेरा रहे 'कबो ना' जइसन आ 'हमेशा लखाँ
हमनी के जानी जा ओहिजा, जहवाँ ना रहेला केहू पेड़ा जोहत;
हमनी के पावेनी जा पेड़ा जोहत सबकुछ।

❑❑

❍ **अनुवादक : केशव मोहन पाण्डेय**

एह अंक के चित्रकार

वंदना दुबे

●●

वर्तमान पता : बी – 408 दिल्ली 99 सोसाइटी, सिटी ऑफ गार्डन, लोनी रोड, भोपुरा,गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश –201005

स्थाई पता : गाँव + पोस्ट खालीसपुर, जिला गाजीपुर ,उत्तर प्रदेश – 233001

स्टूडियो के पता : ललित कला अकादमी रीजनल सेंटर गढी ईस्ट आफ कैलाश, लाजपत नगर, नई दिल्ली, 110065

अवार्ड : जूनियर फैलोशिप संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार – 2012–13

सीनियर फैलोशिप संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार – 2018–19

राष्ट्रीय विशिष्ट सेवा सम्मान 2019

●●

परदेसी लाला

दिलीप पैनाली

ए बबुआ तोहरे लाला का गइला देखऽ ना पनरे बरिस ले हो गइल। कोशिलवा चार बरिस के रहे जब ऊ गइल रहलें।ना कवनो चिट्ठी ना कवनो खबर, बाल बच्चा जिअऽता की मर गइल एकरो कवनो सुध ना!अइसन कठकरेजी हम नइखी देखले ।ढ़ाका का सम्पत्ति से हमनी का कवनो लेना देना नइखे। तहरा बाबा आ बाबू का मरले के बाद ओह धन के मन चाहतो नइखे रह गइल। तहरा लाला के लाख मनो कइला का बादो ऊ ना मनलें आ ढ़ाका चल गइलें। का जाने कवने हाल में बारन?

''ए माई घबरा जनि कोशिलवा आ सुशीलवा के बेरा हम पार लगाइबि यओकनी के बिआह हम करबि ,घर के इज्जत हऽ तऽ छोड़ ना नू दिआई।ओहु में ना बाबू बारन ना माई।

'' रमेसर कहलें।

तूँ त ठीके कहत बारऽ बबुआ आ हमरा तहरा पर भरोसो बा।लेकिन तहरा पढाई आ घर खर्चा कइसे चली एकर चिंता हमरा के खइले जाता।तूँ तऽ जानते बारऽ कुछ खेत तहरा आजी का काम में लोटन काका का लगे बंधक धरा गइल तऽ कुछ खेत तहरा पढाई में–अपना माई के बात पूरा होखे से पहिलहीं रमेश्वर लगलें कहे ''देख माई जतना खेत बंधक धराता धराए दे ।हम सारा खेत पढाई पूरा होखते छोड़ा लेइबि ''।

पढ़ाई खतम भइला का बाद रमेसर के नोकरी लाग गइल।जब उनका पल में कुछ पइसा हो गइल त बहिन लोगिन के बिअहे का फेर में लाग गइलें।भगवान का किरपा से एके लगन में कोसिला आ सोसिला के बिआह सम्पन्न भइल।एका एकी बोझा हलुक होखे लागल। एक बरिस बाद रमेसरो के एगो सुसिल लइकी से बिआह हो गइल। बेटिहा बहुते समप. न्न रहे एह से दानो दहेज ढ़ेरे दिहले रहे। चारो ओर खुशहाली, सब लोग परसन। रमेसर के माईयो सुसिल पतोह पा बहुत खुश रहली।

कुछ दिन बितल होई कि एक दिन रमेसर के लाला रामजस दूगो लइकिन का संगे गांवे पहुँचलें। सब लोग जेकरा के मरल ओराइल समझत रहे ऊ स क्षात हाजिर रहस ! उनके देख सारा लोग चिहा गइल। खेंधरू काका लगलें पूछे ''अतना दिन कहाँ रहलऽ हऽ भाई?'' उहे काहे जे आवे से इहे प्रश्न करे? ऊ बेचारू जबाब देत देत हरान। जे आवे ओकरे से अतना दिन गायब रहला के कहानी सुनावस ''बंग्लादेश में रहनी हऽ भाई। ओजींगे बिआह शादी कइके बस गइल रहनी हऽ। लेकिन कुछ अइसन घटना घटित हो गइल जवने कारण फेरु गाँवे लउटे के पड़ल हऽ।हिंदू मुस्लिम के दंगा एजा आवे पर मजबूर कर दिहलसऽ।उनकर कहानी सुन रमेसर के माई कहली ''कवनो बात ना, आ गइनी त नीके कइनी। अब रउरा कलकत्ता चल जाई ओजा आपन बबुआ बारन कहीं ना कहीं काम लगवा दीही।एजा रहिये के रउरा का करबि।खेती गिर हस्ती त जइसे चलत बा अउसे चलते रही। रमेसर के माई मने मन सोचत रहली कि दूगो बोझा त जइसे तइसे उतारल गइल हऽ ताले दू गो आउर लदा गइल।ई भगवानो गजबे बारन।

लेकिन रामजस रहस अटूट निकम्मा आ लालची। ऊ मेहनत से कोसो दूर भागस,गांव के लूहेरवन का संगे एगो मंडली बना लेलें।सांझ खान भट्ठी में जाए लगलें ।उनका अइला के खबर सुन रमेसरो भेंट करे अइलें। रामजस के रंग ढंग देख उनका बुझा गइल कि ई ढाका में जवन पुर खा के संपत्ति रहल ह ओकर सत्यानाश कइए दिहलें हेईहें। अब ई एजवो के संपत्ति बिलवइ. हें।आ अंत में उहे भइल।कुछे दिन में ऊ आपन रंग दिखा दिहलें आ गाँवे के बरियार लठीइत का हाथे कुछ जमीन बेंच दिहलें।

झगड़ा के बीया रोपा गइल ।दीवानी मुकदमा चले लागल।दिने दिने रामजस बिगड़त चल गइलें।ऊ अपना हिस्सा का जमीन पर अनाका का घर से पइसा लेवे लगलें।रमेसर बेचारू दिवानी केस में पेड़ाए लगलें। अनाका के घर रोज एक दू किता झूठा मुकदमा रमेश्वर पर रामजस से करवावे लागल। रमेश्वर कलकत्ता आ गांवे का बीच दउर लगावे लगलें। एही भाग दउर में एक दिन रमेसर के मिरतू हो गइल।

अब ई सारा जिम्मेदारी उनका लइका सुरेश का कान्ह पर आ गइल।बेचारू सुरेश पर त जइसे मुसिबत के पहाड़े टुट गइल। लड़त जुझत

सुरेश परिवार के गाड़ी आगे बढावे लगलें।ई देख रामजस से रहल ना गइल आ अपना बेटिअन से सुरेश पर रेप केश करवा दिहलें।
ओने अनको के घर रामजस से परेशान रहे ।इनका से जान छोड़ावे के उपाय सोचे लागल लोग। अनाका के घर महाफेरल रहे। एह से ऊ लोग रामजस के सुतले मे काम तमाम कइके हत्या के आरोप सुरेश पर लगावे खातिर लाश के सुरेश का दुआरी फेकवावे के पुरजोर कोशिश कइल ।लेकिन ऊ लोग सुरेश का सतर्क रहला का कारण सफल ना हो पावल।ऊ लोग सफलता ना मिलला का कारण लाश के सुरेश का घ ार का लगही एगो परती मे फेंक के भाग गइल ।जब थाना का पता चलल त लाश के उठा ले गइल आ ओनही सरकारी अंत्येष्टि जोजना में जरा दिहल ।

बेचारू सुरेश जइसे तइसे झंझट से निकल विदेश जाए का तइयारी में लाग गइलें। ओने दिवानी चलते रहे ।कुछ दिन बाद सुरेश के भाई लोग तारीख पर गइल छोड़ दिहलस।रामजस त अपना करनी के फल पइबे कइलें।अनको का परिवार के हालत खराब हो गइल। लाखन खरच कइला का बादो जमीन के ममिला ना फरिआइल।लाठी सरबे–सरबा ना होला बिछवना पर कोंहरत अनाका का जब बुझाइल तब ले बहुत देर हो चुकल रहे। बेटन का हाथे रोज पीटात पीटात एक दिन दुनिया छोड़ के चल गइलें।जवना जमीन लड़ल लोग ऊ कई जना के खा गइल।
ठीके कहल बा माटी मानुस के खाला मानुस माटी के ना खाला। ❑❑

❍ असम

गीत

राजेश बादल

चला देख आई
चला देख आई जिला चंदौली हो
चला देख आई.....
आधा पहाड़ अउरी आधा पठार
धान के कटोरा जे के कहाय
चला देख आई....
चकिया, चंदौली बबुरी बजार
चोचकपुर चहनियां बलुआ घाट
चला देख आई.....
जिलेबिया मोड़ जमसोती चुआड़
पंडी केल्हडिया औरवातांड
चला देख आई.....
नौगढ़ विजयगढ़ तिलस्मी किला
चुनारगढ़ से उ जाके मिला
चला देख आई.....

राजदरी देवदरी जखनिया दरी
बड़ा नीक लागे जब झरना गिरे
चला देख आई.....
मुसखाड़ मटिहनी चनप्रभा बांध
लतीफ शाह छलका हरिया बांध
चला देख आई...
कर्मनाशा सोन चंद्रप्रभा नदी
जहवां से बालू मोरंग लदी
चला देख आई.....
किनाराम बाबा जागेश्वरनाथ
नीक बा कोयलरवा बाबा के धाम
चला देख आई....
पड़ाव चंधासी मुगलसराय
रामनगर किला अद्भुत बाय
चला देख आई.....

❑❑

❍ **चकिया, चंदौली ,उ0 प्र0**

मोमोटारो- जापानी लोककथा

शशि रंजन मिश्र

(जापान के पुरान लोककथा जवना के पहिला प्रकाशन 1912 में भइल रहे ओकर ई भोजपुरी भावानुवाद ह)

बहुत पुरनका जमाना के बात ह। जापान के एगो गांव में एगो बूढ़ आपन बूढ़ी साथे रहत रहे। उ लोग के कवनों लइका–फइका ना रहे। रोटी खातिर बुढ़ऊ कबो घास काट के बेचस त कबो लकड़ी काट के। एहि तरह उ दूनों जाना के दिन गुजरत रहे। एकदिन बुढ़ऊ घास काटे खातिर पहाड़ पर गइलन आ बूढ़ी कपडा धोवे नदी पर। जब उ कपड़ा धोवत रही त देखली कि धारा संगे एगो बक्सा बहल आवता। उ ओह बक्सा के बांस के लग्गी से खिंचलि। बक्सा खोललली त एगो बड़हन आड़ू के फल मिलल। उ घरे लवट के आड़ू के फल आपन बुढ़ऊ के देली।

जब उ आड़ू के दू भाग में कटलन त बीया के जगह एगो सुन्नर मुन्नर लईका निकलल। सुन्नर मुन्नर लइका के देख उ लोग लोभा गइल आ ओकरा के पाले पोसे के सोचलस। उ लइका के नाम रखाइल –मोमोटारो, जवना के जापानी भाषा में मतलब होला आड़ू के छोट फल। दूनों कोई के लाड़ प्यार में मोमोटारो बढ़े लगले। समय बीतल। दूनों परानी बूढ़ा गइले आ मोमोटारो तगड़ा जवान हो गइल रहले।

मोमोटारो अपना हमउमीर लइकन में सबसे ताकतवर रहे। एतना जोशीला जवान कि एके सांस में नदी एह पार से ओह पार हो जाए। ओही नदी में दूर एगो टापू रहे जवना पर शैतान लोग रहत रहे आ ओकनी के राजा रहे 'अकनडोजी'। ओकरा लगे बेशुमार धन दौलत रहे। एक दिन मोमोटारो अपना माई बाबुजी से कहलस कि हम अकनडोजी के मार के ओकर सब दौलत ले आइब। हमरा के जाए के आज्ञा दे द। उ लोग मोमोटारो के ताकत जानत रहे त जाए के कह देल। बूढ़ी ओकर रास्ता खातिर कुछ पीठा (डम्पलिंग) बांध देली। उ एगो झोरी में पीठा रख लेलस आ जतरा खातिर आउरी तैयारी कर के चल पड़ल। रास्ता में एगो कुक्कुर मिलल। उ भुखाइल रहे त मोमोटारो से कहलस–

मोमोटारो हम बानी भुखल
अन्न पानी बिना देह बा सुखल
एगो पीठा हमरा के दे द
बदले में हमार सेवा ले ल

मोमोटारो ओह कुक्कुरा के एगो पीठा दे देले। पीठा खाके कुक्कुरा उनकरा साथे चल पड़ल। आगे एगो बानर मिलल। उहो भुखाइल रहे त मोमोटारो से पीठा मंगलस–

मोमोटारो हम बानी भुखल
अन्न पानी बिना देह बा सुखल
एगो पीठा हमरा के दे द
बदले में हमार सेवा ले ल

मोमोटारो ओकरो के एगो पीठा देले आ उहो खइला के बाद उनका साथे चल पड़ल। उ लोग आगे बढ़ल त एगो तीतर मिलल। तीतरो एगो पीठा मंगलस–

मोमोटारो हम बानी भुखल
अन्न पानी बिना देह बा सुखल
एगो पीठा हमरा के दे द
बदले में हमार सेवा ले ल

उहो पीठा खा के मोमोटारो संगे चल पड़ल। जल्दिये उ लोग शैतानन के टापू पर पहुँच गइल। मोमोटारो लात मार के शैतान के किला के फाटक तूड़ देले। उनका पाछे पाछे तीनों जानवर लोग किला के भीतर पहुँचल। उ लोग ओहिजा शैतान सब से लड़े लागल। मोमोटारो शैतान लोग के पटकस त कुक्कुरा टांग धरे। बनरा कान धरे आ तीतर चोंच मार के आँख फोड़े। उ लोग सब शैतान के मार के अकनडोजी लगे पहुँचल। अकनडोजी लोहा के फरसा चलवले बाकि मोमोटारो अपना के बचा लेले। उनका कुछो ना भइल। उ अकनडोजी के पकड़ के रस्सी से बांध देले।

अकनडोजी लड़ाई में हार मान लेले रहले। उ आपन सब धन दौलत मोमोटारो के दे देले। मोमोटारो सब धन दौलत समेत के आपन तीनों साथी जोरे लवट गइले।

बूढ़ा बूढ़ी लोग खूब खुश भइल। उ लोग पूरा गांव के भोज करवावल आ ओहिजा मोमोटारो के विजय के एक से बढ़के एक किस्सा सुनावल। मोमोटारो अब गांव के धनी मानी बन गइले आ खूब आदर पावे लगले।

❍ आरा, बिहार

कौशल मुहब्बतपुरी

गजल

जिनगी न ई पतिआत बा,केकरा से हम कहीं।
राहता लूटत सौगात बा,केकरा से हम कहीं।।

अंजोर के सहोर अब कइसे के हम करीं।
घुप्प अन्हरिया रात बा,केकरा से हम कहीं।।

जीतब हमहूं इ सोच के दाँव हम रखनीं।
उल्टा पांसा के काँत बा,केकरा से हम कहीं।।

चंदा के छूवे खाति ऊंच अकास ले उड़ीं।
डोर कटल पतंग पतात बा, केकरा से हम कहीं।।

छुप–छुप के हमरा पीछे से देखल करेलन ऊ।
साया तक उनकर घात बा,केकरा से हम कहीं।।

खेती चरल 'कौशल' के कुटिल–कपट कबहुँ।
तबहुओं न ऊ अघात बा, केकरा से हम कहीं।

बलिया, उ0 प्र0

अशोक कुमार तिवारी

गजल

बात जब बेबात के तब बात का?
कटल जड़ तऽ भला बांची पात का?

ऊ मोटाइल बा रहस्ये ई अभी,
का पता ऊ रहे छिपके खात का?

छली कपटी जब होई दुश्मन होई,
मीत ऊ कइसे होई? हित–नात का?

कथ्थ आ करनी में जेकरा भेद बा,
ठीक केवन वंश के भा जात का?

झूठ के महिमा रही दुइये घरी,
एह से बेसी हो सकी औकात का?

बलिया, उ0 प्र0

करियवा कोट

कचहरी में वोकील मिलेलन
टरेन में टी टी चलेलन
बरहों महीना कोट काहें पहिरेलन ?
अगर नइखी जानत राज
त जान जाईं आज।
कोट पहिरला से
खलित्तन के संख्या हो जाले जियादा
राउर सुरक्षा अउर संरक्षा के पक्का वादा।

जे केहु थाकल–हारल, मजबूरी के मारल
धाकड़ भा बेचारा
इनका भीरी आ जाला
मुँह मांगल रकम थमा जाला
करियवा कोट लेखा समन्दर में
सभे ... समा जाला।

❑❑

मूल रचना– काली कोट
मूल रचनाकार– मोहन द्विवेदी
भोजपुरी भावानुवाद– जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

बांड त बांड तीन हाथ क पगहो जाई

डॉ एम डी सिंह

गनपत सहाय क लइका मनसुख लाल छोटहने प से बहुत पढ़ाकू रहल। जब सभ लइका स्कूले से लउट के खरिहाने भागैं कबड्डी, बरगत्ता , गुल्ली–डंडा खेले तब मनसुख मुंशी जी का घरे चल जात रहल अलजबरा पढ़े । गांव भर में हल्ला रहल कि गनपत पेसकारै रहि गइलें मनसुखा त मुनसिफ बनी के रही ।

आजु–काल्हु गांव भर में चार लोगन क चरचा कहूं न कहूं रोजिन्ना होखेला। ओहमें सबसे उप्पर हईं कहनी काकी। आजु ऊ कहवां कउन कहनी मरले बानी एही बखान में खलिहर मउगिन क पुरहर दीन नीमने ओरा जाला। ओइसे गांव घर क झगड़ा कहनी काकी के रहले उनका कहनी– कहावत मा अझुरा के ओरा जाला ।अभ केहू के नीक लगै चाहे बाउर हल–भल निमनै होला, से उनकर मान सबही करेऽला।

दूसर हउवैं खरचू सिंह। गांव जवार में उनका रोब क बाजा बाजे ला। उनका रहले गांव में केहू बहरा से आके केहू प रोब जमा ले ई त होइए ना सकत। गांव के मान–सम्मान खातिन केहू से टकरा जइहैं। मजाल का उनके रहले गांव का ओर केहू आंख उठा के ताक सके, एकदम सीना तान के बीच मा ठाढ़ हो जइहैं। बबुआन हउवैं बड़ खेतिहर हवैं, पढ़ला– लिखला के बाद नोकरी में जाए क नाम लिहलें त बाबा अड़ंगा लगा देहलन। 'हमार एक्कैगो पोता, उहो नोकरी करी ? इज्जत ,जायदाद, नोकर – चाकर का नइखे?' से ऊ गांवें में रहि गइलैं। बलाक, बीडिओ, तहसील, पुलुस, चउकी–थाना हर गांव क एगो दोसरका ठेकान होलन।उहवों खरचू सिंह क थोर–ढेर चली जाला। एही से परधानी जबले गांवें में आइल, बाबा–दादा के जमाना से उनहीं के घरे खूंटा गाड़ि के रहि गइल।मरदन क किछु दीन उनका ब खान मा बीत जाला। जे जब्बर होला सबका पेंच में आपन टांग ढीले से कहां रोक पावे। से अइसन मनई के कोट–कचहरी का फेर में पड़ल कउनो मुसकिल ना। से खरचुओ के कपारे मुकदमन क मउर लदलै रहेला। बाकिर ऊ गनपत सहाय के रहला निफिकिर रहे लं, आखिर कवना दीन खातिन बानैं ऊ? गांव क शान उनका शान में बनल रहेला।

तीसर हउवैं गनपत सहाय। जबले अदलती मा पेसकार का भईलैं, गांव कोट–कचहरी के आपन चट्टी–चउराहा बूझ लेहलस। गनपतो कब्बो गांव के नाम प पाछे ना भइलैं। जरि–मरि के जइसे बुझाइल गांव क आगि वकीलन के तापे ना दिहलन।

एह तरे घरे खातिन काकी, लड़े खातिन खरचू आ बहरा जरे खातिन गनपत। ई तीनो गांव क मान, शान आ जान कहालें त कउनो हइमस खाए वाली बात ना। गांव मस्त काहे ना रही ?

एही बीच दीन बीतले का संघहीं मनसुखो क नावं मूहें–मूहें उधियाए लागल। खेलन्तुआ, झगड़न्तुआ लइका बेचारा स मनसुख लाल नेखा बने बदे झपिलावल जाए लगलैं स। मनसुख बारह में जीला टाप कइलस त वकालत में बिसविदालय। ओह दीन गांव भर क मूहमागल मुराद पुरा गइल जेहि दिन ऊ जजी क इन्तिहान में भी अउवल आइल। गांव भर मिठाई बटलस, जइसे सभकर लइका जज हो गइल होखै।

मनसुख के गेना क माला से बोझ, कान्हे पर लाद, मय गांव से ले के चट्टी चउराहा तक घुमलैं मनई। कनिया स खिड़की–झरोखा से झांक–झांक चिहात रहलीं त रहगीर जहाँ रहलन ओहीं ठाढ़ हो के।

अतवार के दिन खरिहान में गांव आ जर–जवार क मरद–मेहरारू, लइका–सयान मनसुख क बखान करें खातिन जुमलें। बलॉक परमुख राम अवतार सिंह, वीडियो रोशन अली आ पांच–छव गो परधान, कहनी काकी, गनपत सहाय अउर खरचू सिंह, विधायक सरीखन महतो का सदारत में तकथन से बनल ऊंच आसन प जूमलैं त बाकी लोग नीचे आगा कुरसी– दरी प बइठलैं ।मनसुख लाल,गनपत सहाय अउर ओकरा माई चंपा के सभ कोई माला पहिना के तीनों क खूब बखान कइलस ।

आखिर में सरीखन महतो बोले खातिन उठलन। बोलत–बोलत बहक गइलैं। कहत का बानैं 'गांव–जवार क लइका जज हो गइल बा, अभ केहू के डेराए–ओराए क जरूरत ना बा, मडरो करि के आ जाई त जमानत चुटकी में मिलि जाई।'ऊहां जुटल सभकर मुह भक से रहि गइल।महतो के भी लागि गइल किछु उल्टा बोला गइल बा, जबले संभलतैं काकी फनफनाइल आई त जाति बा 'हटु अवर्रा, तोहनिन के ना सुधरबा सभ।'

विधायक के हाथे से मइकिया छोरि के मय आलम का ओर मूह करि के धिरवत का बाड़ी 'कुल्ही जाने गंठिया ला लोग इनहन के चक्कर में पड़ला त ''बांड़ त बांड़ तीन हाथ क पगहो जाई ''। तूंहू ए गनपत ! अपना लवंडा के समुझा दीहा।'

सभ सन्न रहि गइल,महतो हउहा के काकी क गोड़ छुअलन, 'गलती हो गइल बूआ,एतना आलम देखि के जीभि बिछिला गइल। 'काकी उनही के गांव क बिटिया रहलिन, विधायक क बूआ लागत रहलीं, पता रहल बूआ केतना खरखर हीये।

काकी सभकरा प छा गइलिन ।

❑❑

❍गाजीपुर

बिछुडत रोमांच के जोहाई

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

अजुवो उहे दिन आवेला। हाँ, उहे तिथियो आवेले, उहे महीना, उहे मौसम। हमहूँ उहे बानी। देश उहे बा आ परिवेसवो उहे बा। सभे कुछ उहे बा, बाकिर उ नइखे होत जवन अपना भीतरि होत रहे–मन के मधुर कंपन। सिहरन के भान, जवन खून का बहाव के संगे अपनही जामत रहे। ओहके का कहीं–आनंद? हुलास? भा... । पता ना ई सबद नीमन होखी कि ना। सबद के समरथ के एगो सीमा होखेले। बाकिर ओकरा समरथ के सीमा के हम का दोस दीहीं। केहुओ के समरथ के सीमा के पहचानो के एगो तागत होखेले, सीमा होखेले। सीमा के सधला के काम हमेसा अझुरहट के घर, उलझावे वाला अउर खतरा से भरल होला। एही से एकरा के छोड़ीं। बाकिर एकरा से रउवा अइसन मति समुझीं कि हम खतरा अउर अझुरहट से डेराइले। ना, अइसन एकदमे नइखे। ई त डरपोकन के आदत हवे। रउवा ई मानेमकि कवनो मनई उहो नवहा अपना के कबों डरपोक सवीकारे ना करी। अउर हम मनई त हइये बानी ओपर से नवहो बानी। खैर!आजु उ नइखे, जवन हमरा चेतना में नवही कली लेखा खिलत रहे। तुरते के खिलल फूलन के मनहर गमक से सगरे सरीर सिहरा के रोंआ खाड़ हो जात रहे। ई रोमांच सरीर के सीमा के लांघत चारो ओरी पसर जात रहे– फेर लउकत रहे रो. मांचे–रोमांच। हाँ, आजु उहे नइखे। पाता नाही काह. –कइसे, हमार दुलरुआ रोमांच हमरा बिछड़ गइल बा? हमरा लागत बा,हमार कवनो बेसकीमती खजाना बिला गइल बा।

रउवा सोचेम अजबे मनई बा,नीमन बखेड़ा फइला रहल बा। अरे ! इहो कवनो बात भइल, एगो छोटी–चुकी रोमांच । अइसन कवन बड़ चीजु ह, जेकरा ला अतना हाय–तौबा। बाकिर नाही, भइया! अइसन मति सोचीं। ई रोमांच कवनो छोटी–चुकी चीजु नइखे। ढेर छोटी–चुकी नीमन चिजुइयनो खातिर अतना गहिराह चिंता करे क मुरुखई हम कबों ना करेम। ई रोमांच हमरा होखला आ ना होखला से जुड़ल बा। ई हमरा अस्मिता के सवाल ह,हमरी स्वतन्त्रता के सवाल ह। एही से हम एकरा अइसहीं नइखे छोड़ सकत। सहती सांती के सहत हल पर तोष नइखे करि सकत। हमरा तोष ना होखी, ई हमार मजबूरी बा। से सिकम भर माथा मारबे करेम।

ई साँच बा कि तब हमरा इतिहास ना मालूम रहे। तबो गाँधी के जानत रहनी, सुभाष के जानत रहनी। इहो जानत रहनी कि एगो बूढ़ मनई ठेहुना तक धोती, कान्ही पर चादर अउर हाथ में एगो लाठी लेके एह देस के जमीन पर चलत रहे आ ओकर मंतर रहे 'करो या मारो'।गाँधी 'करो भा मारो' के नाव ह, ई जानत रहनी। सुभाष का नाव के संगे जवने मनई के तसवीर आँखिन में जामत रहे ओकर चेहरा गोस्सा से टहक लाल आ ओकरा नस–नस में तेज तेज धउरत लोहू सोझा लउकत रहे। सुभाष उहे रहलें, जे कहले रहें–'आजादी के खातिर लोहू चाही।'लोहू के मतलब कीमत। आजादी के कीमत लोहू ह। बेगर कीमत चुकवले उ प्रिय से प्रिय चीजु के पावे ला बिसवास ना करत रहलें। बेगर कीमत चुकवले मिलल चीजु के सही त दूर गलतो कीमत मनई के मगज में सुरक्षित ना रहि पाई। कीमत देके चीजु के लीहला से ओकरा सही महातिम के पहिचान बनल रहेले। अउर ओह चीजु खातिर मनई हरमेसा सोचत आ जागत रहेला।से सुभाष के नाँव के अरथ जानत रहनी। हमरा मन में दूनो नाँवन के खातिर बहुते सनमान रहे। अजुवो बा। हमरा त अब इहों लागेला कि गाँधी अउर सुभाष के जाने खाति इतिहास जानल जरूरी नइखे। बाकि इतिहास के जाने खाति गाँधी अउर सुभाष के जानल जरूरी बा। 'सरफरोशी' के गीत गावे वाली नवही अतमा वाले भगत अउर आजाद के जानल इतिहास के जाने क सरत ह।

हम सोचिले कि आखिर बेगर इतिहास भूगोल के जनले ओह घरी आजादी दिवस जइसन सबदन में ऊ कवन तागत होत रहे जवन सगरे अबोध चेतना के झकझोर के हुलासित कर देत रहे आ हमनी के भितरी ऊ कवन तागत उमगत रहे जवन एह दिन के जोहे खातिर अकुलाइल आ आँखन से नीन के बिलवा देत रहे। उमंग अउर हुलास में दिन–रात के देहरी के मूठी में बन्न क लेत रहे। अउर ऊ दिन के अइला पर ठाकुर चिरइया के भोर के गीत गावे से पहिला हमनी के उठ के तइयार हो जात रहनी सन। हमनी के प्रभात फेरि निकसत रहे। हमनी के अपने हुलास

भरल कंठ से 'झण्डा ऊँचा' रहे के अवाज से गाँव के सगरी खोरियन के गूँजा देत रहनी सन। हमनी के लागत रहे कि अपना हाथ अउर अपना तागत से एह तिरंगा के ऊंच कइले राखेम स। ई लहरात रही अउर एकरा नीचे हमनी के रोमांचित होत रहेम स। बाकि आजु का हो गइल बा? अजुवो त हम उहे बानी। हमार देसो उहे ह। अजुवो ऊ आजादी दिवस के दिन आवेला। बाकिर आजु कहवाँ बा? हमार ऊ रोमांच कहवाँ बा? ऊ हमरा से कइसे बिछुड़ गइल? कुछो पता नइखे।

हमरा दुख बा। गम्हिराह कष्ट बा। अपना रो. मांच के बिछुड़ गइला के। हम सोचतानी बाकिर कतों हमरा आपन बेध्यानी नइखे लउकत। हम त अपना रोमांच के अपना चेतना के मूठी में कस के बन्हले रहनी। तबो ऊ हमरा बन्न मूठी से रेत लेखा अंगुरिन के छेद से अनासे, बेचहले का जाने कब झर गइल, त हम का करीं, हमार का दोस बा।

हम सोचतानी कि कतों एह रोमांच के बिला जाये में हमरे पढ़ल–लिखल भइला के त हाथ नइखे? बाकिर अइसनो नइखे। हम आपन लमहर सोभाग मा. निले कि हमरा समय में कानवेंट अउर मंटेसरी इसकुल के चलन हमरा इहाँ तक ना रहे। हम अपना बाबूजी के बाबूजी ना माने वाली संस्कृति के पढ़ाई से बाच गइल बानी, अजुवो बाचल बानी।हम कान्वेंटी लइकन लेखा अपना इया के पेवना साटल लुगा पहिरत देखि के उनुका के महरी बूझला के बुद्धि के भुलवना के सिकार नइखीं। फेर हम काहें ना ई मानी कि ई खतरा पढ़ला–लिखला से नइखे। फेरु ई खतरा कहवाँ से बा?

खैर अतना त हम मानीले कि जबले उ रहे पूरा ईमानदारी का संगे रहे। ओकर ईमानदार बोध रहे। अउर आजु नइखे, तबो ईमानदारी से नइखे।

बहुत झख मरला का बाद जवन किछु बूझले बानी ओहमें हमरा अइसन लागता कि अपना जमीन के विसंगतियन के पहिचाने हमरा रोमांच के बिलाये के कारण बा। अपना चेतना का विकास का संगे–संगे अपना जमीन के जवन पहिचान हमरा भितरी जामल अउर संगही रोमांच गंवे–गंवे बिलाये लागल। लइकइयाँ में हम पाँख लगा के उड़त रहनी। तब हम भूइयाँ गोड़ ना राखत रहनी। तब हमार गोड़ रहत रहे दादाजी के कान्ही पर,बाबूजी के करिहाँई पर अउर माई के पेट पर। आजु हमरा कान्ही पर हमार लइकवा चढ़ल बाटे। हमरा मन में अपना लइका खातिर अनघा प्यार बाटे बाकिर अनेसो बा कि कतों उ हमरा के प्यार के परिभाषा के बहरा न निकार देसु। काहें से कि हमनी के सरकार हमनी के समाज के नकारे वाली संस्कृति के तूफान में झोंके खाति तइयार बा।

तब हम आजादी जानत रहनी, ओकर अर्थ ना। आजु आजादी के अर्थ जानतानी बाकि आजादी ना। तब गाँधी के जानत रहनी उनुके कल्पना के ना। आजु उनुके आदर्श के जानतानी, उनुके कल्पना के जानतानी बाकिर जब खोजेनी त कवनो ना भेंटाले। हमरा के मालूम चलल कि गाँधी जब कहलें कि 'करो भा मरो', तब हजारों–लाखों लो कुछ करे लगलें। कुछ करे में न पाता कतने लो मरि गइलें। सुभाष कहलें कि 'हमरा के खून दिहीं, हम आजादी देम'। त न पाता कतने लो खून के पानी लेखा बहवा दिहल। खून बह गइल, बाकिर ऊ ना मिल पावल जवन मिले के चाहत रहे। सुभाष ना बचलें कि केहु उनुका कहलका के चुनौती देसु। हमनी के कुछ करत मरत आजाद भइनी स,बाकिर ओह पर उ लो काबिज हो गइल जेकर ना त करे से मतलब रहे, ना त मरे से। खैर, गाँधी ना बचलें कि केहु उनकरो से पूछस।

इतिहास कहता कि इहवाँ एगो मनई अइसन रहसु जे अन्हियार रात के गुलाब रहसु। एगो अइसनो रहसु जे परानों के बीपत में सोभिमान के बचावे के पहिल माँग करसु। हमनी के गरब होत रहे। बाकिर गुलाब अन्हियारे के गरहा में बिला गइल। सोभिमान के परान पी के पचा लिहलस।एक के माने वाला लो गुलाब के गंध बेंच के अन्हियार के जाल फइलावत रहे। दोसरका के वारिस लो सोभिमान के सउदा क के सरीर के जब्बर बनावत रहे। जेकर नायक 'नेता' रहलें ओकर बंसज लो अभिनेता बनि के खुस बा। ई कुल्हि ओह घरी कहाँ मालूम रहे।

तब हमरा कहवाँ मालूम रहे कि जवना झण्डा के ऊपर उठा के हमनी कवल खातानी स, ओकरा के कवनो लमहर हाथ वाला हमनी से छीन लिही अउर हमनी के कहियो ना पाएम कि झण्डा हमार बा। हाँ ! हमरा का मालूम रहे कि ऊ झंडाबरदार कहबो करी कि तू हमरा झण्डा के मनई रहै। बोलै रहबा कि ना? अगर हाँ त मनई बाड़ै आ ना त ना। भला का पता रहे कि मनई मनई होखलो से बंचित रहि जाई। हमरा तब कहवाँ मालूम रहे कि कवनो लइका के माई के

छाती से दूध नाही उतरत अउर ऊ अपना लइका आपन लोर पियावेले। लइका लोर पियेला अउर रोवेला। रोवत–रोवत ऊ लइका दवाई–बीरो करे जोग हो जाला। अउर फेर दवाई के ना मिलला पर अपना माई के चिंता बिलवा देला। हमरा कहवाँ मालूम रहे अपना गोदों के लइका के कवनो महतारी धरती माई के गोंदी में संउप के, कुआर के घामी में सोहनी क के लउटेले अउर खून के उलटी क के मरि जाले। इहो कहवाँ मालूम रहे कि कवनो गरीब–गुरबा आपन आँखि बनवावे खाति जाई त ओकर आँखे बेंच दी लो। कवनो गरीब मेहरारू आपन कान देखावे खाति अपना सुहाग के झूलनी बन्हकी राखि के कवनो बड़ अस्पताल के डागदर भीरी जाई त डागदर 'केयर टेकिंग' में ओकर इजते बन्हकी राख लीहें। हम कहवाँ जानत रहनी कि कोरट के देवार बहिर होलीं स,थाना के दुआरी आन्हर होला आ कानून के गोड़ कुष्ट रोग से गल गइल बा। अउर इहो कहवाँ जानत रहनी कि हमरा देस के 4–5 लो गूंग बाड़ें। उनुका लगे जुबान नइखे। उनुकर कवनो भाषा नइखे। उनुका कान सुने खाति, आँख देखे खाति आ मुँह बोले खाति नइखे। सिरफ ऊ केकरो खातिर बा। करे खातिर भा मरे खातिर। उ लो एह देस के माटी के मनई नइखे,कला भवन के देवार पर लटकत चित्र बाड़ें। उनुकर अथान देस के जमीन नइखे, भारत–भवन के देवार बाड़ी स। उनुका धूरा में सउनाइल गोड़ खाति दुआरी के केवाड़ नइखे खुलल, बाकिर उनुके धँसल चेहरा के चित्र खूँटी पर लटकल जरूर बा। हमरा साँचो एहमें से कुछो पता ना रहे।

हमरा ई ना मालूम रहे कि हमरहीं गाँव में, हमरहीं बहिन के ईस्कूल के कला के मस्टराइन लहँगा–चोली पहिरा के, ओठ पर गहिराह लिपिस्टिक पोत के, चेहरा के पाउडर से रँग के आजादी दिवस का दिने डिस्को करवा के ईस्कूल के विकास का प्रमाण पत्र सोझा रखिहें। हमरा नाही मालूम रहे कि हमरे बड़का भइया के लइका हमरे भउजाई के डांट के बोली– 'मम्मी शट–अप'। हम नाही जानत रहनी कि हमरे टी बी के मुँह दिल्ली से खुली अउर दिल्ली सगरे देस में फइल जाई। हम नाही जानत रहनी कि किसानन अउर आम मनई खाति एह तरे से मेहरारून के फोटू क परदरसनी ठेलल जाई। हमरा कहवाँ मालूम रहे कि उ लो 21वीं सदी में जाये के हड़बड़ी में दिल्ली के बनावे के फेरा में सगरे देस के तूर के रख दी लो। अगर अखंड भारत 21वीं सदी में न जा पाई त ओकर टुकड़ा हो जाई। बाकिर 21 वीं सदी में जाइल जरूरी बाटे। का जानत रहनी कि एह देस के निपढ़ जनता आम जान सकेले, बाकिर आम आदमी के ना जानेले। उ नइखे जानत कि कविता का ह, कहनी का ह। तबो हमनी के कवि, लेखक कविता में,कहनी में,सम्मेलन में आम आदमी पर खास बात करेली सन। का मालूम कि ओह लोगिन के आम आदमी से नाही बलुक ओकरे बातिन से काम बा। हमरा इहो ना मालूम रहे कि सुख्खू काका के लइका गाँव में भइस चराई, तबो गारी–डंडा खात रही आ सहर में आके रेकसा चलाई त उहवों पुलिस के डंडा खाई। खैर !

घबराईं मति ! उ लो 21वीं सदी में जा रहल बा, जाये दिहीं। उनुका 8–10 परसेंट आबादी के लेके चल जाये दिहीं। उनुका रउवा अपना संगे ना राख सकेनी। उ लो अजुवो हमनी के संगे नइखे। बाकिर तबो भारत एह सदी में रहबे करी। 90 भा 92 परसेंट भारत के रहनिहार जे आजु 20वीं सदियो में नइखे, उ लो उनुका संगे ना जाई। जाये दिही अङ्ग्रेजी में सपना देखे वालन के जाये दिहीं, कवनो चिंता नइखे। हमनी के धीरज राखतानी, हमनी के हिन्दी 21वीं सदी के भाषा ना बन पाई, मति बने। उ भाषा बनी निपढ़न के, पढ़ल–लिखल लोगिन के जिनके आबादी अङ्ग्रेजी पिछलगुवन से कई गुना ढेर बा। आजु कान्वेंट ईस्कूलन में दाखिला के खातिर लमहर लाइन देखि के दिल घबराता। बाकिर धीरज रा खीं। ई दाखिला लेवे वाला लो भरम में जियता, एह लोगिन में नोकरी पावे के भरम बा। बाकिर उहो टूटी। कान्वेंट नोकरी ना दिही, नोकरी दिही देस के अर्थ नीति। अउर जब ओह लोगिन के भरम टूटी त एहमें जरिको अनेसा नइखे कि उहो लो एह मरियल अर्थ नीति के कट्टर दुसमन बनि जाई।

❑❑

मूल रचना– बिछुड़े रोमांच का इंतजार
रचनाकार – डॉ उमेश प्रसाद सिंह
भोजपुरी भावानुवाद– जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

शब्द आ अर्थ के आपसी संबंध

हरेराम त्रिपाठी चेतन

जवना साधन से शब्द के अर्थ के बोध होला ओकरा के शब्द कहल जाला, आ शब्द–व्यापार के सहायता से अर्थ के सिद्धि होला। एही बात के लहजा बदलि के यदि कहल जाउ त कहल जा सकत बा कि जवन सुनाई परेला ऊ शब्द हऽ आ जवन समझ में आवेला ओकरा के अर्थ कहल जाला। आशय ई कि–

जो सुनि परै सो शब्द है,
समुझि परै सो अर्थ।

शब्द के मूल अर्थ होला 'ध्वनि'। एसे सुनाई परे वाला ध्वनि–समूह के शब्द कहल जाला। अर्थ के स्तर पऽ भाषा के सबसे छोट आ स्वतंत्र इकाई के शब्द कहल जाला। मतलब कि शब्दन के रचाव में ध्वनि के सँगे ओ शब्दन में अर्थ के उपस्थित रहल जरूरी होला। भाषा में तीन तरह के शब्द होलेसऽ –

(1) वाचक (2) लक्षक (3) व्यंजक

एही तीनों के आधार पऽ अर्थो तीनि प्रकार के होला – (1) वाच्यार्थ (2) लक्ष्यार्थ (3) व्यंग्यार्थ

इतिहास सांस्कृतिक एकतानता के पालन–पोसन करेला। ओ एकतानता के बुनावट में साहित्य रूपी सूता के बहुत बड़ी हिंसदारी होले। हर काल में प्रत्येक संस्कृति जवना–जवना भावनि के आ जवना–जवना अनुभूतिनि के अपना पचावे–रचावेले साहित्य, आ साहित्यकार ओकनिएँ में से कुछ के चुनि–बीछि के, कुछ अवरू अतीत से लेके शब्द, अर्थ के आधार पऽ कल्पना के सहारे साहित्य में–काव्य सजा देला। ई कुल्हिए सजावट शब्दार्थ के बल से संभव होला।

मानव–जीवन अइसन अभिन्न आ जरूरी विषय पऽ भारतीय वाङ्मय के प्राचीन आ नवीन दूनो तरह के मनीषी–भाषाशास्त्री लोग गहराई से विचार कइले बा लोग जवना से मानव–समाज के भाषाई जड़ता के जकड़न के अछोरे अन्हार दूर भइल बा। भाषा के सही–सही रचाव में शब्द आ अर्थ के पारस्परिक सम्बन्ध ा के पड़ताल अवरू वर्ण से शब्द, शब्द से ध्वनि आ ओह के अर्थ–रूप में बदलि जाये के यात्रा के महीन से महीन छानबीन भारतीय मनीषी लोग कइले बा। शब्दार्थ–विचार के ओ खोजबीन–शब्दार्थ के फटक–पँइचि के पुरूखा मनीषी लोग कतना तप से, समय आ श्रम लगा के मनुष्य के मस्तिष्क आ हृदय के धड़कन के अन्हार दूर कइले बा एकर अनुमानों कइल आजु मुश्किल बा।

शब्द आ अर्थ के ऊहापोह के सन्दर्भ में प्राचीन भारतीय भाषाशास्त्री आ आधुनिक भाषा–शास्त्री लोग प्रायः दूनो के सह–सम्बन्ध के विषय में एकमत बा। भारत के पुरनका भाषा विचारक मनीषी लोग शब्द आ अर्थ के अभिन्न सम्बन्ध मनले बा लोग। ओह लोग के विचार बा कि शब्द आ अर्थ एके आत्मा के दूगो भेद हउवे–

''एकस्यैचात्मनो भेदौ शब्दार्थावपृथक् स्थितौ।'' मतलब कि एके आत्मा के शब्द आ अर्थ दूइगो भेद हउवे। इहवाँ एक बात गौर करे लायक बा कि शब्द आ अर्थ के शरीर आ आत्मा नइखे कहल गइल बलुक अत्मा के ई दूगों रूप हऽ। एहीतरी, शब्द आ अर्थ के आपसी सम्बन्ध के अनेक–अनेक तरह से, कई–कई गो उदाहरन के माध्यम से निरूपित कइल गइल बा। भारतीय वे. दान्त दर्शन के कहनाम बा कि जइसे ज्ञान के क्षेत्र में साधक के आत्मा के आखिरी परिणति परमात्म प्राप्ति के रूप में होला, ओसही भाषा के क्षेत्र में शब्द के आखिरी परिणाम अर्थ के रूप में सामने आवेला। आने कि, अर्थ अपना रूप के शब्द के जरिए प्रकट करेला–

आत्म रूपं यथा ज्ञाने ज्ञेय रूपं च दृश्यते।
अर्थ रूपं तथा शब्दे स्वरूपं च प्रकाशते।।

वाक्पदीय, 1.50

अर्थ साफ बा कि शब्द अपना तात्विक रूप के अर्थ के द्वारा उपलब्ध करेला। शब्द के अभाव में अर्थ उजागर ना हो सकी आ बिना अर्थ के शब्द के का मोल रहि जाई? जीवन में सभ तरह के समझदारी खातिर, बोध–ज्ञान खातिर शब्द के नितान्त आवश्यकता बा। शब्द आ अर्थ में इतिहास के, संस्कृति के तथा मानव–जीवन के संभावना, उमेदि छिपल रहेला। सामाजिक सतह पऽ जीवन आ मूल्यन के बीच के संघर्ष के स्वर लिपि लोक जीवन से जुड़ाव के सूत्र अवरू वर्तमान में अतीत के बीज शब्द के अवचेतन में आपन अचरज में डालेवाली क्षमता लेके परल रहेला। एही बात के भारतीय शब्द–शास्त्र अपना लहजा में कहले बा–

न सोऽस्ति प्रत्ययो लोके यः शब्दानुगमादृते ।
अनुविध्दमिवे ज्ञानं सर्व शब्देन भासते ।।

आशय बा कि लोको व्यवहार में बिना शब्द–बोध के चलनसार संभव नइखे। शब्दे में अइसन कूबति बा कि भाषा के ओकरा लिखित साहित्य के समूचापन के समेटि–सँगोरिके, सहेजि–सँभारि के राखेला। अतने ना, जीवन के हर छोर–छिउरि पऽ खड़ा समस्या के, सवालन्हि के हल निकाले के तार्किक सुझाव आ संकेतो शब्द में रहेला। शब्द के अन्तःकरन के जमीन में संवेदना के संजीवनी आ न्याय के संक्षिप्त सूत्र रहेला। शब्द साहित्य के, भाषा के संस्कार देला। इहे सभ कारन बा कि शब्दार्थ के प्रसंग में भारतीय अवधारणा अर्थ के शब्द के फूल आ फल दूनो रूप में स्वीकार कइले बिया– 'अर्थ वाचः पुष्प फलमाह।।' निरूकृ–1.20

लोक–जीवन भाव के फूल चढ़ाके फल पावे के आसरा करेला। ओकरा प्रार्थना में–जाँचना में भाव भरल शब्द के अलावा अरू का होला? एसे, शब्द सोचि–सोचि के, गुनी–मथि के लिखे के चाहीं, लिखला के बादो सोंचे के चाहीं। सोंचि–सोंचि पढ़ला–पढत्रला के बाद सोंचल बहुत जरूरी मानल गइल बा। उपनिषद् के कहनाम तऽ ई बा कि–

'उतिष्ठत्, जाग्रत परान्निबोधत् ।।

उठऽ, जागऽ, बोध–ज्ञान प्राप्त करऽ। भाव अतने बा कि शब्दमय भाषा–साहित्य के रचना जइसे–तइसे ना होखे के चाहीं। शब्द क प्रयोग करे के पहिले जागल रहे के–जागरूक होके शब्दन के उपयोग–प्रयोग करके चाहीं। काहें कि शब्द अर्थ के रिस्ता–नाता नित्य आ शाश्वत मानल गइल बा। शब्द आ अर्थ के वर्ग–वृत्त बहतु बड़ होला। ओह में समय के दन पचल रहेला आ पूरा जुगो समाइल रहेला। शब्द में सूर्य के अँजोर के फयलाव रहेला तऽ ओ गरम–गरम किरिन से चउँधाइल ओस के बून्द के चमकत झलमलाहटो रहेला। शब्द आ अर्थ के सम्बन्ध खउलत अदहन आ निकसत भाप जइसन होला। मूर्त शब्द के भीतर छिपल अर्थ मूर्त चित्र हउवे जवन बहरी विकलते बहुत अधिक जगह घेरेला। दूनो के अलगावल–विलगावल मुश्किल बा–असंभव बा। एही से वाक्यदीपकार के सुनिर्णित कथन बा –

नित्याः शब्दार्थसंबंधाः समाम्नाता महर्षिभिः ।
सूत्राणां सानुतंत्राणां भाष्याणांच प्रणेत्रिभिः ।।
सिध्दे शब्दार्थसंबंधे लोकतोऽर्थ प्रयुक्ते शब्द प्रयोगे।
–वाक्पदीय – 1.23

नित्य पर्यायवाची सिध्द शब्दः ।
नित्योहि अर्थवता मथैरचि संबंधः ।।
– पतंजलि महाभाष्य, 1.5

शब्द आ अर्थ अपना अनन्य नित्य संबन्ध के डोरी में बन्हाइल रहिके जीवन के सूत्र देला, जीवन के मरम आ रहस्य के खोलेला। एक सँगे जुड़िए के शब्दार्थ के शब्दातीत के ओरि इशारा करेला। शब्द अपना संक्षेप में अर्थ के मुखरता आ विस्तार के पमेटले रहेला–ठीक ओसहीं जइसे माँ अपनर गर्भ में शिशु–भ्रूण के सावधानी से राखे आ पोसेले। एही तरी एकात्म रहि के–अपना नित्य संबन्ध के बल से भूतकाल आ वर्तमान काल के सइ–सइगो परतन के हजार–हजार जीवन के तहनि के आ भाव–अनुभूति के कई–कई गो तलहटिन के स्वर देला। शब्दार्थ एक सँगे–नित्य संबन्ध के बनाइए के जीवन–मन्थन के सार प्रस्तुत करेला। अर्थ–शब्द के हृदय में धड़कन बनि के ध ड़कत रहेला। मीमांसा दर्शन के मनीषी लोग भ शब्द आ अर्थ के नित्य संबन्ध मनले बा–

औत्पतिकस्तु शब्दस्थार्थेन संबंधस्तस्य
ज्ञानमुपदेशोऽव्यतिरेकश्चार्थेऽअनुपलब्धे
तत् प्रमाणं वादरायणस्थान पेक्षत्वात् – मीमांसा दर्शन, 1,1,5

शब्दार्थ से संबन्धित भारतीय चिन्तन के एगो बहुत बड़ विशेषता रहल बा कवनो प्रतिपाद्य विषय के स्थूल अंश क अलग कइके–फटकि के, ओकरा सूक्ष्म से सूक्ष्म अंश के सामने ले आवेके। विषय के सूक्ष्मता के दिशा में गतिशील होखे खातिर स्थूल के कर्तपूर्ण निराकरण बहुत जरूरी होला। एही विधि से भारतीय विचारक लोग कवनो विषय के तात्विक निष्कर्ष निकालि के लोक मानस अथवा लोक चेतना तक पहुँचावत रहल बा। भारतीय शब्द–विचारक मनीषी लोग 'शब्द के उत्पत्ति' के अनूठा आ मौलिक अनुभव प्रतिपादन कइले बा। शब्द क उत्पत्ति आत्मा क स्व–शक्ति से भइल। महर्षि पाणिनि के कथन बा–

आत्मबुध्या समेत्यार्थान मनोयुङ्ते विवक्षया ।
मनस्तु कायाग्निहन्ति स प्रेरयति मारूतम् ।।
मरूतस्तु चरन् मन्दं ततो जनयति स्वरम् ।

बुद्धि के द्वारा अर्थ के एकत्र कइलसि फेरू ओ अर्थ के व्यक्त करे खातिर आत्मा मन के नियोजित कइलसि। मन आपन असर कायाग्नि पऽ डललसि। एकरा बाद ओ कायाग्नि के मरूतरूपी प्राणशक्ति के प्रेरित कइलसि आ अन्ततः इहे

मरूतरूपी प्राणशक्ति के प्रेरित कइलसि आ अन्ततः इहे मरूत स्वर के रूप धारन कइलेलसि। कतना विलक्षण बा शब्द से अर्थ के प्रकट होखे वाला गति–क्रम! शब्द+अर्थ+स्वर के एह जटिल प्रक्रिया के देखत शब्दार्थ के स्थूल अंश से सूक्ष्म अंश तक के निर्णय में 'मुनिर्यस्तु मतोपि भिन्ना' होखल स्वाभाविक बा। के सिध्दान्त के खण्डन करत वैशेषिक दर्शन के मनीयी लोग के कथन बा कि शब्द आ अर्थ के सम्बन्ध नित्य ना होखे। दूनो अलग–अलग होला –

'शब्दार्थावसंबध्दौ।' – वैशेविक दर्शन, 2.7.18

अर्थात् शब्द आ अर्थ परस्पर जुड़ल नइखे। एह दूनो के नित्य संबन्ध ना होखे–दूनो अलग–अलग हउवे। यदि अनुभव के आधार पऽ तर्क उपस्थित कइल जाउ कि व्यवहार में जब कवनो वस्तु, व्यक्ति के संबोधन कइल जाला तऽ निष्चित रूप से एगो वस्तु आभा व्यक्ति के बोध होखेला आ ऊ बोध नित्य बनि जाला। 'गाय' कहला से गाय के समूचापन के ज्ञान होई जब कवनो गाय सामने आई तऽ ऊ गाइए हो. ई। एही तरी शब्द अर्थ के संबन्ध नित्य नित्य मानल स्वाभाविक हो जाई। लेकिन वैशेषिक शब्द–शास्त्री लोग के कहनाम बा कि चलऽ कुछ देर खातिर मानिलेत बानी कि शब्द आ अर्थ में संबन्ध होला, बाकिर नित्य संबन्ध होला ई मान्य नइखे बलुक सामयिक संबंध होला–अल्पकालिक नाता होला –

'सामयिकः शब्दार्थ प्रत्ययः ।।' – 7.2.20

यदि शब्द आ अर्थ के संबन्ध नित्य होइत तऽ 'बैल' के 'वृष' लोक में 'बरध' आदि कहल, आ 'नारी' के स्त्री, योषिता, ललना आदि कहल; जल के नीर, सलिल, रस, अप, पानी आदि कहल संभव होइत? फेरू 'पेंड़' के तरू, वृक्ष आदि कहल 'अग्नि' के आग, अनल आदि के अनेक रूपता निषेध करत बा शब्द आ अर्थ के शाश्वत संबन्ध के।

अइसन बात नइखे कि शब्दार्थ के नित्य संबन्ध आ सामयकि संबन्ध के मतभेद निरूकृकार, वाक्पदीपकार आ वैशेषिके लोग में बा। मीमांसा न्याय के प्रसिध्द भाष्यकार पूज्यपाद शबर स्वामी अपना मीमांसा सूत्र के भाष्य में शब्द आ अर्थ केकक नित्य संबन्ध के अस्वीकार करत कहले कि शब्द आ अर्थ के नित्य संबन्ध ना होखे काहें कि स्वाभावे से दूनो अलग–अलग रहे वाला हउवे। ए हालत में नित्य संबन्ध मानल कठिन बा कि कवनो शब्द के उच्चारन तऽ मुँह से होला आ जवना वस्तु भा व्यक्ति के नाम के उच्चारन भइल ऊ वस्तु आ व्यक्ति तऽ मुँह में रहल ना बलुक ऊ जमीन पऽ, पानी में, पेंड़ पऽ अथवा अरू कहीं दोसरा जगह पऽ मिलेला। एसे शब्द आ अर्थ के नित्य संबन्ध ना होखे –

'नैव शब्दस्यार्थेन संबंधः स्वभावतो ह्यसंबंधवेतौ शब्दार्थो । – मी.सू.–10

मुखेहि शब्दमुपलभामहे भूमावथ । – वही – 11

साफ बा कि शब्द आ अर्थ के बारे में भारतीय दर्शन के विचारक लोग के अलग–अलग मत आ ओकरा दिशाईं अलगा–अलगा युक्ति आ तर्क बा। कवनो तत्व के, कवनो गूढ़ विषय के निर्णय करे में मतभेद स्वाभाविक होला। बाकिर अन्तिम रूप से ओकर कवनो ना कवनो समुच्चय–बिन्दु होला–एक विचार प एकमतो हो जाला। अब इहाँ समस्या बा कि जहाँ मीमांसक लोग शब्द आ अर्थ के संम्बन्ध के नित्य मानता उहवें वैशेषिक लोग ओकरा के अलग–अलग अथवा असंबध्द मानता। एक दूनो मत में एकता के कवनो ना कवनो रूप होखे के चाहीं जवना तरी द्वंद्ववादी चिन्तक कवनो जटिल गुत्थी के सुलझावे के खातिर तीन युक्ति के सहारा लेला–

उदाहरण खारि ओकर एगो रूप –

(1) जीवन क्षणभंगुर हऽ ।

(2) ना जीवन नित्य सत्य हउवे ।

(3) जीवन शरीर के रूप में असत्य हऽ, क्षणभंगुर हऽ, वाकिर आत्मा के रूप में नित्य सत्य हउवे।

ठीक ओसहीं भारतीय भाषाशास्त्री लोक के दार्शनिक आ व्यावहारिक दृष्टि से एक निश्चय ऽ पहुँचल जा सकता बा। सभसे पहिले मीमांसा आ वैशेषिक दर्शन के आधार पर एकर विचार कइल जाए तऽ एक बिन्दु पऽ पहुँचल आसान होई। सृष्टि के रचना में पाँच तत्व–पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु आ आकाश के प्रयोग भइल बा। ई पाँचों तत्व नित्य हवेसऽ। आकाश–नित्यतत्व हउवे आ एकर गुण शब्द हऽ। एह नाते शब्दो नित्य मानल जाई। अब जदि शब्द अर्थ एके आत्मा के दूगो नित्य मानल जाई। अब जदि अर्थ एके आत्मा के दूगो रूप हऽ–जइसन कि वाक्यपदीयकार के कथन बा, तऽ नित्य आकाश के गुण शब्दो नित्य बा एक नाते नित्य शब्द के अर्थो नित्य भइल। ''शब्द गुणकं आकाशम्'' के आधार पर नित्य के गुण नित्य होई।

अब एह सिद्धान्त पऽ व्यावहारिक दृष्टि से सोचेला पऽ एगो अलग सत्य के सामना होता। ऊ, ई कि भाषा सर्जक मनुष्य हउवे। मानव कवनो ना कवनो संस्कृति, कवनो ना कवनो सभ्यता के

सँगे–सँगे लेके चलेला। ओही में साँस लेला आ ओह परिवेश में जिए–मरेला। ठीक, सभ्यते आ संस्कृति अइसन ओकरा भाषा के बहावो चलत रहेला। संस्कृति, सभ्यता में निरंतर बदलाव होत रहेला आ भषों में थोरे थोरे दूरी पऽ बदलाव होत जाला। एसे साफ होता कि भाषा में बदलाव होता तऽ ओकरा शब्द के अर्थनियों में बदलाव होई आ अर्थो में रद्दोबदल होई। एह ढंग से सोचला पऽ वैशेषिक दर्शन के मत के पुष्टि हो जाता कि शब्द आ अर्थ दूनो अलग–अलग होला–असंबध्द होला। राग, शब्दके अर्थ प्रेम होला आ दोसरा क्षेत्र अथवा प्रादेशिक भाषा में, जैसे मराठी में 'क्रोध' के अर्थ में प्रयोग होला। बांग्ला भाषी लोग 'राग' शब्द के प्रयोग क्रोधे के संदर्भ में करेला। संगीत में 'राग' के प्रयोग भैरव, कोशी, हिण्डोल, दीपक, श्री, मेघ आदि रागनि खातिर होला। राग के रंग के अर्थ में लाक्षा अथवा लाख, महावर के महावर के कहल जाला। अतने ना संवेग, सहानुभूति, आनन्द, खैर के फेंड़ों के राग कहल जाला। तरजुई के डोरी आ रेशम के सूतो के राग कहल जाला। मतलब ई भइल कि देश–काल के यात्रा करत–करत शब्दन के अर्थ बदलत जाला–शब्द ऊहे रहेला। एह सच्चाई के आधार पऽ मीमांसक लोग आ वैशेषिक लोग के शब्दार्थ संबन्धी 'नित्य' वाला सिध्दान्त आ वैशेषिक लोग के 'असंबध्दता' के सिध्दान्त के समन्वय एह रूप में होई कि शब्द आ अर्थ के सम्बन्ध 'खण्डित–नित्य' होला। जब तक मराठी भाषा के राग के अर्थ 'क्रोध' के जगह पऽ 'प्रेम' नइखे आवत अथवा लाख, महावर, संवेग भा सूता नइखे आवत तबहिएँ तक 'क्रोध' मराठी में 'नित्य' बनल रही। क्रोध के आसन पऽ 'राग–प्रेम' के आवते अर्थ बदलि जाई। एह से समन्वय एह रूप में होई कि शब्द आ अर्थ के संबन्ध 'खण्डित नित्य' होला। एही रूप में शब्दार्टा के संबन्ध के समन्वय करत महर्षि पतंजलि के कथन बा –

''एतस्मिंश्चाति महति शब्दस्य प्रयोग विषये ते ते शब्दास्तन्न तन्न नियत विषय दृश्यंते –

तद्यथा शवतिर्गतिकर्मा–कंबोजष्वेव भाषितो भवति विकार एनभार्या भाषन्ते शव इति।''

महर्षि पतंजलि के निष्कर्ष बा कि शब्दार्थ के प्रयोग के विषय बहुत व्यापक बा। कुछु विशेष शब्द विशेष प्रदेश में विशेष अर्थ में व्यवहार में आवेलेसऽ। जइसे कम्बो प्रदेश में 'शव' के अर्थ 'गइल' (जाना) होला बाकी, भारत में (संस्कृत में) 'शव' के अर्थ 'मुर्दा' होला। जवना दिन काम्बोज लोग 'शव' के मुर्दा के अर्थ में प्रयोग करे लागी ओही दिन से 'जाना' के नित्यता समाप्त हो जाई आ 'शव' के 'मुर्दा' अर्थ नित्य हो जाई। एसे सिद्ध होता कि शब्द आ अर्थ के संबन्ध 'पूर्ण नित्य ना होखे' 'खण्डित नित्य' होला।

वैशेषिक भाषाशास्त्री लोग के दोसरका आक्षेप बा कि शब्द के उच्चारन मुँह करेला बाकिर ओकर अर्थ तऽ बाहर चलि जाता मुँह में रहत नइखे, तऽ कइसे मानल जाए कि शब्द के सँगे ओकर नित्य संबन्ध बा? अब एकर समन्वय एह रूप में होई कि जब कवनो शब्द के सुनते ओह शब्द से जुड़ल, वस्तु, व्यक्ति के रूप आ गुण के बोध हो जाला आ बुध्दि ओही बोध के आधार पऽ ओ वस्तु भा व्यक्ति तक पहुँचि जाले। ओ वस्तु आ व्यक्ति के भौतिक आकार–प्रकार अवचेतन में स्थान बना लेला। एही रूप में शसब्द आ अर्थ के संबन्ध स्थायी बनेला।

इहाँ दूनो के नित्य संबन्ध के माध्यम अथवा सेतु हृदय आ बुध्दि बिया, एसे इहवों संबन्ध 'खण्डित नित्य' ही बनत बा।

शब्द आ अर्थ के अन्तर संबन्ध पऽ बारीकी से विचार कइला पऽ निचोड़ ई जरूर निकसि के सोझा आवत बा कि दूनो मनु2ष्य के जीवन–बोध के ओतने जरूरी आ सार्थक रूप आ अंग बा जतना दर्शन आ विज्ञान। शब्दार्थ के सोच–विचार के प्रक्रिया दर्शन आ विज्ञान रेल के दू पटरी जइसन चले वाली संवेगात्मक प्रक्रिया हऽ। भाषा विज्ञान के त ई प्राण तत्व हइए हऽ व्याकरणों के मूल आधार हउवे। समझ–बुझ के अधिका निष्ठा से भरपूर बनावे खातिर सँवारि के कहल जा सकत बा कि शब्दार्थ सवाक् चित्र हउवे। अपना अस्तित्व काल के शुरूआते में जब मनुष्य के ई गहराई से समझ में आइल कि हमार अभिव्यक्त भाव असालतन रहे के चाहीं–अस्थाई रहे के चाहीं, ओही दिन शब्द आ अर्थ के उदय हो गइल। एक विषय में ऋग्वेद में एगो रूपक आइल बा –

चत्वारि श्रृंगा त्रयो अस्य पादाः द्वे शीर्षे सप्तहस्तासोऽस्य ।

त्रिधा बध्दो पृषयो रौरवीति महोदेवो मर्त्या आविवेश ।। – ऋ. 4/57/30

अर्थ–: चार सिंग वाला बैल (आख्यात, क्रिया–कृदन्त, तद्धित) तीन–पाँव–तीन

लिंग–स्त्रीलिंग, पुल्लिंग आ नपुंसक लिंग, दो शिर प्रतिपादिक आ अव्यय, सात हाथ–सातो कारक आ तीन तरह–बन्हाइल–तीनि वचन–गरत मृत्युलोक में आ घुसल। तात्पर्य ई कि बैखरी बाणी से व्याकरण–सम्मत शब्दनि के सहारे मानव–भावना के शाश्वत जीवन प्रदान करे के साधन मिलि गइल आशय ई निकलत बा कि 'शब्दनि के सहारे जवन साधन मिलल ऊ का रहे? उहे अर्थ हउवे। साफ बा ऊ बैल गरजत आइल। एह गरजन में शब्द बा आ अर्थो बा। भाषा बैल हऽ लिंग–ओकर सिंग, दूगो पैर प्रतिपादिक आ अव्यय, सात कारक सात गो हाथ बा, गर्जन के रूप में शब्द बा स्वर बात निश्चित रूप ओमें अर्थ बा आ तीनों एक दूसरा से सटल बा–संश्लिष्ट बा। असम्बध्द एसे बा कि गरजला के बाद बैल के मुँह में ना शब्द बा स्वर बा ना आ ना ओकर अर्थे बा। लेकिन गरजि के जवन कहलसि ऊ भाषा बनल। ऊ ओह घरी लउकल आ आजुओ लउकत बा। बदलल रूप में। शब्द के आ अर्थ दूनो के रूप बदलत रहेला। ऋग्वेद में ही कहल बा–'सूर्य उषा के प्यार कतबा।' त इहाँ वैदिक कालीन व्यक्ति के द्वारा सूर्योदय, के साक्षात्कार के अभिव्यक्ति रहे। एके शब्द समय पाइके नित्य हो जाला आ फेरू स्थान भेद, अर्थ भेद से खण्डित नित्य हो जाला। पृथ्वी के अर्थ–रूप देखीं–

पृथ्वी – जेकर पहिला राजा पृथु रहन ।
उर्वी – लमहर, विस्तृत, दीरिघ–फाँड़ वाली।
मही – क्रमशः बढ़कर बड़ी होखे वाली।
धरा – धारन करे वाली।

एह प्रकार से शब्दा आ अर्थ के परस्पर संबन्ध के एकरा नित्यत्व आ असंबध्दता के अनेक कोण से, अनेक विधि से–भारतीय भाषा शास्त्री लोग विचार कइले बा। केहू अर्थ के मुख्य मनले बा तऽ केहू शब्द के। एह विषय के निचोड़ के दिशा में बढ़े के पहिले एकबार निरूक्त के वचन पऽ ध्यान टिकावल जरूरी बा –

अथानन्वितेऽप्रादेशिके विकारेऽअर्थ नित्यः परीक्षेत ।
अर्थो हि प्रधानं तदगुणभूतः शब्दः । – निरूकृ

अर्थात शब्द के अर्थ के सँगे 'अनन्वित' हो खला के स्थिति में आ शब्द के प्रदेष्ज्ञ विशेष में परिवर्तन के जानकारी के अभाव में शब्दन के परख अर्थ के दृष्टि में राखि के सामान्य वृत्ति के आधार पऽ करेके चाहीं। लोक–मानस शब्द से अधिका अर्थे के महत्व देला। कहे के माने मतलब अतने बा कि निरूक्तकार यास्क, मीमांसकार आ वाक्पदीयकार भर्तृहरि तीनों के सम्मिलित निष्कर्ष व्यवहार आ लोकपक्ष पऽ दृष्टि राखि के अर्थे के मुख्य माने के बा। कवनो भाषा रूपगत विश्लेषण के समय तुरत अर्थ के समस्या उत्पन्न करेले–अथवा अर्थ के मांग करेले। एह विषय के गहराई में सच्चाइयो इहे बा कि मानव–समाज, मानव–सभ्यता आ मानव संस्कृति अर्थे के आदान–प्रदान के एगो गझिन व्यवस्था हउवे। शब्दन के एह परस्पर विनिमय के क्रम में कतना भावन्हि के, कतना–कतना विचारन्हि के अभिव्यक्ति के व्याकुलता में हाथ हिलाके, आँखि से इसारा कके, काम चलावल जाला–

बहवो अर्था हि गम्यन्ते अक्षिणिको वैः
पाणिविहारैश्च । – 2.1.1

भारत के तमाम नृत्य के शैली–भरतनाट्यम, कुचिपुड़ी हो चाहे कथकली–अपना अंगन्हि के भंगिमा, आ अनगिनत मुद्रन्हि के माध्यम से भाव आ अर्थे के नू अभिव्यक्ति करेलीस? व्यवहारों में देखल जाला कि शब्द टूटलो फूटल होला त काम चलि जाला–अर्थ बुझा जाये के चाहीं। गौर करे के बा कि एगो गूंग व्यक्ति अपना कई तरह के ध्वनि आ, इसारा से अपना भाव–विचार के अर्थे नू जनावल चाहेला शब्द थोरे जनावेला। एसे, महत्व दूनो के बा। शब्द अर्थ के शरीर हऽ आ अर्थ शरीर के आत्मा। देह के प्रति लगाव, राग, आत्मा के चलते होला। आत्मा आत्मा के बन्धु हऽ, अपनत्व के आधार हऽ– 'आत्मैव आत्मनो बन्धुः ।'

लोक जीवन के, लोक–मानस के अर्थ से रक्तसंबन्ध होला।

❑❑

❍ **स्वाध्याय, न्यू एरिया मोराबादी**
पुरानी टी.ओ.पी. के समीप
राँची (झारखण्ड) – 834008

सुनगुन : धीरे धरीबा पाँव

प्रकाश उदय

दिनेश भाई जतना गंभीर कवि हवे, कविता के जतना गंभीरता से ऊ बरतेले, पता ना कि कवि के ओतना गंभीर होखे के चाहीं कि ना, कविता के ओतना गंभीरता से बरते के चाहीं कि ना। बाकिर, अतना त पता बड़ले बा, आ अतना पता त होखहीं के चाहीं, कि जवन 'चाहीं', तवने भ कवियो लोग जो चाहे लागे, आ जवन 'ना चाहीं', तवना के कवियो लोग नाहिंए जो चाहे लागे, त दुनिया ई आज–के–आजे रसातल पहुँचि जाय! ओंइसे, भोजपुरी कविताई के दुनिया में दिनेश भाई के अवाई एगो खास तरह के आ खास तरह से, कवनो दखल देबे वाला 'इरादा' से भले ना, 'अन्दाज' से त भइले बा। कुछ अँइसे कि जइसे कि ना जब ठटाइल, त आवे के परल, त अइले। कविताई के एह इलाका के कुछ–कुछ अतहतह, बुला ना जब सहले सहाइल, तब। आ तब्बो, कूद के आ गइल हो खस, ईहो ना। पहिले ऊ अपना के अजमइले, सोसल कहाय वाला मीडिया प कुछ खुदरा खरच के सँवचले कि हमरा किहाँ बड़लो बा कि ना, कुछ अलगा से सोझा राखे–परोसे लायक, आ जब ठोक–ठेठाऽ के ठीक से जान लिहले कि कुछ त बा, तब अइले, तब्बे अइले। त तय बा कि असहीं, खाली आवे खातिर नइखन ऊ आइल। आइल बाड़े एगो अपना तरह के आपन कहन लहाऽ के, कहे के एगो आपन तौर–तरीका उपराऽ के। केहू उनुका एह लहवला–उपरवला प ना 'नया' होखे के 'तोहमत' लगा सके, ना 'पुरान' होखे के 'ठप्पा'। लोक आ शास्त्र के अनुभव आ अध्ययन आ अपना काव्य–परंपरा के अवगाहन के इरिखा करे लायक पूँजी बा उनुका किहाँ, आ बा एह तीनो के लिहले–दिहले एह तीनो से हटियो के आ उठियो के सोचे–बतियावे के बेंवत। ओह अनुभव, अध्ययन, अवगाहन के 'व्युत्पत्ति' मान लीं, एह बेंवत के 'प्रतिभा'। रह गइल 'अभ्यास', त मूँड़ी गोत के, बिना अपना के जाहिर कइले आ माहिर कहवइले, मनगँवे, बरिसन ले जइसन काव्याभ्यास ऊ सँपरवले बाड़े आ उनुका से सँपरल बा, तवना के दूसर कवनो उदाहरण, हमरा तकान आ हमरा लउकान में अब ले त नइखे आइल। लोग–बाग के आग जतना में भभक के भसम हो जाला ओकरा से जाने कैगुन जादे ऊ अपना आग के दसदिक् सुनुगे के मोका लहववले बाड़े। असहीं ना उनुका किहाँ धधकलका त बा, भभकलका नइखे। एकरा के गुन कहीं चाहे ऐगुन, बाकिर जवन चीज दिनेश भाई के कविताई में केनियो से कतहूँ ढुँढ़ले ना भेंटी, ऊ ह, ऊ वाला 'हड़बड़ी', जवने के मारल ई जुग, ई जमाना आ एकर सब–सब फसाना। एकरे चलते बुला, केहू सुने मत, अतना धीरे से कहल हम चाहत ई बानीं, कि कबो–कबो त अइसन लागेला कि जतना भर कविताई से दिनेश भाई के कवनो–कवनो एगुड़े कविता आकार पावेला, कविताई के ओतने भर पूँजी में केहू–केहू के त सँउसे पोथन्ना तइयार हो जाला। दिनेश भाई के रूप में, भोजपुरी के, अनियासे, बहुत संपन्न कवितन से संपन्न एगो कवि मिल गइल बाड़े। उनुका कविताई में जाईं, त ईहे ना कि ऊ अनेकाशय–संपन्न बा, ईहो कि अनेकशः आशय–संपन्न बा। ओह वाला तेवर के कवि ऊ, जवना तेवर के, अपना के कविता में कहत कवनो भाषा–समाज एगो इन्तजार में रहल करेला। ई जरूर बा कि कवनो तरह के हड़बड़ी में ना आइल एह कवि के, कवनो तरह के हड़बड़ी में नाहिंए आइब त पाइब। त आईं जरूर, बाकिर जरूरी बा कि तनी इतमीनान से आईं।

होई का एह अइला से? इतमीनान रखीं, कुछ ना होई। कइसे? अँइसे कि जइसे कि ई तय बा कि 'मन ह सनकी', त 'धनकी झनकी'। त कइल का जा सकेला? बस अतने कि एह मन के धनके–झनके के 'अगते नीके सोच लीं, इचिखन माथ खरोंच लीं'। एह से होई का? इतमीनान रखीं, कुछ ना होई। तय बा कि 'जतिना चाहीं पिनुकीं भिनकीं', 'मनवा तबहूँ बाग न मानी'। अइसना में, सिवाय एह के कि हाथ प हाथ ध के बइठ रहल जाय, दोसर का उपाय बा? ऊ उपाय, कवि के कहनाम कि कविता किहाँ बा। एगो मंत्र–मतिन बन के, 'सोचीं तनकी'। ईहे मंत्र कामे आई, बस ई भरोसा बनल रहे कि 'बाकिर केहू ठीक कहल ह– सोचीं तनकी'। अब तनी सोचीं, कि लउकत बा कि सोचलका कवनो कामे नइखे आवत,

तब्बो ओह सोचलका के बारे में ई सोचवावल कि जे कहले बा सोचे के, से ठीक कहले बा– कइसन मुश्किल काम ई! अइसन मुश्किल काम कविता सँपरावेले, आ अइसन, दिनेश भाई जइसन कवनो कवि सँपर के ओकरा से सँपरवावेले, जवन 'नकार' बा तवना से बिना तनिको मुँह फेरले, जवन 'सकार' बा तवना के थोपत ना, अपना एगो 'तनकी' के सहारे थापत। त अइला से जवन होई तवन ईहे होई। नइखे होखत के भितरे ई भरोसा, कि सोचीं, त होई। कि सोचीं कि होई, त होई। कि सोचलका से होई चाहे ना होई, भरोसवा से होई। कि सोचलका छूटे त छूटे, भरोसवा मत टूटे। अधिका ना, त तनिका त बनल रहे!

एगो महीनी, एगो गझिनपन, दिनेश भाई के कविताई के कहन आ कहे के तरीका दूनो में अँइसे कि जइसे आप–से–आप, बड़ा गौं से, आ गतरे–गतर पेहम। उनुका किहाँ ऊ जरूर बा, जवन जरूरी बा आ जवन गैरजरूरी बा, तवना से भरसक सभत्तर एगो सहजे साधल आ सधल दूरी बा। कवि के 'देखल' का कहाला, आ का कहाला कविता के 'देखावल'– एकरा के जे देखल–देखावल चाहे, भोजपुरी में, से दिनेश भाई किहाँ आवे, तय बा कि ओकरा एके ठईं भरखर भेंटाई। एक–से–एक दृश्य, चलदृश्य। सधल–सबदन–साधल एक–से–एक बिंब, प्रकटल आ प्रकटत। बाकी के छोड़ीं, एह कविता–किताब में एगो भोर के कै–गो–दो तौर जवन बा, ओहू ओर दुचार डेग चल लीं, त एकर अहसास हो जाई। एगो भोर बा पहाड़ में, '...पुरबाहुत ओत से निकल/ताकि रहल भोर कुछ विकल/सूरुज के बेन्दुली लिलार प?/टुप् दनी उजास अस पसर गइल/करियक्की छाँह कहीं आन्ह में सँसर गइल...।' एगो दोसर, 'हिंहा जंगल से लउकत बा/पार्क के एकांत कोनसिया छोर/टटके भोर।' ई 'एक चिन्दी भोर' रहे। एगो दोसर भोर कैनवस प पसरल बा, 'आधे हरदी, आधे रोरी/लेइ मलल मुख साँवर गोरी/ए सँवरो!/ए सँवरो, लेपन रंग काँचे/कलावंत कइसे छबि खाँचे!...' एगो ऊहो भोर बा जवन पंखी बेचारा के दिन भर खाती चारा चुगे में जोत देता। आ जवन बेवहार एह भोर के, पंखिन से, मनइन से कवनो दोसर थोरे, 'बान्ह दीं तनिका कलेवा पोटरी, 'भोरवाली' बस नजर आइल सखी'। ईहे बा कि पंखी के रात भर के बिसराम नसीब बा, मनइन के कवन ठेकान! सुबहित साथ मिलल त 'बात निकलल भिनसहर आइल सखी', छूट गइल साथ त 'चाननी रात के जिकिर काथी, भोर तकले धिकल दिमाग रहल' भा 'भिनसरे आज कोइली बोलल, कान में टीस दिलजली घोलल'। आ चढ़ल चिंता त 'पता ना भोर कतिना देर बाटे, पता ना दूर कतिना आशना बा! ' एगो सोगहग गजल बा भोर के ढुलकत बयार के, आ सीतल जलकनी से तिरिन के थरथरी के, आ पुरबारी आकाश में पसारल चुनरी के बखानत, बतावत कि 'अँखिया मिचिक थिरा रहलि, बालम अभी खुमार में/पानी छिरिक उपल सरिस, उमगल करीं न मस खरी/असकत भरल ह देह मन अँगरान के लहर उठे/जागल सभर सुचेतना, दुबकल कतो विभावरी'। असहीं 'भोरहीं से' होत बरखा बा, 'भोर के गोत्रोच्चार' बा, 'भोरहरिया के चान' बा, 'उगेन' बा आ बाटे ई 'उजास' – 'तीन जोन्हीं तलई में हो दने भँडारकोनी/फुट् दनी झुप् दनी गिरल ह टूट के/केने ले दो उषा बबी अन्हिया बतास लेखा/सतही प लोक लेली राखि लेली खूँट के/अँचरा के कोर में से गजबे उजास कढ़े/चेहरा के लाली मेलि सातो रंग कूट के/आदित के आवन प फुलवा के गुच्छा देते/अनगिन गेना फूल गिरल ह छूट के।' ई जवन 'उषा बबी' बाड़ी, उनुका से अउरियो कहीं–कहीं भेंट हो जाई, 'थोर हरदी, थोर कुंकुम, ले तनी नीली सियाही/ओढ़नी बबुनी उषा के, के दिहल चहबोर सजनी!'

जइसे भोर के ओसहीं साँझ के, दिन के, रात के, नदी के, पहाड़ के, जाड़ा, गर्मी, बरसात के, नीन के, जाग के, राग–विराग के आ अउरियो बहुत–बहुत के जानल–अजानल जाने कतने रंग बा इहाँ, कतने ढंग, जाने कतना कुछ कहत–बतियावत! कहाँ से आइल बा एह कवि के पास अइसन तकान आ अइसन तकावन के अइसन कबिलाँव–एकरा में जाइब त संस्कृत कविता के भोजपुरी में गहे–कहे के एह कवि के जवन एगो शुरुए से, आ अनवरत किसिम के कोशिश रहल बा, तवना के महातम समझ में आई। समझ में आई कि काव्यभाषा के रूप में भोजपुरी के आपनपन के भिरियाँव, नजदीकी, हिन्दी से नइखे ओतना, जतना सीधे संस्कृत से बा। हिन्दी से ओकर नजदीकी बा त ओह हिन्दी से ना ओतना, जवन एगो भाषा के नाँव ह, जतना ओह हिन्दी से, जवन एगो सवँगगर भाषा–परिवार के नाँव ह, जवना परिवार के दू दर्जन से अधिके भाषासब के सकत–सकान हासिल, जवना परिवार के काव्य–कबिलाँव के जे पहिले–पहिल सोझा लेके आइल, से गुरु गोरखनाथ। कविता के लेके, आ जीवन के लेके उनुकर जवन शुभ–शैव संकल्प, तवन ईहे कि 'हबकि न

बोलिबा, ठबकि नहिं चलिबा, धीरे धरिबा पाँव य गरब न करिबा, सहजे रहिबा, भनत गोरखराव'। एही हबकि के ना बोलला के, ठबकि के ना चलला के, धीरे पाँव धइला के, गरब ना कइला के आ सहजे रहला के प्रताप ई 'सुनगुन' आ एकर सब–सब सुनल–सुनावल– 'संसय नदी बहे', 'रीत रहल दिन–रैन', 'अदन के बाग', 'आहेरी दँव लाइ', आ 'हरदी के झाँस'।

अपना बतावन में, एह कवि के जवन सबसे बड़ खासियत बा, तवन ई कि 'सहज' ऊ सभत्तर बा, बाकिर जवना के 'सरल' कहल जाला तवन ऊ कतहीं नइखे। जे सहजता के सरलता समझ लेला ऊ कविता में जवना एकहरापन के रचेला, आ कविता से जवना एकहरापन के चाहेला तवना से दिनेश भाई के कविताई वंचित नइखे, बाँचल बा। गोरखनाथ जवन सहज भइल चहले बाड़े, तवन सरल भइल ना ह, एह मरम के सही–सही समझल, कवितो खातिर जरूरी बा, भोजपुरी कविता खातिर त अवरू कुछुओ के जाने–समझे से जादे जरूरी बा। एह में कवनो सन्देह ना कि सरल भइला के एगो आपन खिंचाव, एगो बहुब्यापी पसारा आ ओकरा से, मूलतः एगो यशःप्रार्थी जीव भइला के नाते, कवनो कवि–कलाकार के अपना के बचा के राखल, प्रतिपल बनल रहे वाला एगो महामुश्किल उधामत। महामुश्किल, हमेशा ई इयाद रा खल, कि जवन 'सरल' तवना के एगो अवरू मतलब होला भोजपुरी में, आ जे ढेर सरल–सरल करेला ऊ एक दिन सचहूँ अतना सरल–बसात उगिले लागेला कि नाक ना देत बने। भोजपुरी में एगो जवन अश्लीलता के आन्ही–अस बहे लागल बा, ऊ एकलेखे एही सरलहटपन के नौ–नौ नतीजा ह। गोरखनाथ के मन –मंतव्य से दिनेश भाई के काव्य–कलाप के एह भिरियाँव के केहू ई जो कहे कि ई जबर्दस्ती धइल भइल, त ऊ एगो गीत सुने, ओकरा जबर्दस्त भइला आ जबर्दस्ती धइला के भेद, भरसक बुझाऽ जाई। गीत ह 'बेफिकिरा'। 'भरलसि उमस/डुलल/चंचल पुरवाही/मचल रहल ह/ सबुज/काँटबन डाही... /घुट्ठी भर पानी में/ बकुली /चोंच कचारे पाजी/मछरी कहाँ छिपी/कब ले/ रसपिरिया बाजी.../लोमड़ के गर में/झूलेला/ सीसंकर के माला/मूस घरे के टाटी/टूटल/कुछो दाल में काला... /उछल–कूद बन/बानर/थिर मन बइठे/रहि–रहि चिखुरी/ छँवड़ मुछंदर अँइठे.../ काल्हु तलेले होई/अजुए/जे मूरख ऊ झंखे/आजु खासु, काल्हु के/रोवसु/गोरख काहे रक्खे?'

अइसन मन–मिलाव दिनेश भाई के कविताई में, गोरखे से ना, अपना सँउसे काव्य–परंपरा से बा, तहे–तहे, आ तरह–तरह से। अइसनके कबो कवि कवनो मिल जाले, त बुझाला कि कविता के सहस्सर धारा–उपधारा में बाँट के जे बइठल बा ऊ झुट्ठे अपना विद्वत्ता प अँइठल बा। जवन भितरे–भीतर बा तवन त बड़ले बा, खाली उपरो–झाँपर प नजर फेरीं त दिनेश भाई किहाँ पद आ दोहा आ बरवै आ सवैया आ कबित्त आ कुंड. लिया से लगायत गजल आ रुबाई आ हाइकू तक के सहज समाई रउरा पाइब। खास बात ई कि जवन बा तवन आपन बन के बा, अपना भाषा–भनिति में आपन गहकियाँव बना के बा, आ बा आज के साज से सुर मिलाऽ के। ई होला भाषा से काम लिहला से ना खलिसा, भाषा के कामे अइला से ई होला। केहू चाहे त भोजपुरी के आपन कहाय लायक कथन–पद्धति के तरफ से, भोजपुरी के आपन शब्द–सृजन–सामर्थ्य के तरफ से एह कविता–किताब के पढ़ लेबे, अघाय भ पा जाई। अइसन छंदसिद्धन किहाँ छंद 'के' मुक्ति जब मन. ावल जाला त ओकरो कवनो मतलब होला, छंद 'से' मुक्ति वाला मतलबीपन त भरसक ओ में नाहिंए मिले पावे। अब जइसे कि जवन धुन धुर भोजपुरिया समाज के सबसे प्रिय, तवन छठ के गीतन के। एह छठ–गीतन में का? छठी मइया से, अदितमल से बात–बतकही। ईहे बात–बतकही, एही अदितमल से, जब एह कवि के करे के भइल, त सबसे पहिले ऊ एह छठ–छंद से बहरी आइल, 'आरता के पात पर/सुरुज के देखलीं ह/गोदिला, नबोज, धापल –धुपिल/हरख भर...।' एह बहरियइला के मतलब बा। कुछ अलग से कहे के बा, सुरुज–सँवारल एह जीव–जीवन–जगत के कुछ अलग तरह से पा के, उनुका छोह–छाँह में कुछ अलग तरह से छहाँऽ के, उनुकर बिछावल एह जगत–बिछौना प कुछ अलग तरह से अपना के बिछाऽ के, त जाहिर बात कि जवन कहे के बा तवन अलग तरह से कहे के बा। जवन कहात रहल बा, तवने नइखे कहे के, त जइसे कहात रहल बा, तइसे भला कइसे कहाय! खास बात ई कि ऊहे नइखे कहे के, एकर ई मतलब ना कि उत्तर से छँउक के दक्खिन के ध्रुव प चढ़ बइठे के बा, आँख उलट जाय अइसन कवनो क्रांति मचा देबे के बा, बस अतने कि जवना सुरुज 'से' माँगल जात रहे, ओह सुरुजे 'के' माँग लेबे के बा कि 'आवऽ, हमरा माँगे–कोंखे / अंगे–प्रत्यंगे, रगे–रगे, कने–कने / सगरी वजूद में...।'

जवन बा उनुका कविताई में, चाहे ऊ राजनीतिक व्यंग्ये काहे ना होखे, सामाजिक आलोचन, बाकिर बा त कविता के होइए के बा, ई एक बात, आ दूसर बात कि आस्ते से बा, चिकरत–फेंकरत नइखे, झींकत–झुझुआत नइखे, एक–अलंगी नइखे, आ तीसर बात कि बा त सत्ता के विरोध में बा, एक सत्ता के विरोध में आ दुसरका सत्ता के तरफदारी में नइखे। ओकरा ठीक से पता बा कि 'राजा–राजा खेल कबड्डी/दुन्नो गुँइया एके चड्डी/जाता चोरा बोल पढ़ावे/ अगल–बगल अस्तीन चढ़ावे/चले देखउआ गुत्थमगुत्थू/ हुत्तूतुत्तू...।' त तय बात कि तरफदारी केहू के बा उनुका किहाँ त एक त कि ऊ झुठहूँ के नइखे आ दोसरे कि ओकर बा, जेकर केहू सुनवइया नइखे, पुछवइया नइखे, जेकरा खातिर 'दहिने–बँवार के कलह/आफत बनल ह जान के।' तरफदारी बा, त ओह हरियर जजात के तरफदारी, जवना के चरे खातिर ढोर–डाँगर के छुट्टा छोड़ दिहल गइल बा, कि आन के जजात, चरें, जतना भ चराय। आ एह तरफदारी के एक छिरिकवानी एह ढोरवनवो खातिर, ई जान के कि ईहो एह 'ढोरतंत्र' में 'कहियो खुद चारा बन जइहें।' कवि–कर्म के एहू तकाजा के एगो आपन मजा, एगो आपन मौज कि जे दोसरा देने बा, 'बिधंस' राग गावत, ओकरो जीवन–दर्शन के बूझल–बुझावल ओतने जरूरी, 'झारी–झुरी चुनि लीं जा, बाँचल बिधुनि दीं जा/कहियो त दुनिया के हो खहीं के ह बिरान।' जवन फलसफा बनल तवन ई कि जवन फरल बा तवना के जब झरिए जाय के बा कहियो–ना–कहियो, त काहे ना झारिए दिहल जाय, आजुए, अबहिंए! अपना नगीच–से–नगीच से लेके दूर–से–दूर तक के, घरेलू जीवन से लेके राष्ट्रीय जीवन तक के जाने कतने बतुस–बात के लेके, शिल्प के शास्त्रीय से लेके लोक–लागल जाने कतने प्रविधियन के उपरावत आ अपनावत, आपन बनावत, आ कुछ बिलकुल आपन प्रविधियन के उपजावत, अतना तरह के आ अतना तरफ से कविताई के सँपरावल बा, संभव कइल बा एह कविता–किताब में, कि हमरा कवनो सलाह के केहू माने लायक माने, त अतना त मनबे करे कि एकलगवहिंए ना, सरदर ना, आ हाहेहुती त नाहिंए, तनी रह–सह के एह किताब के कवितवन से गुजरे, तनी थम–थथम के, कले–कले, डूबत, आ डूब के उबरत।

एह कवि के 'विनय' प बतियाईं, कि जवन अपना भगवान से चाहल गइल कि 'सत–नियाव के पर ख रहे' तवन कविताई में कतना भर आइल, कइसे–कइसे आ कवना–कवना अपत–अनियाव से जूझत आइल। कि कइसे नदी के 'अविरल जलधारा' के पार कइला के जतना, ओकरा 'कछार' प 'माँकत' रहला के महातम, रचना खातिर, रंचक ना तवना से कम। लालच कि 'बावन' से धरती–आकाश सब हार के, अपना हिस्सा के पाताल के घुप्प अन्हरिया में आपन 'अकसगंग' सिरजे खातिर तइयार, 'बलि' के बली जवन मन, कि 'जिन सहारे / दिशा हेरे पथी पथहारे', तवना के तनी बतियाईं। बतियाईं लख–लख 'अभिलाख' के 'बेपतई' 'बिन सोरी' 'बाँस भर' चढ़त रहला के बारे में। ओह 'डरपोक, बाकिर सुघर जिनिगी' के बारे में, जवना के 'आँखि मुकुले से मुलुके आ मूने के बीच' में नाप दिहल गइल बा। ओह जीवनानुभव के बारे में, जवना के जनवले जनाइल कि 'सहलइले ककुलहट कहाँ जाला? के ना चाही 'ऊब' आ 'उचाट' के, 'डर' आ 'हताशा' के, 'अनकुस' रात आ 'बदरकट्टू' रात आ 'फागुनी' रात के, 'गठरी' वाली 'इया' आ 'लबरी इया' के, 'सुर बिसरानी' कोइल आ 'कुबोलिया' बोलेली जवन 'निरलज कोइलिया', तवना के बीच के आँतर के जानल आ चीन्हल! कवितन के, दिनेश भाई के बसावल एह गाँव में, जाने कतने अइसन ठाँव, जहाँ कविता प कुछ कहल त कहल, जवना के 'कविता के पढ़ल' कहल जाला, तवनो के झटहेर के, एक्के बात मन में आई कि कसहूँ तनी गाईं, रेघाईं त जरूर। कतने ठईं कथा–कहनियन के साँस के सरगम सुनाई। सनकेशी रानी के, कंगन के लोभे लोटा ढुनकावे वाला पंडित के, दंतकथा के दँइता के...। कवनो ठेकान ना, कि एह गाँव के कब, के, कहाँ से भेज दी बुलावा, कि आवऽ, बइठऽ, बतियावऽ दू गाल – साँस में रह–रह के जागत 'बनतुलसी' के गंध, कचनार के माथा प चपकल 'धूप के रेसा', 'धन खेती के सिहरन' 'तलई में' के 'आसमान', 'बयारि' के 'कनबतिया', 'पउधन के कानाफुसी', 'बरगद तर' 'चाह' के 'दुबकल' छाँह, 'साधु के चोला' लपेटले 'चोर के गोपीचनी', 'जटहा जोगी तरकुल', 'चरवाहा मेघ' आ 'मेघ के चरवाही', 'बहेंगवा हवा' आ 'अनासे' केहू से 'लड़–झगर' के 'आइल' 'हवा बौरही', 'घंटा' 'न' 'पता' 'जमीनी हकीकत' 'तबो बा बनल भरथरी' जवन, तवन 'आदिमी', 'छिटिक के' 'भुँइया' गिरल 'बात', 'होठ से' 'पल्लू' 'दबा के' 'ठोर' लड़वला के 'मुश्किल', 'पलक पर' परल 'अलस' भरल 'नीन के टुकड़ा' के 'नयन में झाँकि के' उतरे के मनाही, 'सफा' 'मौसम' से ' खफा' 'सियासत', 'छपरी' प चढ़ल 'गरथइया' नाच, 'सजन तोहे भेंड़ा बनइबों' के सवदगर साध, आ अइसन–अइसन जाने कतने साध, कतने आस्वाद, कतने गंध, कतने सुर–साज, कतने दरस–परस...। इन्हनी से कगरियाऽ के, नजर बचाऽ के निकसल, कठिन कठकरेजी काम, बाकिर का, कि दुआरी पढ़ल एगो 'रसम' भर ह, जवन 'असल' ह तवन त कोहबर में पहुँचल ह। हँ, बाकिर ऊहे, कि हबकि के ना, ठबकि के ना, धीरे धरत पाँव...।

त पहुँचल जाय।

❑❑

❍ वाराणसी, उत्तर–प्रदेश

पडलन राम कुकुर के पाले

डॉ. सुमन सिंह

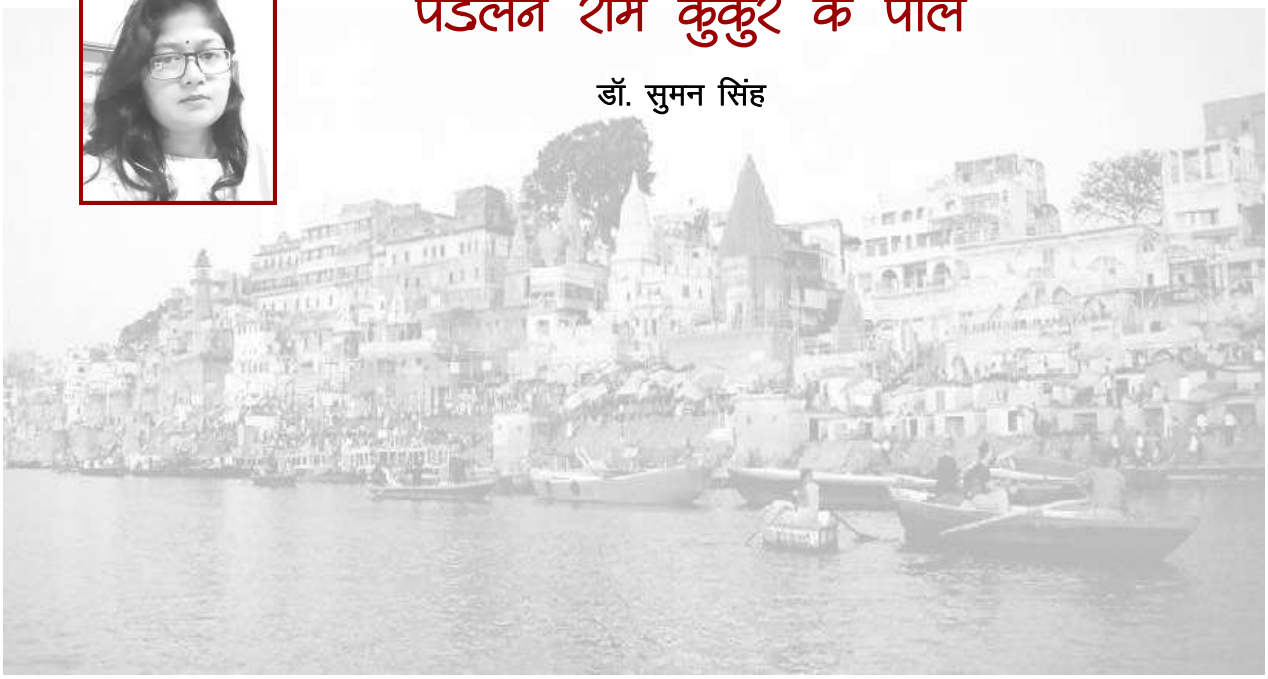

"ए साह जी हो, तनी एगो कड़क चाय पियवता भाय। आज दिमाग बड़ा गरम ह।" हाँफत–हुँफत हलकान हाल नन्हकू अड़ी पर अवते साह जी से फरमाइस कइलन।

"काहें मूड ख़राब ह नन्हकू भइया। बतावा भला साह जी! जे काम के न काज के, दिन भर ल खेरा नियन घुम्मत रहेला ओहू क मूड कब्बो खराब हो सकेला ?।" एक जाना नन्हकू के दिमाग क तापमान बढ़ावत हंसी कइलन।

"ए साह जी! कह देत हईं कवनो दिने तोहरे दोकान पर खून–खराबा हो जायी त हमके दोस मत दीहा। ई ससुर जवने के सोझ डहरी ना चले आवत उहो उपदेस देवे सुरु कय देत ह। जवने दिने हमार माथा फिरल तवने दिने मूड़ी प खच्च से गंडासा चलल। जे हमसे लगी जान से जायी।" नन्हकू क्रोध में बोलत जात रहलन अउर जे उनके कुछ देर पहिले लखेरा कहके चिढ़वले रहे ओकर आकी–बाकी पूरा करत चुन–चुन के गारी देत जात रहलन।

"जाये दा भाई तू लोग काहें बात क बाती पूरत हउवा लोग। साह जी के अड़ी प मोसल्लम आग क इंतजाम ह। जनते हउवा लोग केतना जरतुहा लोग बइठल हउवन इँहा। केहू झगरा सझुराई ना इँहा सब आगे लगायी।" एक जाना बीच–बचाव करत नन्हकू के समझावे–बुझावे लगलन बाकिर नन्हकू क चित्त सांत ना होत रहल।

"का भयल ह भाय नन्हकू। कुछ बतइबो करबा कि बस मूड़ी गोतले मातम मनइबा ..आंय।" साह जी चाय छानत, नन्हकू के भरुका थमावत पुछलन।

"का बतायीं साह जी, कहतो क संकोच लगत ह।" नन्हकू दुख साझा कइल चाहत रहलन बाकिर ऊ दोगुना होत जात रहल।

"अरे भाय, भोले–भंडारी के नगरी में के के दुख ब्यापत ह हो भईलोगन। तनी सुनी त।" फजीहत गुरु सुर्ती ठोंकत हँसत–ठठात नन्हकू के लग्गे आके बइठ गयिलन।

"देखा गुरु कब ले नन्हकू भइया सस्पेंस बनवले हउवन। कब ले सब पूछत ह कि काहें रोवां गिरवले हउवा त बतवते ना हउवन। हम त अबहीं मुंह से कुछ कढ़वते हईं कि किटकिटात, खिसियात, गाल फुलवले कटहा बानर नियन बकोटे धउड़े लगत हउवन।" जवन जाना नन्हकू के लखेरा कह के पहिलहीं गारी–फक्कड़ सुन ले ले रहलन, उनकर फजीहत गुरु के अवते पलरा भारी हो गयल रहल। ऊ बेहिचक नन्हकू के कटहा बानर कह के मजाक उड़ावत, हंसी–ठट्ठा करे में मगन हो गयल रहलन। "देखा गुरु तोहरे लिहाज में हम एह अदिमी के कुछ बोलत ना हईं, नाही त इनकर एक्के छन में गती–मुक्ती बनाय देतीं।" नन्हकू दाँत पीस–पीस के फजीहत गुरु के सुरक्षा घेरा से छिटक के अपने

दुस्मन क घेंघा चाँपे के फिराक में फड़कत रहलन।

"अरे जाए दा ओनके भाय नन्हकू ! हमसे बतावा का भयल ह, का दिक्कत–परेसानी ह?" फजीहत गुरु नन्हकू क चिंता–फिकिर साझा करे क कोशिश करे लगल रहलन।

"का बतायीं भइया एगो पटीदारी क बाबा हउवन। ऊ नब्बे बरीस के पार होइहन। कई बरीस ले हारी–बेमारी प कासी ले आवल जात हउवन कि कहीं मर–वर जायं त उनकर गति–मुक्ति बन जाय बाकिर बुढ़ऊ मूवते ना हउवन। सब सेवा–टहल, दर–दवाई करत–करत थाक गयल। बिछवने प कुल्ह करम होत ह बाकिर मरे क नाम ना लेत हउवन।" नन्हकू बोलत–बोलत हफरी छोड़े लगल रहलन।

"तोहार आपन बाबा ना न हउवन, दर–दयाद न हउवन त तोहके कवन फिकिर। अब जनमो–मरन केहू के हाथ में ह? सब त भोले–भंडारी, औघड़दानी के हाथ में ह। जब ऊ खोजी कय दें... जाए दा यार, काहें बुढ़ऊ क दुर्गत करत हउवा जा।" फजीहत गुरु अबहीं बतिया खतमें ना कइलन कि नन्हकू फफाये लगलन।

"ए भइया ऊ खुदे सबकर दुर्गत कइले हउवन, दोसर का उनकर दुर्गत करी। हमहन क भले दयाद–पटीदार होखें बाकिर मान–जान अपनही बाबा नियन कईल जाला। जब–जब बेमार होलन इहे अदिमी दउर–धूप के दवा–बीरो करावे ला।उनकर बेटी दमाद त एहि बनरसे में रहे लं बाकिर बुढ़वा के कुकरम से त्रस्त कब्बे तियाग देले हउवन।इहे अदिमी गाँवे–घरे क होवले के नाते लाज ढोवत ह।" नन्हकू क खुनुस बढ़ले जात रहल।

"कवन कुकर्म कइले हउवन भाय कि बेटी–दमाद झांके ना आवत हउवन ?" फजीहत गुरु क जिज्ञासा चरम प रहे।

"ऊ कुल छोड़ा भइया लंबी कहानी ह।अब चलत हईं बुढ़ऊ बदे मोसम्मी क जूस ले जाए के ह।"

"बतावा भला हेतना हुँसइले प अबहीं मोसम्मी क जूस फयदो करी ...आंय।" एक जाना फिर लुत्ती लगवलन।

"चुप करा भाई काहें नन्हकू के पीछे पड़ल हउवा। ए नन्हकू मन थोर मत करा यार। काशी में मुक्ति सबके ना मिलेला, बड़भागी लोगन के इँहा गति–मुक्ति मिलेला। एहि बात प एगो खिस्सा सुना जा। बहुत पहिले क बात ह। रामेश्वरम में एगो ब्यापारी धनंजय रहत रहल। खूब पुण्यात्मा, दानी–धर्मी रहे। ओकर यश–कीर्ति दूर–दूर तक फैलल रहे। जेतने ऊ प्रसिद्ध रहे ओतने ओकर माई बदनाम, चरित्रहीन। माई के पथभ्रष्ट भइले के बाद भी धनंजय क ख्याति कम ना भइल। एक दिन ओकर माई मर गइल त ओकरे आत्मा के शांति खातिर एक सुन्दर तांबा क बक्सा में ओकर अस्थि रख के ऊ गंगा जी में प्रवाहित करे बदे काशी आईल। मजूरा जवन बक्सवा उठवले चलत रहे ऊ लालच में पड़ गयल कि जरूर ए बक्सा में कुछ कीमती चीज होई जवने से ए ब्यापारी क ऐसे एतना लगाव ह। जइसहीं ब्यपरिया कुल्ला–दतुवन करे गईल कि मजुरवा बक्सवा ले के भाग गयल। कुछ दूर गइले प जब ओके खोललस त देखत का बा कि ओम्मे हाड़े–हाड़ भरल ह। मारे खीस के मजुरवा हड्डियन के एहर–ओहर फेंक देहलस। त ए बचवा नन्हकू हो, देखा ऊ पथभ्रष्ट, कुकर्मी मेहरारू के मुअलहुँ प एह काशी जी में मुक्ति ना लिखल रहे। त ई जवन बुढ़ऊ कपारे आके पड़ी गयल हउवन त का करबा खींच–खांच के पार लगावा जा। बाकिर जान ला ए बचवा सबकर एक दिन इहे आवेला, खाले जाए वाला। काहें से कि सबही न राम जी क कुक्कुर ह.... कहा कि झूठ कहत हईं।" सुर्ती ठोंकत, ठहाका लगावत फजीहत गुरु अड़ी से उठ के चल दिहलन अउर नन्हकू के मन में उनकर आखिरी वाक्य 'सबही न राम जी क कुक्कुर ह' काँट नियन करकत धंसल चल जात रहल।

❑❑

❍ वाराणसी, उत्तर–प्रदेश

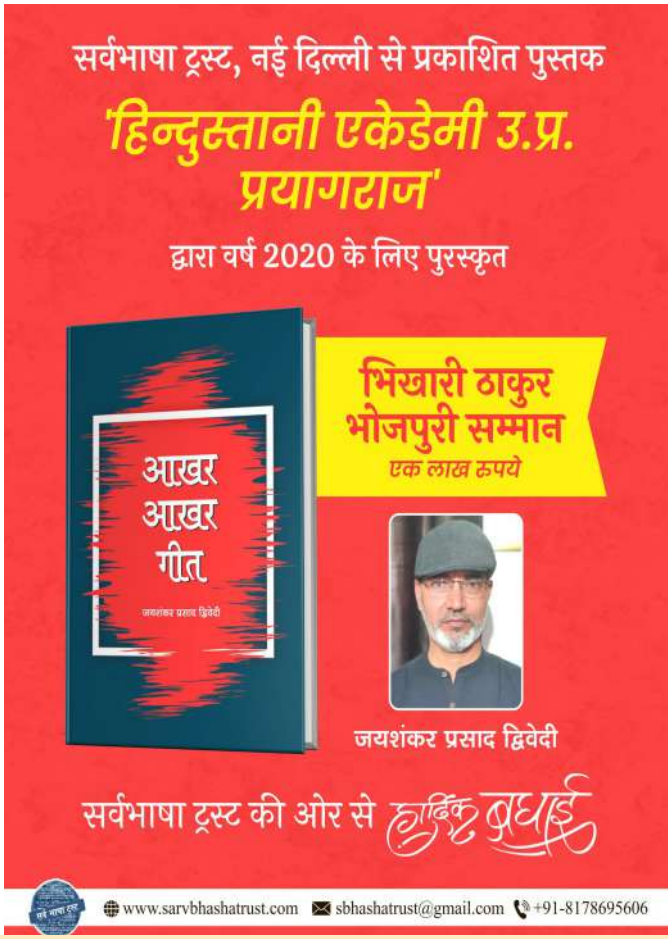
सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली से प्रकाशित पुस्तक
'हिन्दुस्तानी एकेडेमी उ.प्र. प्रयागराज'
द्वारा वर्ष 2020 के लिए पुरस्कृत
आखर आखर गीत
जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
भिखारी ठाकुर भोजपुरी सम्मान
एक लाख रुपये
जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
सर्वभाषा ट्रस्ट की ओर से हार्दिक बधाई
www.sarvbhashatrust.com
sbhashatrust@gmail.com
+91-8178695606

S.R Group
Shri Ram Associates
बुकिंग मात्र 11000 में
K.P Dwivedi (बनारस वाले)
+91-9871614007, 9871668559
FREEHOLD PLOTS
4.9
लाख से शुरू
2 BHK VILLA
16.99
लाख से शुरू
FREE HOLD PLOTS
VILLAS
FARM HOUSE
बैंक लोन सुविधा
Location: NH-24, NH-91, EASTERN PERIPHERAL, NOIDA EXTN.
Head Office : E-1, Panchsheel Colony,
Near Shiv Mandir & Dena Bank, Opp. Tata Yard
G.T Road, Lal Kuan, Nh-91, G.B.Nagar (U.P)

CompuNet Solution
CNS
Network Services
Service
AMC
Email: support@compunetsolution.in
web: www.compunetsolution.in

सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

से प्रकाशित भोजपुरी के श्रेष्ठ किताब

किताब मंगवावे चाहे छपवावे के खातिर

-: लिखी आ फोन करीं :-

sbtpublication@gmail.com • +91 8178695606

भोजपुरी साहित्य सरिता

सहित्यांगन

भोजपुरी के एक मात्र मासिक पत्रिका 'भोजपुरी साहित्य सरिता' के सदस्यता के विवरण

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 600 | चार बरिस : 2100 | आजीवन : 5100

बैंक विवरण : ICICI Bank खाता संख्या – 157701513299
IFSC Code : ICIC0001577 (निखिल गौरव द्विवेदी)

रउरा 9999614657 पर paytm के माध्यम से पेमेंट कऽ के सदस्या ले सकेनी।

नोट : रउरा पेमेंट के बाद पावती अपना पूरा पता के साथ bhojpurissarita@gmail.com पर ई-मेल करे के पड़ी।